तीन चार दिन बाद गायब हो जाते हैं, इसके साथ ही बोखार भी छूट जाता है।

चिकित्सा।

यदि गोटियाँ भरपूर न निकलकर बैठ जायें तो अच्छा नहीं है। ऐसी हालतमें गरम पानीमें गमछा डुबो कर निचोडकर, बीच-बीचमें रोगीका बदन पोंछते रहना अच्छा होता है।

एकोनाइट १x, ३x—तेज बोखार, बेचैनी, इसके साथ ही प्यास, नाडी भारी, कडी और तेज, छातीमें दर्द।

जेलसिमियम १x, ३x—छोटी-माताके दाने एकाएक गायब होकर तेज बोखार और सर्दी हो जानेपर इससे फायदा होता है। बहुत सुस्ती और सभी विषयोंमें उदासी।

पल्सेटिला ६x, ३०—बोखारका जोर घट जाने पर इसका प्रयोग होता है। सर्दी पक जाती है, नाकसे गाढ़ा बलगम निकलता है। संध्याके समय और रातमें खाँसी बढ़ जाती है। पेटमें गडबडी, अतिसार, प्यास न लगना। "पल्सेटिला" छोटी-माताकी एक उत्तम प्रतिषेधक दवा है।

बेलेडोना ६x—इसका व्यवहार मस्तिष्कके लक्षण

में होता है। बहुत तेज बोखार, शरीर बहुत गरम, माथा गरम, आँखें लाल। चेहरा भी लाल हो जाता है। रोगी प्रलाप बकता है।

ब्रायोनिया ६x, ३०—ब्रांकाइटिस और नियुमोनिया, सूखी और कष्टकर खाँसी, खाँसनेके समय माथा और छातीमें दर्द होता है। प्यास, जीभपर सफेद लेप, खसड़ा बैठ जानेपर यह उपयोगी होती है।

इयुफ्रेशिया ६x—नाक और आँखोंसे बहुत ज्यादा पानी गिरनेपर इसका व्यवहार होता है।

आर्सेनिक ६x, ३०—कड़ी बीमारी, सान्निपातिक अवस्था, बहुत अधिक तकलीफ, बेचैनी और मृत्युका भय। हमेशा थोड़ा थोडा पानी पीते रहनेकी इच्छा, जलन, बहुत जल्दी जल्दी दानोंका गायब हो जाना। गोटियाँ काली और खसड़ेकी प्राणघातक अवस्थामें यह उपयोगी है।

फास्फोरस ६x, ३०—फेफड़ेपर बीमारीका दौरा होनेपर यह लाभ करता है। खसड़ाके बाद सूखी खाँसी और सध्याके समय खाँसीका बढ़ना, गलेमें खुसखुसाहट होकर खाँसी, तथा बोलनेके समय खाँसी आने लगती है।

पथ्य आदि—ज्वरवाली अवस्थामें पानीकी बार्ली, आरारूट, सागू, अनार, बेदाना, किशमिश, अंगूर और

बोखार छूट जानेपर दूध और बार्ली या सागू पथ्य है। इस रोगमें माँस या मछली खाना मना है।

चेचक।

यह बहुत ही लरछुत और फैलनेवाली बीमारी है। इसमें सन्देह है, कि ऐसी लरछुत या स्पर्शाक्रमक बीमारी कोई दूसरी है या नहीं। एक तरहके जीवाणुसे चेचककी बीमारी पैदा होती है, पर इस जीवाणुका आजतक आविष्कार नहीं हुआ। कहा जाता है, कि चेचकका जहर रोगीकी गोटियों में, उसकी साँसमें और मल-मूत्रमें रहता है। एक बार चेचक हो जानेपर फिर होनेका डर नहीं रहता, पर किसी किसीको दुबारा होते भी सुना गया है।

प्रतिषेधक उपाय—गो-चेचकके बीजका टीका शरीरमें दिया जाता है, इसको वेक्सिनेशन कहते हैं। यह कहा जाता है कि टीका लेना चेचकका प्रतिषेधक है, पर कितने ही कारणोंसे टीका देनेका जो नतीजा होता है, वह भी कम बुरा नहीं होता। इतनेपर भी अंगरेज सरकारने टीका देनेको ही इसका एकमात्र प्रतिषेधक समझ लिया है। पर होमि-योपैथिक दवा भी उत्तम प्रतिषेधक प्रमाणित हुई है। चेचक

के बीजसे "वेरियोलिनम", गो-चेचकके बीजसे "वैक्सिनिनम" और घोड़ेके चेचकके बीजसे "मैलेण्ड्रिनम" दवाएँ तैयार हुई हैं। ये तीनों ही चेचककी उत्तम प्रतिषेधक और उत्तम दवाएँ भी हैं। कितने ही मैलेण्ड्रिनमकी ही बहुत अधिक प्रशंसा करते हैं। इसकी ३० अथवा २०० शक्ति सप्ताहमें सिर्फ २ बार सेवन करना ही काफी होता है। "सैरासिनिया" भी चेचकको रोकनेवाली कही जाती है। गधेका दूध और करैलीका रस भी आयुर्वेदके अनुसार बढ़ियाँ प्रतिषेधक माने गये हैं। चेचक फैलनेके समय इनमें से कोई एक भी घरके लड़कोंको नियमित रूपसे सेवन करना चाहिये।

चिकित्सा।

एण्टिम-टार्ट ६x—यह भी चेचककी एक दूसरी श्रेष्ठ दवा है, इसका चेचककी किसी भी अवस्थामें व्यवहार हो सकता है और सिर्फ इसीपर भरोसा रखकर चेचकका इलाज किया जा सकता है। यदि इसका पहले ही प्रयोग हो जाये तो यह बोखारकी तेजी घटा देता है। इससे जबर्दस्त उपसर्गोंके उत्पन्न हो जानेकी आशंका कम रहती है। इसमें चेचकके दाग दूर कर देनेकी भी बहुत बड़ी शक्ति है—यह बहुतसे लोग मानते हैं।

आर्सेनिकम ६x, ३०—कड़ी चेचककी बीमारी

वोखार छूट जानेपर दूध और वार्ली या सागू पथ्य है। इस रोगमें मॉस या मछली खाना मना है।

चेचक।

यह बहुत ही लरछुत और फैलनेवाली बीमारी है। इसमें सन्देह है, कि ऐसी लरछुत या स्पर्शाक्रमक बीमारी कोई दूसरी है या नहीं। एक तरहके जीवाणुसे चेचककी बीमारी पैदा होती है, पर इस जीवाणुका आजतक आविष्कार नहीं हुआ। कहा जाता है, कि चेचकका जहर रोगीकी गोटियों में, उसकी सॉसमें और मल-मूत्रमें रहता है। एक वार चेचक हो जानेपर फिर होनेका डर नहीं रहता, पर किसी किसीको दुवारा होते भी सुना गया है।

प्रतिषेधक उपाय—गो-चेचकके बीजका टीका शरीरमें दिया जाता है, इसको वेक्सिनेशन कहते हैं। यह कहा जाता है कि टीका लेना चेचकका प्रतिषेधक है, पर कितने ही कारणोंसे टीका देनेका जो नतीजा होता है, वह भी कम बुरा नहीं होता। इतनेपर भी अँगरेज सरकारने टीका देनेको ही इसका एकमात्र प्रतिषेधक समझ लिया है। पर होमियोपैथिक दवा भी उत्तम प्रतिषेधक प्रमाणित हुई है। चेचक

के बीजसे "वेरियोलिनम", गो-चेचकके बीजसे "वैक्सिनिनम" और घोडेके चेचकके बीजसे "मैलेण्ड्रिनम" दवाएँ तैयार हुई है। ये तीनों ही चेचककी उत्तम प्रतिषेधक और उत्तम दवाएँ भी हैं। कितने ही मैलेण्ड्रिनमकी ही बहुत अधिक प्रशंसा करते हैं। इसकी ३० अथवा २०० शक्ति सप्ताहमें सिर्फ २ बार सेवन करना ही काफी होता है। "सैरासिनिया" भी चेचकको रोकनेवाली कही जाती है। गधेका दूध और करैलीका रस भी आयुर्वेदके अनुसार बढ़ियाँ प्रतिषेधक माने गये हैं। चेचक फैलनेके समय इनमें से कोई एक भी घरके लड़कोंको नियमित रूपसे सेवन करना चाहिये।

चिकित्सा।

एण्टिम-टार्ट ६x—यह भी चेचककी एक दूसरी श्रेष्ठ दवा है, इसका चेचककी किसी भी अवस्थामें व्यवहार हो सकता है और सिर्फ इसीपर भरोसा रखकर चेचकका इलाज किया जा सकता है। यदि इसका पहले ही प्रयोग हो जाये तो यह बोखारकी तेजी घटा देता है। इससे जबर्दस्त उपसर्गोंके उत्पन्न हो जानेकी आशंका कम रहती है। इसमें चेचकके दाग दूर कर देनेकी भी बहुत बड़ी शक्ति है—यह बहुतसे लोग मानते हैं।

आर्सेनिकम ६x, ३०—कड़ी चेचककी बीमारी

की यह वहुत ही उपयुक्त दवा है। इसमें गोटियाँ काली हो जाती हैं। उनसे खून वहनेपर भी इससे खासा फायदा होता है। इसमें वहुत सुस्ती तथा वेचैनी रहती है।

वेलेडोना ३x, ६x—वीमारीकी पहली अवस्थामें, यदि मस्तिष्कमें रक्त-सचय वगैरह उपसर्ग रहे तो एकोनाइट की जगहपर कितने ही इसके प्रयोगकी सलाह देते हैं।

मर्कुरियस ६x, ३०—गोटियोंमें पीव पैदा हो जानेपर इसी दवाका प्रयोग करना चाहिये, लार वहना, गलेमें जखम, वदवूदार श्वास-प्रश्वास, या खून मिले दस्त होते हैं।

सारासेनिया ३x—यह चेचककी हर एक अवस्था में लाभ करता है। वहुतोंका यह मत है, कि रोगकी तेजी दूर करनेकी इसकी अद्भुत शक्ति है।

मैलेरिड्रनम और **वैरियोलिनम** रोगकी तेजी घटानेकी वढ़िया दवाएँ हैं। इनका भी प्रयोग रोगकी सभी अवस्थाओंमें हो सकता है।

इनके अलावा लक्षणके अनुसार "रसटक्स" "ओपियम" "स्टैमोनियम" "फास्फोरस" "व्रायोनिया" प्रभृति दवाओं की भी जरूरत पड़ती है।

पथ्य आदि—मछली, माँस तथा सेम खाना विल-कुल मना है। दूध वार्ली भी उत्तम पथ्य है। रोग आराम

होनेकी ओर होनेपर कलमी सागका रसा और दूसरी निरामिष तरकारियोंका रसा और पुराने महीन चावलका भात दिया जा सकता है।

पनसाहा माता या जल-चेचक ।

इसे पनसाहा माता भी कहते हैं। यह भी एक लर-छुत रोग है। पर असली चेचकके साथ इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। असली चेचकमें पहले ही जोरका बोखार आता है, पर इसमें पहले शरीरके धड़पर गोटियाँ दिखाई देती हैं (पहले चेहरेपर नहीं)। बोखार थोडा होता है, गोटियोंमें भी पीव नहीं होता और अकसर पाँचवें दिन सूखने लगती हैं। इसमें त्वचापर अकसर कोई दाग नहीं पड़ता। इसका भोग-काल ७ दिन है और परिणाम भी प्राणघातक नहीं होता।

चिकित्सा ।

पहली अवस्थामें "एकोनाइट" १x या ३x उत्तम चुनाव है। दूसरी दवाकी अकसर जरूरत ही नहीं होती, पर विद्वानोंका कथन है, कि "रसटक्स" इसकी प्रधान दवा है। "एण्टिम-टार्ट" की भी जरूरत पड़ती है।

पथ्य आदि—दूध बार्ली।

कालेरा या हैजा।

इसका अँगरेजी नाम कालेरा है। हैजा क्या है, इसको प्रायः सभी जानते हैं, कुछ विशेष समझानेकी जरूरत नहीं है। यह सम्पूर्ण भारतमें इस समय अपना जोर दिखा चुका है।

यह एक फैलनेवाली संक्रामक बीमारी है। बहुत साव-धान न रहनेपर कभी कभी इससे गाँवके गाँव ध्वंस हो जाते हैं। यदि एशियाटिक या सांघातिक हैजा घरके किसी आदमीको हो जाये तो दूसरोंको होनेका भी भय बना रहता है।

लक्षण—बासी भातका पानी, अथवा चावलके धोवन या देशी कोंहडेके सडे पानीकी तरह दस्त, पेशावका बन्द हो जाना, वमन, हाथ-पैरमें खींचन (cramps) इत्यादि इसके प्राथमिक लक्षण हैं। इसके बाद बहुत पसीना होकर सारा शरीर ठण्डा पड़ जाना, इसके बादका उपसर्ग है।

साधारण हैजा अकसर खाने-पीनेके दोषसे ही पैदा होता है। पहले अतिसारकी तरह पतले दस्त आने लगते हैं, नाभीके चारों ओर दर्द रहता है, पहलेसे ही या एका-एक पेशाव बन्द नहीं होता, शरीरकी गर्मी भी एकाएक घट नहीं जाती। रोगी सहजमें ही बदरंग नहीं हो जाता अथवा

उसका चेहरा नहीं बिगड़ जाता। पर असली हैजेमें—यह भोजनकी गड़बड़ीसे नहीं होता, पेटमें दर्द नहीं मालूम होता, पेशाब आरम्भसे ही बन्द हो जाता है और बासी भातके पानीकी तरह दस्त आया करते हैं। बहुत ज्यादा पसीना होकर एकदम शीत आ जानेकी तरह हिमांग अवस्था आ जाती है।

ताँबा हैजाका बहुत बडा रोकनेवाला है (preventive), इसलिये ताँबेके पैसेमें छेदकर कमरमें बाँध रखना चाहिये। खासकर घरके लड़के लड़कियोंको तो अवश्य ही बाँध देना चाहिये। ताँबेसे बनी होमियोपैथिक दवा क्यूप्रम मेटालिकम बीच बीचमें एक मात्रा खा लेनी चाहिये। इससे बीमारी होनेका डर नहीं रहता। गन्धकका धूप, लोहबान इत्यादि जलाना अच्छा है। जूते या मोजेमें गन्धक की बुकनी डालकर यदि पहना जाये तो भी फायदा होगा। हमेशा कपूर सूँघते रहना उचित है। यदि हैजा महामारी रूपमें भयंकर रूपसे प्रकट हो, ऐसे स्थानपर बाहरकी कोई चीज—जैसे कि बाजारके सामान, यहाँतक कि रुपये पैसे-तक खौलाये हुए पानीमें अच्छी तरह धोने बाद व्यवहार करना उचित है।

हैजाकी साधारण पाँच अवस्थाएँ।

(१) आक्रमणावस्था—इस अवस्थामें बीमारी कुछ

विशेष मालूम नहीं होती। रोगीको साधारण कमजोरी मालूम होती है। पहले पेटकी साधारण गड़बड़ी मालूम हो सकती है। कितने ही हैजाके आरम्भवाली अवस्थाको आक्रमणावस्था कहते हैं।

(२) विकासावस्था—चावलके धोवनका पानी या सड़े कोहड़ेका पानी या वासी भातके पानीकी तरह दस्त हुआ करते हैं। वमन, बेचैनी, प्यास और साथ ही साथ नाड़ी बहुत कमजोर हो जाती है। इस अवस्थामें हाथ-पैरोंमें ऐंठन होकर रोगी बहुत बेचैन हो जाता है। कोई कोई इसे पूर्ण विकसित अवस्था कहते हैं।

(३) हिमांग या पतन अवस्था—इसको शीत आ जाने-वाली अवस्था भी कहा जा सकता है। इस अवस्थामें प्रायः नाड़ी नहीं मिलती। दस्त-कै घटता जाता है, पर रोगीकी तकलीफ बढ़ती जाती है। प्यास बेचैनी और अम्लजान वाष्पकी कमीके कारण हवा पानेकी इच्छा। बहुत पसीना होकर शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है, कितने ही रोगियोंकी इसी अवस्थामें मृत्यु होती है।

(४) प्रतिक्रियावस्था—लोप हो गयी नाड़ी धीरे धीरे मिलने लगती है और शरीर गरम हो जाता है, पेशाब होता है और मलमें पित्त दिखाई देता है।

(५) परिणामावस्था—फिर दस्त कै आरम्भ हो जाता

है, ज्वर, विकार, हिचकी, कर्णमूल-प्रदाह। आँखकी कनी-निकामें जखम, शरीरके कितने ही स्थानोंमें जखम और यदि रोगिनीको गर्भ हो तो गर्भस्राव भी हो जा सकता है। नियुमोनिया भी इस अवस्थाका एक उपसर्ग है।

चिकित्सा।

यह मालूम होते ही कि हैजा हो गया, रोगीको अलग कमरेमें रखना चाहिये। ऐसा प्रबन्ध करना होगा कि रोगीके कमरेमें साफ हवाका आना-जाना बना रहे। रोगीका पाखाना और वमन कहीं दूर मिट्टीमें गाड देना चाहिये। यदि रोगीवाले कमरेमें कोई खाने-पीनेकी चीज हो तो वह किसीको न देनी चाहिये। उससे गहरी हानि हो सकती है।

असली हैजेकी पहली अवस्थामें कितनी ही बार "कैम्फर" अर्क-कपूरसे बहुत फायदा होता है। इस स्पिरिट कैम्फरके आविष्कार करनेवाले इटाली देशके डाक्टर रूबिनी थे। इनका तो यह कहना है, कि हैजाकी प्रत्येक अवस्थामें कैम्फर देकर ही बहुतसे रोगियोंको आरोग्य भी किया है: पर उनके इस मतको सभी उचित नहीं समझते। महात्मा हेनिमैनका कथन है, कि हैजाकी पहली अवस्थामें जबतक दस्तमें मल दिखाई देता रहे, रोगी एकाएक सुस्त हो पड़े, आखें धँस जायें, आवाज बिगड़ जाये, पाकस्थलीमें जलन

मालूम होती रहे और समूचा शरीर ठण्डा हो जाये—यही कैम्फरके प्रयोगका उचित समय है। सर्दी लगकर यदि पतले दस्त आने लगें और वह बदलकर हैजा हो जाये तो भी कैम्फरका प्रयोग करना चाहिये। स्पिरिट कैम्फर ५ से १० बूँद तक बताशा या चीनीपर टपकाकर प्रयोग करना चाहिये।

एकोनाइट १x, ३x—यह बोखार-मिले हैजाकी अवस्थामें अथवा खूनकी दस्त-कै आनेवाले हैजामें विशेष उपयोगी है। यह आक्रमण अवस्थाकी जितनी बढ़िया दवा है, हिमांग अवस्थामें भी उतना ही फायदा करती है। पेटमें असह्य दर्द, बेचैनी, प्यास और मृत्यु-भय इसके प्रधान लक्षण है।

विरेट्रम एल्बम ६x, १२, ३०—इसका भी प्रयोग प्रायः आक्रमणवाली अवस्थामें ही होता है, पेटमें दर्द, दस्त और कै एक साथ। जितना ही दस्त कै होता है, रोगी भी उतना ही कमजोर होता जाता है। कपालमें ठण्डा पसीना इसकी एक विशेषता है। दस्त कैके साथ हाथ-पैरोंमें पेंठन होती है।

रिसिनस ६, ३०—रिसिनसकी यही विशेषता है, कि इसमें पेटमें दर्द नहीं होता। बहुत ज्यादा परिमाणमें

दस्त—दस्त चावलके धोवन या सडे कोहडेके पानीकी तरह और वमन, पेटमें जलन मालूम होना।

क्रोटोन टिग ६x, ३ये—यह बहुत जोरके अति-सारकी बहुत बढ़िया दवा है। पीला पानीकी तरह दस्त, एकाएक तीरकी तरह निकलता है, खाने-पीने बाद ही दस्त कै होती है। ये ही तीन इसके विशेष लक्षण हैं।

आइरिस ६x, ३०—तलपेट और नाभीके चारों ओर मरोड़की तरह दर्द, इसके साथ ही खट्टी गन्ध-मिला दस्त कै, बहुत जलन—यह जलन मुँहसे लेकर मलद्वारतक रहती है—यह जलन ही आइरिसका प्रधान लक्षण है। बहुत ज्यादा दस्त कै, काला, हरी आभा लिये या अनपचका दस्त, पेट गडगडाना। सामान्य हैजेकी यह बहुत बढ़िया दवा है।

पोडोफाइलम ६, ३०, २००—बिना दर्दवाले हैजा की आक्रमण अवस्थाकी यह बहुत बढ़िया दवा है। सवेरे से ही रोगका बढ़ना, मल पानीकी तरह, परिमाणमें बहुत ज्यादा और बडे वेगसे निकलता है, कितने ही समय हाथ-पैरोंमें पेंठन भी मौजूद रहती है। ओकाई आती है. पर वमन नहीं होता है।

आर्सेनिक ६, ३०—पूर्ण विकासावस्था और हिमांगावस्थाकी यह एक प्रधान दवा है। इसमे जिस मात्रा

में दस्त के होता है, उससे कहीं अधिक रोगी कमजोर हो पड़ता है। यही आर्सेनिककी विशेपता है। (विरेट्रममें दस्त कैके परिमाणके अनुसार ही कमजोर होता है), बहुत बेचैनी, शरीरमें जलन, मृत्युका भय। तेज प्यास, पर पानी पीने बाद कै हो जाती। शरीरका बाहरी भाग ठण्डा, पर भीतर आगकी तरह जलन होती रहती है। बहुत जल्द रोगीको शीत आ जाता है, सारे शरीरमें लसदार पसीना। एशियाटिक या सांघातिक हैजाकी यह बहुत उत्तम दवा है।

क्यूप्रम-मेटालिकम ३, ६, ३०—क्यूप्रमका प्रधान लक्षण है, ऐंठन। हाथ-पैरोंकी अँगुलियोंमें ऐंठन होती है, गलेके भीतर और छातीमें ऐंठन होती है, इस-लिये रोगीकी बोली बन्द हो जाती है और साँस रुक जाती। तलपेटमें खींचन, पानी पीनेके समय पेटमें कलकल आवाज होती है, ठण्डा पानी पीनेपर कै रुकती है। संको-चनी पेशी (flexor muscle) की अकड़नके कारण हाथ-पैरकी अँगुलियाँ सामनेकी ओर टेढ़ी पड़ जाती हैं अर्थात मुट्ठी बन्द हो जाती है।

क्यूप्रम आर्सेनिकम ६x विचूर्ण—क्यूप्रमके लक्षणोंके साथ बहुत बेचैनी, प्यास और उसके बाद ही वमन इत्यादि आर्सेनिकके लक्षण रहनेपर इसका प्रयोग होता

है। अकड़नकी वजहसे पेटमें वेहद दर्द रहनेपर भी यह उपयोगी है।

सिकेलि-कोर ३x, ६x, ३०—शरीर वरफकी तरह ठण्डा, परन्तु रोगी वदनपर कपडा नहीं रखना चाहता, त्वचाके नीचे कीड़ा रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होना, पेंठन। यदि अकड़न या पेंठनमे क्यूप्रमसे लाभ न हो तो यह दवा देनी चाहिये, पर पेंठनमें दोनों दवाओंमें प्रभेद है। क्यूप्रममें संकोचनी पेशीमें (flexor muscle) मे अकड़न होती है अर्थात् हाथ-पैरकी अँगुलियाँ सामनेकी ओर टेढ़ी पड़ जाती है, पर सिकेलिमें प्रसारक पेशीमें (extensor muscle) में पेंठन होती है। इसलिये अँगुलियाँ पीछेकी ओर टेढ़ी पड जाती हैं। छातीमें पेंठन होकर रोगीकी साँस रुक जाना चाहती है।

कार्वो-वेज ३०, २००—यह हिमांग अवस्था अर्थात् शीत आ जानेकी प्रधान दवा है। नाडी लोप, समूचा शरीर ठण्डा, साँसतक ठण्डी, पेट फूलना, हैजाकी अन्तिम अवस्थाके उपसर्गोंमें यह उपयोगी है। चेहरा मलिन, आँखे गड्ढे में धँसी, शरीर नीला, साँस लेने और छोड़नेकी चाल तेज, रोगी हवा करने कहता है। हेमेरेजिक कालेरा अर्थात् जिसमें खूनके दस्त के आते हैं, उनमें कार्वोवेज अधिक फायदा करता है। यदि पेलोपैथिक मतसे कैलोमेलका

में दस्त कै होता है, उससे कहीं अधिक रोगी कमजोर हो पडता है। यही आर्सेनिककी विशेषता है। (विरेट्रममें दस्त कैके परिमाणके अनुसार ही कमज़ोर होता है), बहुत बेचैनी, शरीरमें जलन, मृत्युका भय। तेज प्यास, पर पानी पीने बाद कै हो जाती। शरीरका बाहरी भाग ठण्डा, पर भीतर आगकी तरह जलन होती रहती है। बहुत जल्द रोगीको शीत आ जाता है, सारे शरीरमें लसदार पसीना। एशियाटिक या सांघातिक हैजाकी यह बहुत उत्तम दवा है।

क्यूप्रम-मेटालिकम ३, ६, ३०—क्यूप्रमका प्रधान लक्षण है, पेंठन। हाथ-पैरोंकी अँगुलियोंमें पेंठन होती है, गलेके भीतर और छातीमें पेंठन होती है, इसलिये रोगीकी बोली बन्द हो जाती है और साँस रुक जाती है। तलपेटमें खींचन, पानी पीनेके समय पेटमें कलकल आवाज होती है, ठण्डा पानी पीनेपर कै रुकती है। संकोचनी पेशी (flexor muscle) की अकड़नके कारण हाथ-पैरकी अँगुलियाँ सामनेकी ओर टेढ़ी पड़ जाती है अर्थात मुट्ठी बन्द हो जाती है।

क्यूप्रम आर्सेनिकम ६x विचूर्ण—क्यूप्रमके लक्षणोंके साथ बहुत बेचैनी, प्यास और उसके बाद ही वमन इत्यादि आर्सेनिकके लक्षण रहनेपर इसका प्रयोग होता

है। अकड़नकी वजहसे पेटमें वेहद दर्द रहनेपर भी यह उपयोगी है।

सिकेलि-कोर ३x, ६x, ३०—शरीर बरफकी तरह ठण्डा, परन्तु रोगी बदनपर कपड़ा नहीं रखना चाहता, त्वचाके नीचे कीड़ा रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होना, पेंठन। यदि अकड़न या पेंठनमें क्यूप्रमसे लाभ न हो तो यह दवा देनी चाहिये, पर पेंठनमें दोनों दवाओंमें प्रभेद है। क्यूप्रममें संकोचनी पेशीमें (flexor muscle) मे अकड़न होती है अर्थात् हाथ-पैरकी अँगुलियाँ सामनेकी ओर टेढ़ी पड़ जाती है, पर सिकेलिमें प्रसारक पेशीमे (extensor muscle) में पेंठन होती है। इसलिये अँगुलियाँ पीछेकी ओर टेढ़ी पड़ जाती हैं। छातीमें पेंठन होकर रोगीकी साँस रुक जाना चाहती है।

कार्बो-वेज ३०, २००—यह हिमांग अवस्था अर्थात् शीत आ जानेकी प्रधान दवा है। नाडी लोप, समूचा शरीर ठण्डा, साँसतक ठण्डी, पेट फूलना, हैजाकी अन्तिम अवस्था के उपसर्गोंमें यह उपयोगी है। चेहरा मलिन, आँखें गड्ढे में धँसी, शरीर नीला, साँस लेने और छोड़नेकी चाल तेज, रोगी हवा करने कहता है। हेमरेजिक कालेरा अर्थात् जिसमें खूनके दस्त कै आते हैं, उनमें कार्बोवेज अधिक फायदा करता है। यदि एलोपैथिक मतसे कैलोमेलका

प्रयोग हुआ हो तो उसके बाद कार्बोविजका व्यवहार होता है।

ओपियम ३, ३०—पाखाना-पेशाब बन्द, रोगीका पेट फूल उठता है, पेट फूलनेकी वजहसे साँसमें तकलीफ होती है। शिवनेत्र (अधमुँदी आँखे,) गलेमें श्लेष्मा घर-घराया करता है। अन्तिम समयके उपसर्गोंमें यह व्यवहृत होता है।

हाइड्रोसियानिक एसिड ३x—हैजाकी चरम अवस्थामें जब तुरन्त मृत्यु हो जानेके लक्षण हो जाते हैं, तब इसका प्रयोग होता है, हृत्पिण्डकी क्रिया लोप, रोगी मुँह फाड़ फाड़कर सांस लेता और छोड़ता है। रोगी बहुत देरतक रुक रुककर साँस छोड़ता है। इसीलिये ऐसा मालूम होता है, मानो रोगी मर गया है। इस अवस्थाकी हाइड्रोसियानिक एसिड एक बढ़िया दवा है।

कैन्थरिस ६, ३०, २००—मूत्र-स्तम्भ और मूत्र-नाशमें बहुत फायदा करता है। मूत्र-विकार और इसी कारणसे आच्छन्न भाव या बेहोशी, शरीरमें जलन। पेशाब का वेग होता है, पर पेशाब नहीं होता है।

कोवरा ६x, ३०, २००—मूत्रस्तम्भ और मूत्रनाश (पेशाब न होना) में विशेष लाभदायक है। मूत्र-विकार

और इसी वजहसे बेहोशी जैसा या कोमा (coma), वस्न में जलन, पेशाब लगता है पर होता नहीं है।

टेरिबिन्थ ६x—यदि कैन्थेरिसके प्रयोगसे लाभ न हो और पेशावकी तकलीफ न जाये तो टेरिबिन्थका प्रयोग करना उचित है।

केलि-बाइक्रोम ६x विचूर्ण—पेशाव न होनेकी यह भी एक बढ़िया दवा है। पेशावकी नलीमें जलन, पेशाब न होना, इसके साथ ही नाड़ी पुष्ट रहनेपर इसका प्रयोग होता है।

इनके अलावा लक्षणके अनुसार मूत्र-विकारकी चिकित्सा में "बेलेडोना", "ओपियम" "हायोसियामस" "स्ट्रैमोनियम" "कैनाबिस-इण्डिका" "हाइड्रोसियानिक एसिड" प्रभृतिकी जरूरत होती है।

हिमांगावस्थामें हाथ-पैरोंमें गरम संक देना उचित है। प्रबल खींचन रहनेपर ताजे सरसोंके तेलमें जायफल घिसकर मालिश करने और खींच देनेपर रोगीको विशेष आराम मालूम होता है।

पथ्य आदि—प्रतिक्रिया आरम्भ होनेके पहले जलके सिवा रोगीको किसी तरहका पथ्य देना उचित नहीं है। खौलाया हुआ पानी ठण्डाकर पीनेको देना चाहिये। टियुब वेलका पानी हैजाके रोगीके लिये अच्छी चीज है।

वरफका टुकड़ा चूसनेको दिया जा सकता है। खास खास अवस्थामें ताजे कच्चे नारियलका पानी भी दिया जा सकता है। कच्चे नारियलका पानी पेशाव तैयार होनेमें बहुत फायदा पहुँचाता है। पेशाव हो जानेपर अथवा जहाँ ऐसा मालूम हो कि दर्दकी वजहसे पेशावकी क्रिया वन्द नहीं है, वहाँ पहले पानीकी वार्ली या पानीमें वना आरारोट थोड़ी मात्रामें दिया जा सकता है। उसके सहन हो जानेपर रोगीकी अवस्था और भूखके मुताबिक धीरे धीरे दूधमें बनी वार्ली, दूधमें वना आरारूट (जब पाखाना स्वाभाविक रूपमें आ जाये), गन्धभादुलियाके पत्तेका रस, चीड़ेका माँड, भातका माँड और इसके वाद खूब महीने पुराने चावलका भात दिया जा सकता है।

नया सर्दी रोग।

नासाह्-गहवरकी श्लैष्मिक झिल्लीकी नयी प्रादाहिक अवस्थाको नयी सर्दी या Acute Coryza कहते हैं।

ऋतु-परिवर्त्तन, नासिका गह्वरमें तम्बाकू, धूल प्रभृति उत्तेजक पदार्थोंका जाना और रहना अथवा किसी दूसरी बीमारीके लक्षणके रूपमें यह बीमारी होती है।

चिकित्सा।

सर्दी होगी—ऐसा मालूम होते ही, रोगी अगर एक गिलास गरम पानी पीकर, कम्बल ओढ़ सो जाये तो शीघ्र ही पसीना होकर रोगका अङ्कुर ही नष्ट हो जायगा।

एकोनाइट १x, ३x—यह पहली अवस्थाकी दवा है। सूखी ठण्डी हवा लगकर बीमारी होनेपर इसका प्रयोग होता है। थोड़ा थोड़ा ज्वर, बेचैनी प्यास।

एमोन-कार्ब ६, ३०—सूखी सर्दी, इसके साथ ही नाक बन्द हो जाना। इसी वजहसे रोगी मुँह खोलकर साँस लेता या सोया सोया साँस रुककर जाग उठता है।

आर्सेनिक ६x, ३०—सर्दीके साथ बेचैनी और सुस्ती। नाक बन्द मालूम होती है, पर स्राव लगातार होता रहता है। रोगीको गरम पानी पीने और साधारण गरमीसे आराम मालूम होता है।

बेलेडोना ३, ६—सर्दीके साथ गलेमें दर्द, माथेमें टपककी तरह दर्द, बोखार, चेहरा तमतमाया रहता है।

ब्रायोनिया १२, ३०—बहुत अधिक परिमाणमें स्राव, छींक, माथा भारी। स्राव बन्द होकर यदि माथा भारी हो जाये तो यह ज्यादा फायदा करता है।

एलियम सिपा ६x—बहुत ज्यादा परिमाणमें जलन करनेवाला पानीकी तरह स्राव, नाककी खाल उधड़ जाती है, नाकके अगले भागसे बूँद बूँद पानी चूता है। लगातार छींक, आती है। आँखसे भी पानी निकलता है।

जेलसिमियम १x, ३x—थोड़ा भी ऋतु-परिवर्त्तन होनेपर सर्दी लग जाना—इस लक्षणमें इसका व्यवहार होता है। वसन्त और ग्रीष्म ऋतुकी सर्दी। पानीकी तरह सर्दीका स्राव ; जहाँ लगता है, उसी जगहकी खाल उधड़ जाती है।

मर्क्युरियस ६x—पतला पानीकी तरह स्राव, नाक और गलेमें दर्द, रोगीको असह्य गरमी मालूम होती है, पर सर्दी भी सहन नहीं कर सकता। सर्दी पककर गाढ़ी गोंदकी तरह जब हो जाती है, तो इसका प्रयोग होता है।

नक्स-वोमिका ६x, ३०—सूखी ठण्डी हवा लगकर या ठण्डी जगहमें रहनेकी वजहसे सर्दी। शीत और ताप पर्यायक्रमसे पैदा होता है। सूखी सर्दी, वेहद छींक, रातमें नाक बन्द हो जाया करती है। दिनके समय बहुत अधिक स्राव होता है, पर रातमें नाक बन्द हो जाया करती है।

पल्सेटिला ६x, ३०—सर्दी पककर गाढ़ा हरी आभा लिये, या पीली-आभा लिये स्राव हो तो इसका प्रयोग होता है।

क्रूप या काली खाँसी।

श्वासयंत्र या स्वरयन्त्रका प्रदाह, इसके साथ ही यदि स्वरनलीमें अकड़न मौजूद रहे तो उसे क्रूप कहते हैं।

साधारणतः क्रूप बहुत धीरे धीरे उत्पन्न होती है, पर एकाएक भी हो जा सकती है। पहले थोड़ी-सी सर्दी, ज्वर, स्वरभंग प्रभृति लक्षण प्रकट होते हैं। यदि बच्चोंको स्वरभंगके साथ सूखी खाँसी हो तो इसे तुरन्त सन्देहजनक लक्षण समझना चाहिये। ये सब लक्षण अकसर एक हफ्ते के समयमें धीरे धीरे बढ़ा करते हैं। एकाएक एक दिन रातके समय बच्चा घोर नींदमें एकाएक तकलीफ, उद्वेग और काँसेका बर्त्तन बजानेसे जैसी आवाज होती है, वैसी ही आवाजवाली खाँसीके साथ जाग उठता है, एकाएक मानो उसका दम रुकना चाहता है। यही बढ़ी हुई हालत दो तीन घण्टोंतक रहती है और फिर बच्चा सो जाता है। इसके बाद उसी रातमें दुबारा या अगले दिन रातमें भी

इसी तरह जागता है। इससे बच्चेको बहुत तकलीफ होती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३x, ३०—रोगके आरम्भमें ही इसका प्रयोग होता है। खासकर यदि सूखी ठण्डी हवा लगकर बीमारी हुई हो। रोगी सूखी खाँसीके साथ जाग उठता है और उसे बोखार रहता है।

बेलेडोना ६x—मस्तिष्कके लक्षण दिखाई देनेपर इसका व्यवहार होता है। चेहरा, आँख, मुँह लाल हो जाते हैं।

हिपर सलफर ६x, ३०—एकोनाइटके प्रयोगके बाद जब खाँसी कुछ ढीली हो जाती है, तब उसका प्रयोग होता है।

आयोडिन ६, ३०—यह भी झिल्लीवाली क्रूपमें बहुत लाभदायक है। श्वासयन्त्रकी अकड़नके कारण रोगी का दम घुटा जाता है और साँस लेनेके लिये वह बेचैन हो उठता है। गलेमें साँय साँय शब्द हुआ करता है ("ब्रोमिन" और "आयोडिन" के लक्षणमें बहुत समानता है।)

लैकेसिस ६x, ३०—नींदमें रोगका बढ़ जाना, इस लक्षणमें क्रूपकी बढ़ी हुई अवस्थामें लैकेसिसके प्रयोगसे

विशेष लाभ होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो बच्चा मर गया है।

स्पंजिया ६x—यह क्रुपकी दूसरी बढ़िया दवा है। इसमें कुत्तेकी ...कोनाइटके बाद इसका व्यवहार होता है। गलेके भीतर आरी चलने ...गोलीकी तरह आवाज आती है। गलेके भीतर आरी चलने की तरह आवाज हुआ करती है। महात्मा हैनिमैनने स्पंजियाको बहुत उत्तम दवा कहा है पर बीचकी दवामें एकोनाइट या हिपर देनेको भी कहा है।

पथ्य और सहकारी उपाय—रोगीको ऐसे कमरेमें रखना चाहिये, जो खुला हो और भरपूर साफ हवा आती जाती हो।

बहुतोंका मत है कि गलेपर गर्म पानीका सेंक देना चाहिये। जलीय वाष्प अथवा आक्सिजेन गैस साँस द्वारा लेना भी लाभ करता है। गलेमें गर्म कपड़ा लपेट रखना अच्छा है। पथ्यके लिये गरम दूध ही उत्तम होता है। रोगी अगर कमजोर हो पड़े तो शोरवा या सूपका प्रयोग करना चाहिये।

ब्राङ्काइटिस या वायुनली-भुजप्रदाह।

वायुनलीकी श्लैष्मिक झिल्लीके नये प्रदाहको ब्राङ्काइटिस कहते हैं। साधारणतः सर्दी लगकर, स्वरयन्त्रका प्रदाह फैलकर अथवा किसी दूसरी बीमारीके परिणामस्वरूप कमजोरी पैदा होकर ब्राङ्काइटिसकी बीमारी हुआ करती है। पर्यायक्रमसे शीत और ताप, ज्वर, स्वरभङ्ग, गलेमें दर्द, शरीरमें दर्द, प्रभृति नयी सर्दीके लक्षण भी इसमें प्रकट करते हैं। जब बीमारी बढ़ जाती है, तो कलेजेमें दर्द और सांस लेने तथा छोड़नेमें तकलीफ होती है। खाँसी पहले सूखी रहती है, बलगम फेनभरा रहता है, इसके बाद ढीला हो जाता है। छातीमें स्टैथास्कोप लगानेपर पहले सूखे श्लेष्माका साँय साँय शब्द सुन पड़ता है, इसके बाद श्लेष्मा ढीला हो जाता है और ढीले श्लेष्माका शब्द या तर घरघराहट सुन पड़ती है। ज्वर १०२°।१०३° डिग्रीतक हो सकता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट १x, ३x—रोगके आरम्भमें इसका व्यवहार होता है। खासकर सूखी ठण्डी हवा लगकर बीमारी होनेपर। ज्वर, नाड़ी भरी, तेज और कड़ी। खाँसी सूखी, खासकर रातमें बढ़ती है। बेचैनी और प्यास।

आर्सेनिक ३०—रोगकी बढ़ी हुई अवस्थामें रोगी के बहुत सुस्त हो पड़ने और बेचैनी तथा प्यास रहनेपर इसका व्यवहार होता है।

बेलेडोना ६x—पहली अवस्थामें विशेषकर बच्चोंको बहुत तेज बोखार, मस्तिष्कमें रक्त-संचय, विकार, प्रलापमें अंट-संट बकना। खाँसी सूखी और अकड़न भरी, खाँसनेके पहले बच्चा रो उठता है।

ब्रायोनिया १x, ३०—यह ब्राङ्काइटिसकी प्रधान दवा है। बोखार कुछ घटनेपर इसका व्यवहार होता है। खाँसी सूखी, खाँसनेके समयमें माथेमें झटका लगता है और छातीमें दर्द होता है। मुँह और ओंठ सूखे, प्यास, रोगी हिल-डोल नहीं सकता है।

जेल्सियम ३x—रोगीके बहुत सुस्त हो जानेपर इसका व्यवहार होता है। इसमें प्यास नहीं रहती और तन्द्राका भाव बना रहता है।

हिपर सलफर ६x, ३०—सूखी अकड़नवाली खाँसी, छातीमें सांय सांय शब्द होता है। शरीरका कोई अंश हटाने अथवा जोरसे साँस लेनेपर खाँसी पैदा हो जाती है।

इपिकाक ६x, ३०—बच्चोंकी बीमारीमें ज्यादा लाभ-

दायक है । श्वासमें कष्ट, हँफनी, जी मिचलाना और श्लेष्मा का वमन, छातीमें घरघर शब्द होकर खाँसी आती है ।

फास्फोरस ६x, ३०—फेफड़ेपर हमला होनेपर इसका व्यवहार होता है । सूखी खाँसी, गलेमें सुरसुरे होकर खाँसी आती है ।

पथ्य आदि—नये वोखारकी तरह, पहली अवस्था में दूध नहीं दिया जाता । बलगम पीला हो जानेपर साग, बार्लीमें दूध मिलाकर दिया जा सकता है । मसूरका जूस उत्तम पथ्य है ।

कैपिलरी ब्राङ्काइटिस ।

छोटी छोटी श्वासनलीकी श्लैष्मिक झिल्लीके नये प्रदाह को ब्राङ्काइटिस कहते हैं । इसी रोगका दूसरा नाम ब्रांको नियुमोनिया है । नये ब्राङ्काइटिससे उसके परिणाम-स्वरूप में अथवा जिन कारणोंसे नया ब्राङ्काइटिस होता है, उन्हीं कारणोंसे यह बीमारी भी पैदा हुआ करती है ।

चिकित्सा ।

एकोनाइट १x, २x—पहली अवस्थामें खासकर

[स]खी ठण्डी हवा लगकर बीमारी होनेपर प्रयोग होता है।
[ते]ज बोखार, बेचैनी, प्यास, सूखी खाँसी, रातमें बढ़ना।

बेलेडोना ३x, ६x, ३०—तेज बोखारमें यदि मस्तिष्कके लक्षण हों तो इसका व्यवहार होता है, आँखें लाल, माथा गर्म, तेज बोखारमें थोड़ा थोड़ा पसीना होता है।

ब्रायोनिया ६x, १२, ३०—एकोनाइटका प्रयोग करनेपर अगर ज्वरका वेग घट जाये तो इसका व्यवहार होता है। सूखी खाँसी, खाँसनेके समय छातीमें दर्द होता है। रोगी चुपचाप पड़े रहना पसन्द करता है, हिलना-डोलना भी नहीं चाहता। प्यास लगती है और देरसे बहुत बहुत-सा पानी पीता है।

फेरम-फास ६x विचूर्ण—पहली अवस्थामें नाड़ी भरी और कोमल, सूखी खाँसी आती है। रातके समय खाँसी बढ़ती है।

इपिकाक ६x, ३०—बीमारीकी दूसरी अवस्थामें खाँसी ढीली पड़ जाती है या बिलकुल ही नहीं आती। गलेमें सों सों आवाज होती है। जी मिचलाया करता है, बलगम की कै होती है। इस लक्षणमें यह व्यवहृत होता है।

लाइकोपोडियम १x, ३०—खाँसी ढीली, पर

बलगम नहीं निकलता है। तीसरे पहर ४ बजेसे रातके ८ बजेतक रोगका बढ़ना।

मर्कुरियस ६, ३०—सूखी खाँसी, आवाज बिगड़ी, खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो माथा और छाती फट जायगी, छातीमें दबाव, रातमें खाँसीका बढ़ना।

एण्टिम टार्ट ६x विचूर्ण—इस रोगकी यह दूसरी प्रधान दवा है। बहुत हॅफनी, छातीमें बलगम घरघराया करता है, पर निकलता कुछ भी नहीं है, छातीमें साँय साँय शब्द, खाँसते खाँसते साँस रुक जानेकी तैयारी।

पथ्य आदि—नये ब्राङ्काइटिसकी तरह ही पथ्य देना चाहिये। छातीमें हमेशा गरम कपड़ा या रूई बाँधे रखना चाहिये।

श्वास-कास या दमा।

फेफड़ेकी वायु वहन करनेवाली नलियोंकी छोटी-छोटी पेशियोंमें जब अकड़न भरा संकोच पैदा होता है, उस सांसमें तकलीफ होने लगती है, इसीको श्वास-कास या दमा कहते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३x, ३०—सूखी ठण्डी हवा लगकर अथवा यदि यह बीमारी ब्राङ्काइटिससे उत्पन्न हो जाये तो एकोनाइट व्यवहृत होता है। रोगीमें डर और मानसिक उद्वेग बहुत अधिक वर्त्तमान रहता है।

आर्सेनिक ६x, ३०—दमाकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है। इसका दौरा रातके समय होता है। रातके बाहर बजे दमा बढ़ता है। रोगी सो नहीं सकता, सोनेपर मानो साँस रुक जाना चाहती है, बहुत श्वासकष्ट, गलेमें साँय साँय आवाज। कमजोर और वृद्धोंकी बीमारी।

ब्लैटा ओरियेण्टैलिस ϕ, ३x—यह भी दमाकी बहुत बढ़िया दवा है। मैलेरियावाले रोगियोंके लिये बहुत फायदेमन्द है।

बेलेडोना ६, ३०—दमाके दौराके समय मस्तिष्क में रक्तसंचय होनेपर इसके प्रयोगसे उस समय थोड़ी देरके लिये फायदा हो जाता है।

ब्रायोनिया १२, ३०—यदि किसी तरहकी गोटियाँ या दाने बैठकर दमा हो जाये तो इससे बहुत फायदा होता है। जरा भी हिलने-डोलसे साँसकी तकलीफ बढ़ जाती है, रोगी चुपचाप रहना पसन्द करता है।

ड्रोसेरा ३०—क्षय कासवालोंका दमा। रातमें खाँसीका बढ़ना, बलगममें रक्त या पीव ; गलेमें मानो पर अड़ा है, इस तरहकी सुरसुरी होना।

हिपर सलफर ३०—पुरानी ब्रांकाइटिसके बाद दमा, रोगी ज्योंही सोकर उठता है, त्योंही उसे श्वासकष्ट पैदा हो जाता है। गलेमें घरघर आवाज होती है।

इपिकाक ६, ३०—दमाके खिंचावके समय प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है। कलेजेमें बहुत संकोचन मालूम होता है। मानो दम घुटा जाता है। छाती में साँय साँय घरघर शब्द, मिचली।

लोबेलिया ६x, ३०—यह आक्षेपिक या स्नायविक दमामें ज्यादा फायदा करता है। सामान्य हिलने-डोलनेपर बीमारीका बढ़ना, पाकस्थलीमें कमजोरी मालुम होना, दम अटकनेका भाव।

लाइकोपोडियम ३०, २००—यदि पाचन क्रिया की गड़बड़ीसे दमा हो जाये, पेटमें बेतरह वायु इकट्ठा हो, उसके निकल जानेपर दम होना घटे, तो इसके व्यवहारसे विशेष लाभ होता है।

नक्स-वोमिका ३०—साधारण आक्षेपिक दमामें जिसके साथ पेटकी गड़बड़ी रहती है, उसमें इसका व्यव-

हार होता है। रोगी बहुत चिड़चिड़ा हो जाता है, बार बार पाखाना लगता है।

सैम्बुकस ६x—बच्चोंकी रातमें होनेवाली हँफनीमें यह लाभ करता है। जोर जोरका साँय साँय शब्द सुन पड़ता है।

सलफर ३०, २००—पुरानी अवस्थाके दमामें इसका प्रयोग होता है। माथेका ब्रह्मताल्लु गरम, रोगी दिनके ११ बजनेके समय कमजोरी अनुभव करता है और बेहोश हो जाता है। वात या चर्मरोगवाले दमाके रोगियों के लिये विशेष उपयोगी है।

रक्त-वमन ।

थूकके साथ खून आना। अँगरेजीमें इसे हिमाप्टो-सिस कहते हैं। इसका दूसरा नाम ब्रांकियल हेमरेज या ब्रांकोरेजिया इत्यादि है।

थूकके साथ खून निकलना—यह कोई खास अलग बीमारी नहीं है। यह दूसरी दूसरी बीमारियोंका एक उपसर्ग है। यह गालमें चोट आदि लगकर भी हो सकता है।

चिकित्सा।

रोगीको एकदम आराम करना चाहिये। सरके नीचे तकिया न रखे। सर और गर्दन नीची रखकर रोगीको सुलाना चाहिये। रोगीको बोलने न देना चाहिये और न ऐसा ही कोई कारण होना चाहिये, जिससे रोगीमें उत्तेजना पैदा हो जाये। बरफके टुकड़े चूसनेके लिये देना अच्छा है। इससे खून बन्द हो जाता है।

एकालाइफा इण्डिका ३x, ३०—तेज सूखी खाँसी, इसके साथ ही बलगमके साथ चमकीले लाल रंगका खून निकलता है।

एकोनाइट ३x, ६x—नयी अवस्थामें उपयोगी है। छातीमें खून इकट्ठा होना, बहुत उद्वेग और मृत्युका भय होता है।

आर्निका ६x—यदि चोट वगैरह लगकर बीमारी पैदा हो गयी हो तो उसमें इससे फायदा होता है।

बेलेडोना ६x—यदि मस्तिष्कमें रक्तसंचयका लक्षण हो तो इससे फायदा होता है। चेहरा और आँखें लाल रहती हैं; तथा जो रक्त निकलता है, वह चमकीले लाल रंगका होता है तथा गरम रहता है।

चायना ६x—वहुत ज्यादा खून गिरनेके कारण अगर रोगी कमजोर हो जाये, यदि कानमें भों भों आवाज हो, आँखके सामने अँधेरा छा जाता हो, चेहरेपर रक्तका दाग रहे, तो यह व्यवहारमें आता है।

फेरम ६x, ३०—रक्तका रंग चमकीला लाल, पतला जरा भी हिलने-डोलनेसे रोगीका चेहरा लाल हो जाता है। रोगी वहुत कमजोर हो जाता है।

हैमामेलिस ३x—धीमा और शिराओंसे आनेवाला खून। खून मैला और थक्का थक्का होनेपर इस दवासे बहुत फायदा होता है।

इपिकाक ६x, ३०—खाँसीके सिवा वहुत ज्यादा मात्रामें चमकीले लाल रंगका खून निकलता है।

मिलिफोलियम ६x, ३०—इसका रक्त चमकीला और फेन भरा रहता है। रक्त वहुत ज्यादा परिमाणमें आता है।

पथ्य—नयी हालतमें जवतक खून आता रहता है, तवतक पतली चीजें ही खानेको देनी चाहियें। दूध उत्तम पथ्य है। पथ्य आदि गरम देना मना है। दूध कुछ गरम कर देना चाहिये।

फुसफुस प्रदाह या नियुमोनिया ।

फेफड़ेके असली तन्तुओंके प्रदाहको फेफड़ोंका प्रदाह या नियुमोनिया कहते हैं। नियुमोनिया एक या दोनों फेफडेमें हो सकता है। यदि एक फेफड़ेपर रोगका हमला हो तो उसे सिंगल नियुमोनिया और दोनों फेफड़ोंमें हो जानेपर उसे डबल नियुमोनिया कहते हैं। साधारणतः तेज सर्दीकी तरह बहुत अधिक शीतके साथ यह बीमारी पैदा होती है। शरीरका ताप १०५° या उससे भी अधिक हो जाता है। सवेरे ताप कुछ घटता है और रोगकी तेजीके मुताबिक ५ वें, ८ वें, १२ वें या १४ वें दिन ज्वर छूटता है। अगर पहले ब्रांकाइटिस होकर पीछे फेफड़ेपर रोगका दौरा हो तो उसे ब्रांको नियुमोनिया कहते हैं। यदि फेफड़े के साथ वक्षावरक झिल्ली (pleura) में भी प्रदाह हो तो उसे प्लुरो नियुमोनिया कहते हैं।

चिकित्सा ।

एकोनाइट १x, ३x—बीमारीकी पहली हालतमें जब तेज बोखार, कपकपी, प्यास, बेचैनी वगैरह लक्षण रहते हैं, तब इसका प्रयोग होता है। पहली हालतमें एकोनाइटका प्रयोग रोगके भोग-कालको घटा देता है।

आर्सेनिक ६x, ३०—रोगकी बढ़ी हुई अवस्थामें जब फेफड़ेमें सड़न हो जानेका लक्षण हो तब इसका प्रयोग होता है। रोगी बहुत सुस्त हो जाता है, बेचैनी प्रकट करने लगता है, थोड़ा थोड़ा पानी पीता है। रात १२ बजनेके बाद रोगका बढ़ना।

बेलेडोना ३x—मस्तिष्कमें खून इकट्ठा होनेके लक्षणमें यह उपयोगी है। डा० बेयर कहते हैं—वृद्धोंकी बीमारीकी पहली अवस्थामें एकोनाइटकी अपेक्षा बेलेडोना अधिक फायदा करता है। शराबियोंके नियुमोनियामें भी लाभ करता है।

ब्रायोनिया १x, ३०—एकोनाइटसे तेज बोखार कुछ घटनेपर और पसीनेका लक्षण दिखाई देनेपर इसका प्रयोग होता है। रोगी फिर बेचैनी नहीं प्रकट करता, चुपचाप पड़ा रहता है, छातीमें दर्द और दबाव मालूम होता है, धीमा प्रलाप। खाँसनेके समय छाती और माथेमें दर्द होता है।

कार्बोवेज ३०--तीसरी अवस्था और जिस नियुमोनियाकी पहलेसे ठीक ठीक चिकित्सा न हुई हो, उसके लिये उपयोगी है। रोगी लगातार हवा करने कहता है, पाखाना-पेशाबमें बदबू, हिमांग (शीतवाली) अवस्था आ जानेपर इसका व्यवहार होता है।

चेलिडोनियम ६x—यदि नियुमोनियाके साथ पित्त या पाकाशयके लक्षण हों तो इसका व्यवहार होता है। यदि दाहिने फेफड़ेपर रोगका आक्रमण हो और साथ ही यकृतके उपसर्ग भी रहें तो इसका प्रयोग होता है।

हिपर सलफर ६x विचूर्ण ३०—यह नियुमोनियाकी तीसरी अवस्थाकी दवा है। वलगम पीवकी तरह हो जाता है।

लाइकोपोडियम १x, ३०—यदि नियुमोनियाका इलाज पहलेसे ठीक ठीक न हुआ हो और दाहिने फेफड़ेपर रोगका आक्रमण हो गया हो तो इसका प्रयोग होता है।

मर्कुरियस ६x ३०—पैत्तिक लक्षण। बहुत ज्यादा पसीना होता है। यदि नियुमोनिया और ब्रांकाइटिस सम्मिलित हो तो यह उपयोगी है।

फास्फोरस ६x, ३०—हरेक प्रकृतिवाले नियुमोनियामें और उसकी हरेक अवस्थामें इसका सफलतापूर्वक व्यवहार होता है। सूखी बहुत कष्टकर खाँसी, छातीमें तेज दर्द, पीला या खून मिला बलगम, अथवा लाल सुर्खी के रंगका बलगम। सान्निपातिक अवस्थामें यह ज्यादा फायदा करता है।

ह्रासटक्स ६x, ३०—इसका भी सान्निपातिक अवस्थामें प्रयोग होता है। रोगी बहुत बेचैनी प्रकट करता है।

ञ्जावनमें हमेशा जगह बदला करता है। इधर उधर करवट
ल्या करता है।

एण्टिम टार्ट ६x विचूर्ण, १२—श्वासकृच्छ्रता,
तीमें श्लेष्मा घरघराया करता है। गला खुसखुसाकर
ाँसी आती है, पर बलगम नहीं निकलता। रोगी बहुत
ुस्त और काहिल हो पड़ता है।

पथ्य और सहकारी उपाय—पहली अवस्था
पतला और हलका पथ्य देना चाहिये। पानीका सागू,
ार्ली, अनार, बिदाना आदि। रोगी यदि बहुत कमजोर
ो पड़े तो मसूरका जूस दिया जा सकता है। एक सप्ताह
 बाद जब शरीरका बिना पचा हुआ रस पच जाये और
लगम ढीला हो जाये तो सागू या बार्लीके साथ एक
लछी गरम दूध मिलाकर दिया जा सकता है।

स्वरभंग।

स्वरयंत्रके पासकी पेशीमें पक्षाघात होनेपर स्वरभंग
ोता है। गलेमें खुजलाहट, गला कुटकुटाना, स्वरभंगके
ारण उखड़ी हुई आवाज, सूखी खुसखुसी खाँसी वगैरह
इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

संक्षिप्त

सरल पारिवारिक चिकित्सा

उपक्रमणिका

होमियोपैथी ।

ग्रीक भाषाके दो शब्दोंसे "होमियोपैथी" शब्द बना है। Homoios=like, Similar अर्थात् सदृश और Pathos=feeling अर्थात् अनुभूति ; इन दोनोंसे ही होमियोपैथीका वास्तविक अर्थ हुआ है—"सदृश-विधान।" स्वस्थ शरीरमें यदि विषकी मात्रामें कोई दवा सेवन कर ली जाये तो रोग घतानेवाले कितने ही लक्षण प्रकट हो जाते हैं, ये ही उस दवाके लक्षण हैं। जब जिस रोगमें ये सब लक्षण दिखाई दें, उसमें शक्तिकृत की हुई वही दवा प्रयोग करनेपर वह रोग आराम हो जाता है। यही सदृश-विधान या होमियोपैथीके मतसे चिकित्सा है, जैसे स्वस्थ शरीरमें थोड़ी-सी संखिया (आर्सेनिक) खानेपर पानीकी तरह

चिकित्सा।

एकोनाइट ६—सूखी ठण्डी हवा लगकर यदि रोग पैदा हुआ हो तो इसका प्रयोग होता है।

कैल्केरिया कार्ब ३०—जिन्हें सहजमें ही सर्दी लग जाती है। बिना किसी दर्द या तकलीफके स्वरभंग हो जाता है। पुराना स्वरभंग।

कार्बो-वेज ३०—बहुत दिनोंका स्वरभंग, बोलने के समय या शामको अथवा ठण्डी हवामें बढ़ना।

कास्टिकम ३०—सवेरेके वक्त स्वरभंगका बढना, स्वरयन्त्रका रुखड़ापन, गलेमें अकड़न, स्वरयन्त्रमें बहुत सूखापन।

डलकामारा ६—सर्दी हो जानेके बाद गलेमें रुख. । आवाज भारीके स , छोटी म ।के बादका स्वरभंग।

फास्फोरस ६x,
आवाजका एकदम बेट
जाना।

अर्जे
भंग। बोलनेकी चेष्

हिपर सलफर ६, ३०—ठण्डी हवामें स्वरयन्त्रमें अधिक अनुभव होना । कुत्तेकी बोलीकी तरह भारी कर्कश खाँसी । गलेमें रुखड़ापन मालूम होना ।

जेलसिमियम ६—गलेमें सूखापन और रुखड़ापनके साथ रोगका थोड़े समय लिये बढ़ना । कण्ठ भरा मालूम होना । छातीमें जखमकी तरह दर्दके साथ सर्दी ।

सहकारी उपाय—रोज ठण्डे पानीसे नहाना और खुली हवामें घूमना फायदा करता है । पुष्ट करनेवाली हलकी चीजे खानी चाहियें ।

खाँसी ।

खाँसी स्वय ही कोई बीमारी नहीं है । यह दूसरे रोग का लक्षण भर है । सर्दी, ठण्ड लग जाना प्रभृति कारणोंसे और साधारणतः इसके साथ ही तालुमूल-प्रदाह और कुछ न कुछ ब्रांकाइटिस भी मिला रहता ही है । इसीलिये, इसे श्वासयंत्रका रोग माना जाता है ।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ६, ३०—सखी ठण्डी हवा लगकर

हिपर सलफर ६, ३०—ठण्डी हवामें स्वरयन्त्रमें ाधिक अनुभव होना। कुत्तेकी बोलीकी तरह भारी कर्कश ाँसी। गलेमें रुखड़ापन मालूम होना।

जेलसिमियम ६—गलेमें सूखापन और रुखड़ा-नके साथ रोगका थोड़े समय लिये बढ़ना। कण्ठ भरा ालूम होना। छातीमें जखमकी तरह दर्दके साथ सर्दी।

सहकारी उपाय—रोज ठण्डे पानीसे नहाना ौर खुली हवामें घूमना फायदा करता है। पुष्ट करनेवाली लकी चीजे खानी चाहिये।

खाँसी।

खाँसी स्वयं ही कोई बीमारी नहीं है। यह दूसरे का लक्षण भर है। सर्दी, ठण्ड लग जाना प्रभृति कारण और साधारणतः इसके साथ ही तालुमूल-प्रदाह कुछ न कुछ ब्रांकाइटिस भी मिला रहता ही है। से श्वासयन्त्रका रोग माना जाता है।

चिकित्सा

एकोनाइट ६, ३०

चिकित्सा।

एकोनाइट ६—सूखी ठण्डी हवा लगकर यदि रोग पैदा हुआ हो तो इसका प्रयोग होता है।

कैल्केरिया कार्ब ३०—जिन्हें सहजमें ही सर्दी लग जाती है। बिना किसी दर्द या तकलीफके स्वरभंग हो जाता है। पुराना स्वरभंग।

कार्बो-वेज ३०—बहुत दिनोंका स्वरभंग, बोलने के समय या शामको अथवा ठण्डी हवामें बढ़ना।

कास्टिकम ३०—सवेरेके वक्त स्वरभंगका बढ़ना, स्वरयन्त्रका रुखड़ापन, गलेमें अकड़न, स्वरयन्त्रमें बहुत सूखापन।

डलकामारा ६—सर्दी हो जानेके बाद गलेमें रुखड़ापन। आवाज भारीके साथ होनेवाला स्वरभंग, छोटी माताके बादका स्वरभंग।

फास्फोरस ६x, ३०—स्वरभंगके साथ खाँसी। आवाजका एकदम बैठ जाना। शामके समय ज्यादा हो जाना।

अर्जेण्टम-नाई ६, ३०—गावैयोंका पुराना स्वरभंग। बोलनेकी चेष्टा करनेपर खाँसी आती है।

हिपर सलफर ६, ३०—ठण्डी हवामें स्वरयन्त्रमें अधिक अनुभव होना। कुत्तेकी बोलीकी तरह भारी कर्कश खाँसी। गलेमें रुखड़ापन मालूम होना।

जेलसिमियम ६—गलेमें सूखापन और रुखड़ापनके साथ रोगका थोड़े समय लिये बढ़ना। कण्ठ भरा मालूम होना। छातीमें जखमकी तरह दर्दके साथ सर्दी।

सहकारी उपाय—रोज ठण्डे पानीसे नहाना और खुली हवामें घूमना फायदा करता है। पुष्ट करनेवाली हलकी चीजें खानी चाहियें।

खाँसी ।

खाँसी स्वयं ही कोई बीमारी नहीं है। यह दूसरे रोग का लक्षण भर है। सर्दी, ठण्ड लग जाना प्रभृति कारणोंसे और साधारणतः इसके साथ ही तालुमूल-प्रदाह और कुछ न कुछ ब्रांकाइटिस भी मिला रहता ही है। इसीलिये, इसे श्वासयंत्रका रोग माना जाता है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ६, ३०—सखी ठण्डी हवा लग

खाँसी, रक्त-प्रधान रोगी, बेचैनी, सर-दर्द। सूखी-खाँसी, लगातार स्वरयन्त्रमें खुजली होकर खाँसी आती है।

बेलेडोना ६, ३०—सूखी आक्षेपिक खाँसी, रातमें और हिलने-डोलनेपर खाँसीका बढ़ना। टपकके सर-दर्दके साथ चेहरा लाल हो जाना। ऐसा अनुभव होना मानो गलेके भीतर पर या धूलके कण हैं।

ब्रायोनिया १२, ३०—सूखी खाँसी। खाँसते खाँसते वमन, खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो माथा और वक्ष टुकड़े टुकडे हो जायगे। प्यास और कब्जियत रहती है।

कास्टिकम ३०—शामको खाँसी बढ़ जाती है, ठण्डा पानी पीनेपर खाँसी घटती है। खाँसते खाँसते आप ही आप पेशाब निकल जाता है।

हायोसियामस ६, ३०—सूखी-खाँसी, रातमें सोते ही खाँसी आने लगती है, उठ-बैठनेपर घटती है।

हिपर सलफर ६, ३०—घरघराहटके साथ खाँसी। रातके अन्तिम भागमें खाँसीका बढ़ना। हमेशा शरीरमें रोगी कपड़ा लपेटे रखना चाहता है। जरा भी सर्दी लगनेपर खाँसी आने लगती है।

एण्टिम टार्ट ६, ३०—गला श्लेष्मासे भरा

परन्तु खाँसनेपर कुछ भी नहीं निकलता। तेज प्यास, रातमे खाँसीका बढ़ना।

स्टैनम ३०—ज्यादा परिमाणमें हलका मीठे स्वाद-वाला बलगम निकलना। खाँसनेके समय वक्ष और गलेमें दर्द।

प्लुरिसी या फुसफुसवेस्ट प्रदाह।

इसका दूसरा नाम प्लुराइटिस है। यह फेफड़ेकी झिल्ली को ढके रहती है। इसीलिये, इसको प्लुरा कहते हैं। इसी प्लुराके प्रदाहको प्लुराइटिस या साधारण भाषामे प्लुरिसी कहते हैं। सर्दी लगकर, चोट लगकर या दूसरी बीमारीके उपसर्गके रूपमें यह बीमारी हुआ करती है।

निमोनियाके लक्षणके साथ कितनी ही बार इसमें गड़बड़ी हो जाती है। इसलिये, इसका प्रभेद जान रखना उचित है। निमोनियामें शीत, शरीरका ताप अधिक रहना, मिर्चाकी तरह लाल रंगका बलगम और साँस छोड़ने के अन्तमें छातीमें क्रेपिटेण्ट या केश रगडनेकी तरह आवाज आनेका लक्षण बना रहता है, पर प्लुरिसीमें इस ढंगका शीत या ताप बिलकुल नहीं रहता। इसका बलगम फेन-

भरा और सांस लेने तथा छोड़ने दोनोंमें ही घण्टा बजनेकी तरह आवाज सुन पड़ती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट १x, ३x—पहली अवस्थामें उपयोगी है, शीत और ताप, बेचैनी, मानसिक उद्वेग, सूखी खाँसी और दर्द।

एपिस ६x—जिस प्लुरिसिमें रसक्षरण होता हो, उसकी यह बहुत बढ़िया दवा है। डा० फैरिङ्गटन कहते हैं कि "एपिस" और "सलफर"—इन दोनों दवाओंसे इस अवस्थामें बहुतसे रोगी आराम हो जाया करते हैं।

आर्सेनिक ६x, ३०—यह दूसरी अवस्थाकी दवा है। बहुत अधिक श्वासकष्ट, रोगी यदि बहुत कमजोर हो जाये तो इसका व्यवहार होता है। रस-क्षरणवाली अवस्था में यह फायदा करता है।

ब्रायोनिया ३, ३०—ज्वर कुछ घटनेपर और रस-क्षरण आरम्भ होनेपर इसका व्यवहार होता है। रोगी चुपचाप पड़ा रहता है, हिलने-डोलनेसे डरता है। रोग-वाली जगह सुई गड़नेकी तरह दर्द।

बेलेडोना ३x, ६x—तेज बोखार, मस्तिष्कमें

गड़बड़ीके लक्षण, आँख-मुँह लाल, सूखी खाँसी, टनक जैसे दर्दके लक्षणमें व्यवहृत होता है ।

एण्टिम टार्ट ६x, विचूर्ण ३०—गलेमें श्लेष्मा घरघराया करता है, छातीमें दबाव मालूम होना, मिचली, बहुत ज्यादा मात्रामें बलगम निकलना और मानो साँस रुकती जाती है, ऐसा भाव हो जाता है ।

मर्कुरियस ६x, विचूर्ण ३०—रस-क्षरण जब पीब में परिणत होने लगता है ; उस समय यह लाभदायक है । रोगीको रातमें पसीना होता है ।

सलफर ३०, २००—क्षरण आरम्भ होनेपर यह ज्यादा फायदा करता है । पुरानी बीमारीमें तेजी घट जाने-पर यदि छोड़ी हुई साँसमें बदबू निकलती हो तथा बदबूदार बलगम निकलता हो तो इसका व्यवहार होता है ।

सर्दी-गर्मी ।

इसे लू लग जाना भी कहते हैं । सूर्यकी तेज गर्मी या एंजिन, भाफवाले यन्त्र, अंगीठी इत्यादिकी गर्मी लग जानेकी वजहसे यह बीमारी पैदा होती है । बीमारीका हमला होनेके पहले सरमें चक्कर आना, सरमें दर्द, मिचली, बार

पतले दस्त, तेज प्यास, पानी पीने बाद ही वमन, शरीरमें बहुत जलन और मृत्यु-भय पैदा हो जाता है। ये सभी आर्सेनिकके प्रधान लक्षण हैं। जिस रोगमें ये सब लक्षण दिखाई दें, उसमें होमियोपैथीके मतसे तैयार किया हुआ "आर्सेनिक" प्रयोग करनेपर वह बीमारी आराम हो जाती है।

होमियोपैथीका मूल-तत्व।

(क) लक्षण-समूह ही रोग है और रोग कई लक्षणों द्वारा ही प्रकट होता है।

(ख) दवाकी आरोग्य करनेवाली शक्ति सिर्फ स्वस्थ मनुष्यके शरीरमें प्रयोग या परीक्षा करनेपर जानी जा सकती है। एलोपैथिक निदानतत्वके विद्वान पशुपक्षियोंकी त्वचाको छेद कर, उसमें दवा डाल, दवाके गुणकी परीक्षा करते हैं, पर जो बोल नहीं सकते, उन पशु-पक्षियोंसे दवाका वास्तविक लक्षण किस तरह मालूम हो सकता है? इसके अलावा मनुष्य और पशुपक्षीके शरीरमें सभी पदार्थोंकी क्रिया एक समान नहीं हो सकती, जो चीज पशु-पक्षीके शरीरमें जहर का काम कर सकती है, मनुष्यके शरीरमें वही जहरकी क्रिया नहीं भी कर सकती है।

(ग) स्वस्थ मनुष्यके शरीरमें परीक्षित औषधके लक्षणोंके साथ रोग-लक्षणकी समानता रहनेके कारण,

बार पेशाब करनेकी इच्छा, बेचैनी प्रभृति लक्षण कई घण्टे या कई दिन पहले प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३, ६—यदि माथेमें सूर्यका तेज उत्ताप लगकर बीमारी पैदा हो जाये, तो यह बहुत अधिक फायदा करता है। तेज प्यास, चेहरा लाल, बोखार, सर-दर्द और बहुत अधिक स्नायविक उत्तेजना।

बेलेडोना ६, ३०—तेज सर-दर्दके साथ माथेमें भार मालूम होता है और ऐसा अनुभव होता है मानो माथा फट जायगा। सर झुकानेपर माथेमें चक्कर आना, चेहरा और आँखें लाल हो जाती हैं।

ग्लोनोयिन ३०—माथेके पिछले भागमें तेज दर्द, बोली रुक जाना, एकाएक बेहोश हो पड़ना, टकटकी लगी स्थिर दृष्टि।

एमिल नाइट्रेट ६, ३०—आँखें लाल, मतवालोंकी तरह भाव, जोर जोरसे कलेजा धड़कता है, हाथ आदिका काँपना, सरमें चक्कर आना इत्यादि।

यदि हिमांगावस्था (शीत आ जाना) पैदा हो जाये तो चीनी या बताशेमें जल्दी जल्दी स्पिरिट कैम्फर व्यवहार करना उचित है।

स्नायविक दौर्बल्य ।

स्नायुमण्डलकी कमजोरी या सुस्तीको स्नायविक दौर्बल्य कहते हैं । अङ्गरेजीमें इसका नाम नियुरैस्थेनिया है । पुरानी और वे टेढ़ी बीमारियाँ, जिनमे रोगीकी जीवनी शक्तिका क्षय हो जाता है, बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम, हस्त-मैथुन अथवा बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवन, वंश-परम्परासे आया हुआ दोष, इत्यादि कारणोंसे स्नायविक दौर्बल्यकी बीमारी उत्पन्न होती है ।

चिकित्सा ।

एनाकार्डियम ३०—हस्तमैथुन या बहुत ज्यादा स्त्री-सहवासके कारण स्मरण-शक्तिका घट जाना ।

अर्जेण्टम नाई ३०—सरमे चक्कर, कमजोरी, अंगोंका काँपना, पीठमे दर्द हुआ करता है ।

एल्यूमिना ३०—पैरके तलवेमें दर्द मालूम होना, पीठमें ऐसी तकलीफ मानो लोहेकी गरम की हुई सींक घुसाई जा रही है ।

नक्स-वोमिका ३०—दिमागकी कमज़ोरी और पेटकी गड़बड़ीके साथ मन्दाग्नि, मानसिक परिश्रम करनेकी शक्ति न रहनेके लक्षणमें इसका प्रयोग होता है ।

फास्फोरस ३०, २००—मस्तिष्ककी कमजोरी, बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवनके कारण नाना प्रकारके उपसर्ग।

फास्फोरिक एसिड ३०—हस्तमैथुन और बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवनका दुष्परिणाम, जननेन्द्रियका शिथिल हो जाना। थोड़ा-सा भी परिश्रम करनेपर थकावट मालूम होने लगती है।

पिकरिड एसिड ३०—मस्तिष्कमें गड़बड़ी मालूम होना, थोड़ी भी मेहनत करनेपर सुस्ती आ जाना, पीठकी रीढ़में जलन, जंघा तथा पीठमें बहुत कमजोरी।

सिलिसिया ३०—स्नायविक सुस्ती, शारीरिक और मानसिक परिश्रमकी इच्छा न होना; कब्जियत रहनेपर इससे बहुत फायदा होता है।

इग्नेशिया ६, ३०—कभी हँसना, कभी रोना, हिस्टीरियाकी तरहके लक्षण यदि प्रकट होने लगें तो इसका व्यवहार होता है।

सहकारी उपाय—इस बीमारीमें साधारण स्वास्थ्यका नियम पालन करना सबसे ज्यादा फायदा करता है। रोज सवेर शाम निर्मल हवामें घूमना लाभदायक है, मनको हमेशा शान्त और स्थिर रखना चाहिये। काम-काज तथा दूसरी दूसरी चिन्ताएं एकदम त्याग देनी चाहियें।

निद्रानाश या अनिद्रा ।

जब माथेमें खूनका दबाव ज्यादा हो जाता है, तो नींद नहीं आती है । मानसिक उत्तेजना, उत्कण्ठा, सुस्ती या पाकाशयकी गड़बडीकी वजहसे अथवा दूसरी दूसरी बीमारी के साथके लक्षणके रूपमें नींद न आनेकी बीमारी पैदा हो जाती है। अतएव, उसपर नजर रखनी चाहिये, कि मूल रोग आराम हो जाये।

चिकित्सा ।

काफिया ६, १२, ३० या २००—यह नींद न आनेकी प्रधान दवा है। बिलकुल ही नींद नहीं आती, किसी विषयकी चिन्ताकी वजहसे नींद न आना।

नक्स-वोमिका ३० या **कैमोमिला** ३०—बहुत ज्यादा काफी पीनेके कारण जिन्हे नींद नहीं आती है, उनके लिये लाभदायक है।

चायना ६x, ३०—शरीरका रस-रक्त आदि क्षय हो जानेके कारण कमजोरी और इसी वजहसे नींद न आना।

एकोनाइट ६—डर जाने या किसी उद्वेगके कारण नींद न आना, नींद न आयगी, इसी भयसे अनिद्राके लक्षणमें इसका प्रयोग होता है।

अर्जेण्टम-नाई ३०—रोगीकी कल्पनामें नाना प्रकारके भाव और मूर्त्तियाँ घूमती फिरती हैं, इसी वजहसे नींद नहीं आती है।

काकुलस ३०—रातमें जागनेकी वजहसे या मानसिक क्रियाकी ज्यादतीकी वजहसे नींद न आना, वार वार जाग उठना और चौंक उठना लक्षणमें लाभ करती है।

पैसिफ्लोरा इन ३x—स्नायविक सुस्तीकी वजह से नींद न आना, मानसिक परिश्रमकी वजहसे नींद न आना।

लैकेसिस ३०—रातमें जागनेपर फिर नींद नहीं आती, नींदके बाद सभी लक्षणोंका बढ़ना, बेचैन नींद, इसके साथ ही स्वप्नके लक्षणमें इसका प्रयोग होता है।

सहकारी उपाय—खुली हवाका सेवन और व्यायाम फायदा करता है। उत्तेजक खाना-पीना त्याग देना चाहिये। पुष्ट पर हल्की चीज खानी चाहियें।

सर-दर्द।

यह सर-दर्द ज्यादा कर बहुत-सी नयी और पुरानी बीमारियोंका एक लक्षण ही होता है। ज्वर, मस्तिष्कमें

खूनका अधिक दबाव, मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह प्रभृति बीमा-रियोंके साथ यह दिखाई देता है। दोनों कनपटियोंमें, कपालमें, सामनेकी ओर ऊपर ब्रह्माण्डमें अथवा पीछेकी ओर यह दर्द हुआ करता है। यह दो तीन घण्टोंसे लेकर दो तीन दिनोंतक बना रह सकता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ६, ३०—ऐसा मालूम होता है, मानो कपालके भीतरसे मस्तिष्क बाहर निकल पडेगा। बैठे रहने बाद, उठनेके समय सरमें चक्कर, क्रोध आ जाना और तकलीफसे बेचैन हो पडना।

अर्जेण्टम-नाई ६, ३०—सबेरे सरमें चक्करके साथ कपालमें दर्द, माथेके चारों ओर कुछ कसकर बाँध देनेपर सर-दर्दका घट जाना।

सैंगुनेरिया ६, ३०—पित्तकी कैके साथ सर-दर्द। यह दर्द सबेरे शुरू होकर दिनमें ज्यादा हो जाता है। हिलने-डोलनेपर बढ़ता है, अँधेरे घरमें चुपचाप बैठे रहनेपर दर्द घटा रहता है। माथेमें खासकर दाहिनी आँखके ऊपर तेज दर्द, इसके साथ ही वमनेच्छा (मिचली) और कै होना।

स्पाइजिलिया ३०—पर्यायक्रमसे होनेवाला सर-दर्द। ऐसा दर्द मानो किसीने दबा रखा है या किसी

औजारसे छेद रहा है। हिलना-डोलना, गोलमाल और सर झुकानेपर दर्दका बढ़ना, स्नायविक सर-दर्द। रोज दिन के समय आरम्भ होता है, दिनमें दर्द ज्यादा रहता है और सूर्यास्त हो जानेपर घटता है।

पल्सेटिला ६, ३०—भारी, तेल-घी आदिकी बनी चीजें खानेकी वजहसे सर-दर्द। छेदने या सुई गड़नेकी तरह दर्द, यह दर्द शामके वक्त बढ़ जाता है। रोगी ठण्डी और खुली हवा खाना चाहता है। बन्द कमरेमें बहुत ज्यादा तकलीफ होती है।

नक्स-वोमिका ६, ३०—खट्टी और तीती कै-के साथ सर-दर्द। सवेरे और मानसिक परिश्रम करनेपर यह दर्द बढ़ जाता है। बहुत अधिक कब्जियत। नियमसे न रहनेवाले और बवासीरके रोगियोंका सर-दर्द।

काफिया ३—ऐसा मालूम होता है, मानो कोई माथेमें खील ठोंक रहा है। खुली हवामें दर्द ज्यादा होता है। रोशनी और गोलमालमें दर्द बढ़ जाता है। माथा बहुत छोटा मालूम होता है। एकदम नींद न आना। जलन करनेवाली खट्टी डकार।

सहकारी उपाय—रोगका आक्रमण होनेपर उपवास करना अच्छा है, रोगका हमला होनेके शुरूमें ज्यादा

परिमाणमें गरम पानी पीनेपर किसी तरह सर-दर्द घट जाता है। मस्तिष्कमें रक्तसचयके कारण सर-दर्द हो तो ठण्डे पानीकी धार देनेसे फायदा होता है।

चक्षुप्रदाह या आँख उठना ।

साधारण बोल-चालमें इसे आँख उठना या आँख आना कहते हैं। आयुर्वेदमें इसीका नाम अभिष्यन्द रोग है। यह आँखके ऊपरी भागकी श्लैष्मिक झिल्लीके प्रदाहके सिवा और कुछ भी नहीं है।

आँखके सफेद अंशका लाल हो जाना, आँखसे पानी गिरना, आँखमें जलन और करकराहट, कांटा गड़नेकी तरह उनमें दर्द, पपड़ी जमना और रातमें आँखोंका सट जाना, सरमें दर्द, किसी किसीको बोखारकी तरह मालूम होना, रोशनीका सहन न होना प्रभृति इसके साधारण लक्षण हैं।

चिकित्सा।

पीले या हरे कपड़ेसे आँखोंको ढंके रखना फायदा करता है। बाहर लगानेकी अण्ट-सण्ट दवाओंका प्रयोग करना अच्छा नहीं है और इनकी जरूरत भी नहीं पड़ती।

गुलाबजल और सुसुम पानीसे बीच बीचमें आँख धोनेपर जलनकी तकलीफ घट जाया करती है।

एकोनाइट ३, ६—प्रदाहमें यदि हलका बोखार-सा रहे और खासकर सर्दीकी वजहसे आँख उठनेपर फायदा करता है,

बेलेडोना ६—आँखका सफेद अंश बहुत लाल, आँखमें दर्द, समूचा चेहरा लाल हो जाना, आँख फूल उठती है, सरमें दर्द, रोशनी और सूर्यकी गरमी सहन नहीं होती है। यह हवा और ठण्डकके कारण पैदा हुए आँखोंके प्रदाह की बढ़िया दवा है।

मर्कुरियस ३०—यह अकसर बेलेडोनाके बाद फायदा करता है। यह आंख उठनेकी एक बेजोड़ उत्तम दवा है, आंखमें दर्द, करकराहट, ऐसा मालूम होना, मानो उसमें बालू गिरी हुई है, रोशनी सहन नहीं होती; शामके वक्त और बिछावनकी गरमीसे बीमारीके लक्षणोंका बढ़ना।

आर्निका ६—चोटकी वजहसे आंखोंका प्रदाह हो तो लाभ करता है।

एपिस मेलिफिका ६—जलन और खुजली और आंखमें डंक मारनेकी तरह दर्द, बहुत ज्यादा परिमाणमें पीव निकलना, आंखकी पलक फूल जाना, किसी तरहकी भी गरमी सहन नहीं होती।

अर्जेण्टम नाइट्रिकम ६—तुरन्तके जन्मे बच्चों के आँखोंके प्रदाहमें यह ज्यादा फायदा करता है, इसका खास लक्षण है—पीवकी तरह स्रावका होना। खुली हवामें रोगीको आराम मिलता है और गरम कमरेमें बीमारी बढ़ जाया करती है। तुरन्तके जन्मे बच्चेके आँखोंके प्रदाहमें इसके निम्न क्रमका विचूर्ण (१ ग्रेन) २ ड्राम चुआए पानीमें मिलाकर लगानेसे तुरन्त फायदा होता है।

आर्सेनिक ३०—बेचैनी और जलनके साथ पतला, खाल उधेड़नेवाला या जखम कर देनेवाला स्राव। रातमें रोग-लक्षणोंका बढ़ना।

इयुफ्रेशिया ३—सर्दीके साथ आँखोंका प्रदाह। आँख और नाकसे बहुत ज्यादा परिमाणमें स्राव। आँसुओंका स्राव जलन करनेवाला या झालदार, गाढ़ा पीले रंगका, सर्दी लगने या छोटी माता निकलने बाद ज्यादा फायदा करता है।

ओसिमम सैङ्क्टम ३x—आँख लाल, रंगकी, इससे पानी गिरा करता है और पपड़ी जमती है, तुरन्तके जन्मे बच्चेके आँखके प्रदाहमें भी बहुत सफलताके साथ इसका व्यवहार होता है, बाहरी प्रयोग (लगाने) के लिये इसका मूल अरिष्ट २।३ बूँद एक आउन्स पानीमें डालकर व्यवहार किया जा सकता है।

पल्सेटिला ६, ३०—नये और पुराने दोनों तरहके प्रदाहोंकी ही यह उपयोगी दवा है, इसका स्राव जलन नहीं पैदा करता तथा जखम भी नहीं बना देता। बहुत ज्यादा परिमाणमें सफेद स्राव होता है, शामके वक्त और गरम घरमें बीमारी बढ़ जाती है। खुली हवामें घटती है। यह सूजाककी वजहसे होनेवाले आँखोंके प्रदाहकी एक बढ़िया दवा है।

हासटक्स ६—पानीमें भींजनेके कारण बीमारी, बहुत बेचैनी रहती है।

सलफर ३०—इसका नयी तथा पुरानी, दोनों तरहकी बीमारियोंमें ही प्रयोग होता है। आँखमें तीर बिंधनेकी तरह दर्द, रातके १ बजने बाद दर्दका बढ़ना, दर्दके कारण रोगी जाग जाता है और उठकर बैठ जाता है।

तिमिर दृष्टि या दृष्टिहीनता।

आँखमें दिखाई न देनेको तिमिर दृष्टि या अन्धापन कहते हैं। इसका अँगरेजी नाम एमोरोसिस है। पीठकी रीढ़, मस्तिष्क या दर्शन-स्नायुकी बीमारीसे ही अन्धापन पैदा होता है। इसमें आँखके विधानमें किसी तरहका विकार नहीं देखा

जाता। शरीरके रसरक्त आदिका बहुत क्षय हो जानेके कारण भी यह बीमारी पैदा हो जा सकती है।

चिकित्सा।

इस रोगमें इस बातपर ख्याल रखना चाहिये, कि आँखको भरपूर आराम मिले। इसके अलावा साधारण तन्दुरुस्ती भी अच्छी होती जाये, इसपर भी नजर रखनी चाहिये।

मर्कुरियस ६—कण्ठमाला और उपदंशकी वजहसे पैदा हुई बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है। बाईं आँखपर हमला होनेपर।

बेलेडोना ६—दिमागमें बहुत ज्यादा खून इकट्ठा होना और टपककी तरह दर्द, चेहरा लाल रहता है।

फास्फोरिक एसिड ६—यदि बीमारीका कारण बहुत ज्यादा हस्तमैथुन हो तो इससे बहुत ज्यादा फायदा होता है।

फास्फोरस ३०—बुढ़ापेकी बीमारी, सर-दर्द, रोशनीका सहन न होना, आँखके सामने रोशनीकी एक लकीरसी दिखाई देना प्रभृति लक्षणोंकी दवा है।

चायना ६—बहुत दिनोंतक किसी कारणसे रक्त-स्राव होता हो या पतले दस्त आते हों। इन्हीं कारणोंसे रस-रक्त आदिका क्षय होकर अन्धापन पैदा होता है।

नक्स-वोमिका ३०—बहुत अधिक मानसिक परिश्रम या बहुत ज्यादा शराब आदि पीनेके कारण रोग होनेपर इसका प्रयोग बहुत ही फायदेमन्द होता है।

आर्निका ३x—चोट या आँखसे बहुत ज्यादा काम लेनेपर होनेवाली बीमारीमें इससे विशेष फायदा होता है।

जेलसिमियम ६—तिमिर रोगकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है। रोशनी पानेकी प्रबल इच्छा, दो देखना, चीजें गड़बड़ दिखाई देना, आँखमें दर्द।

फाइजस्टिग्मा ३०—आँखोंमें दाग या मोतिया-बिन्द होनेपर आँखसे साफ दिखाई न देना, आँखसे बहुत काम लेनेकी वजहसे बीमारी। आँखमें दर्द पैदा हो जाना।

क्षीण-दृष्टि या दृष्टि-शक्तिकी क्षीणता।

इसको तिमिर रोगकी पहलेकी अवस्थाका रूप कहा जा सकता है। स्नायुमण्डल अथवा खूनके दौरानकी गड़-बड़ी पैदा हो जानेकी वजहसे आँखसे कम दिखाई देता है या दृष्टि क्षीण हो जाती है। बहुत ज्यादा नशीली चीजें

खाना-पीना, पसीना रूकना, मासिक रजःस्रावका रुक जाना, बहुत अधिक सर्दी लग जाना, बहुत चमकीली या बहुत ही महीन रोशनीको टकटकी लगाकर बहुत देरतक देखते रहना प्रभृति इसके प्रधान कारण माने जाते हैं।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६—स्नायु-कोषमें खूनका दौरान होनेकी वजहसे बीमारी होनेपर यह फायदा करता है।

चायना ६—बहुत ज्यादा रस-रक्त आदि निकल जानेके कारण रोग होनेपर इस दवासे बहुत फायदा होता देखा जाता है। इससे यदि फायदा न हो तो इसके बाद "फास्फोरस" का प्रयोग करना चाहिये।

नक्स-वोमिका ३०—बहुत ज्यादा नशीले पदार्थों का सेवन अथवा मानसिक परिश्रम और अजीर्णकी वजहसे बीमारी होती है।

पलसेटिला ३०—स्त्रियोंका मासिक रजःस्राव रुककर यदि बीमारी हो जाये तो इसका व्यवहार होता है। अजीर्णकी वजहसे बीमारी होनेपर भी इससे फायदा होता है।

सैंगुनेरिया ६—तेज सर-दर्दके साथ क्षीण-दृष्टि, सर-दर्द माथेके पिछले भागसे आरम्भ होकर ऊपरको

फैलता है और दाहिनी आँखपर जाकर ठहर जाता है स्त्रियोंका मासिक रजःस्राव बन्द होनेके समयकी क्षीण दृष्टि।

स्पाइजिलिया ६—सर-दर्द बाईं ओर ठहरता है और बाईं आँखमें ही दर्द होता है।

आर्निका ६—आँखसे बहुत ज्यादा काम लेनेकी वजहसे बीमारीका पैदा होना।

इस रोगमें खासकर पौष्टिक भोजन और विश्राम करना तथा सोना लाभदायक है।

मोतियाबिन्द।

आँखका लेन्स (lens) या आइनेके गदले हो जाने या साफ न रहनेको मोतियाबिन्द और अँगरेजीमें कैटारैक्ट कहते हैं। स्वस्थावस्थामें आँखका यह शीशा दिखाई नहीं देता पर मोतियाबिन्द हो जानेपर, आँखकी पुतलीके भीतरसे [illegible] सफेद रंग या नीली आभा लिये सफेद रंग दिखाई देता है। मोतियाबिन्द दो तरहका होता है—कोमल और कड़ा। कोमल मोतियाबिन्दका रंग कुछ नीला और यह बचपन से लेकर तीस-पैंतीस बरसकी उम्रतक पैदा होता है। पर

कड़ा मोतियाबिन्द बुढ़ापेकी बीमारी है और उसका रंग धुमैला या पीली आभा लिये धुमैला रहता है।

चिकित्सा।

साइलिसिया ३०—मोतियाबिन्दकी एक बढ़िया दवा है। पैरका पसीना रुककर अगर मोतियाबिन्द पैदा हो जाये तो यह और भी ज्यादा फायदा करता है।

चर्म-रोग गायब होकर अगर मोतियाबिन्द हो तो "सलफर" बहुत ही उत्कृष्ट दवा है।

कैल्केरिया कार्ब ३०—कण्ठमाला धातुवाले मनुष्योंके लिये उपयोगी है।

पल्सेटिला ६—स्त्रियोंका रजःस्राव लोप हो जाने के कारण मोतियाबिन्द पैदा हो जाता है।

कास्टिकम ३०—सबसे बढ़िया दवा मोतिया-बिन्दकी मानी जाती है। ऐसा मालूम होता है, कि आँखमें बालू पड़ी हुई है और आँखको दबानेपर दर्द मालूम होता है। पलकें भारी और फड़का करती हैं, आँखमें जलन, खुजली, इच्छा होती है, कि आँखे बन्द किये रहे।

फास्फोरस ३०—बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवनकी

वजहसे रोग होना। आँखके सामने काले विन्दु मंडराते दिखाई देते हैं।

आयोडिन ३०--तेजीसे बढ़नेवाली बीमारीमें फायदा करता है।

सिपिया ३०—औरतोंके मोतियाबिन्दमें फायदेमन्द है। आँखें बहुत कमजोर मालूम होती हैं। शामके वक्त बीमारीकी तकलीफ बढ़ जाती है और दो पहरमें घटी रहती है। पलकें भारी, तथा फड़कती रहती हैं, आँखमें जलन, भोजन कर लेनेपर बढ़ना।

कोनायन ३० —चोटकी वजहसे यदि मोतियाबिन्द हो जाये तो यह फायदा करता है।

सिनेरेरिया मेरिटिमा सक्कस—मदर टिंचर मोतियाबिन्द आरम्भ होनेकी पहली अवस्थामें आँखमें डालनेपर मोतियाबिन्द कट जाता है। पुरानी अवस्थामें "कल्केरिया फ्लोर" १२x बिचूर्ण खानेपर और "सिनेरेरिया" आँखमें डालनेपर बहुत-से रोगियोंको फायदा होता दिखाई दिया है।

धूमदृष्टि या ग्लोकोमा ।

आँखकी सब बीमारियोंमें यह सबसे जबर्दस्त बीमारी है। इसमें चक्षुगोलक (आँखका गोला) धीरे धीरे कड़ा होता जाता है। इसके बाद क्रमशः दिखाई देनेकी ताकत घटती जाती है। दीयेकी लौके चारों ओर नाना प्रकारके रंगोंके मण्डल दिखाई देते हैं। बीच बीचमें धुँधला दिखाई देता है। ये सभी "धूमदृष्टि" के प्राथमिक लक्षण हैं।

चिकित्सा ।

बेलेडोना ६—आँखमें टपककी तरह बहुत तेज दर्द ; आँख गर्म और सूखी ; रोशनीका सहन न होना। रोशनीके चारों ओर कितने ही रंग, खासकर लाल रंगका दिखाई देना।

ब्रायोनिया ३०—छूने और हिलानेसे आँखमें दर्द ; रोशनीके चारों ओर नाना प्रकारके रंग दिखाई देते हैं।

जेलसिमियम ६—यह इस बीमारीकी एक बहुत बढ़िया दवा है। चक्षुगह्वरमें दर्द, दो देखना और दृष्टिमें गड़बड़ी, रोशनी मिलनेकी इच्छा।

स्पाइजिलिया ३—आँख और माथेमें तेज और बेधनेकी तरह दर्द, हिलने-डोलने या रातके समय यह दर्द बढ़ जाता है।

ओस्मियम ३०—आँखमें और उसके चारों ओर तेज और भयंकर दर्द। धुंधला दिखाई देना, ऐसा मालूम होता है, कि कुहरेके भीतरसे देख रहा है। दीयेकी लौके चारों ओर कितनी ही तरहके रंग दिखाई देते हैं।

कोलोसिन्थ ६—आँखके भीतर और उसके चारों ओर नाना प्रकारका दर्द, तीर वेधनेकी तरह, जलन करनेवाला, काटनेकी तरह दर्द। गर्म घरमें, घूमनेपर और दबानेपर इस दर्दका घटना, विश्राम करनेपर और रातके समय बढना।

उपतारा-प्रदाह या आइराइटिस।

भी यह दवा बहुत फायदा करती है। बेचैनी, प्यास, मृत्यु का भय प्रभृति लक्षण भी मौजूद रह सकते हैं।

आर्निका ६—चोटकी वजहसे पैदा हुई बीमारीमें यह लाभदायक है।

आर्सेनिक ३—जलन करनेवाला दर्द, आधी रातके समय यह दर्द बढ़ जाता है और गर्म प्रयोगसे घटता है।

आरम मेटालिकम ३०—खासकर उपदंशकी वजहसे पैदा हुई बीमारीमें फायदा करता है। यदि पारा बहुत अधिक खाया हो तो भी इसका सफल प्रयोग होता है।

बेलेडोना ६—आँखके चारों ओर सुई गड़ने और दबानेकी तरह दर्द, एकाएक पैदा होता है और एकाएक ही गायब हो जाता है; तेज सर-दर्द।

सिनाबेरिस ३०—उपदंशसे पैदा हुई बीमारी, दर्द आँखके भीतर पैदा होकर चारों ओर फैल जाता है, इसी ढगका दर्द।

क्लिमेटिस ३—आँखमें दबावका दर्द, रोशनीका सहन न होना और आँखसे पानी गिरना। खुली हवामें इसके उपसर्ग बढ़ जाते हैं।

कोलोसिन्थ ६—वातकी वजहसे दर्द, रातमें दर्दका बढ़ना, आँखके भीतर दर्द, रोशनीका सहन न होना।

प्रणयनके कारण उनकी सुकीर्त्ति चारों ओर फैल गयी। सन् १७६० ईस्वीमें एडिनवराके प्रसिद्ध चिकित्सक कालेन-की लिखी हुई अँगरेजी मेटिरिया-मेडिका जर्मन भाषामें अनु-वाद करते समय सिनकोना दवाकी लम्बी चौड़ी व्याख्याको देखकर उनके मनमें सन्देह हुआ। उन्होंने यह दवा स्वयं सेवन की। परिणाम यह हुआ कि उन्हें कम्प-ज्वर हो गया। अब उन्होंने समझ लिया कि सभी दवाओंमें रोग उत्पन्न और नाश करनेकी शक्ति है। इसी समयसे वे कठोर अध्य-यन और गवेषणा द्वारा, स्वयं सेवनकर तथा और भी २१ शिष्योंको सेवन कराकर कितनी ही दवाओंकी परीक्षा करने लगे। अब यह हुआ कि इस मतका प्रचार होनेपर कितने ही नीचवुद्धि चिकित्सक उनके विरोधी वन गये। इस समय उन्हें आर्थिक कठिनाइयोंका भी वहुत अधिक सामना करना पड़ा। उनकी आमदनी वहुत थोड़ी थी, पर परि-वार बढ़ता ही जाता था। इसका कोई ठिकाना नहीं है कि उन्हें कितने दिन भूखों रहकर ही विताने पड़े थे। सन् १८१२ ईस्वमें वे लिपज़िक विश्वविद्यालयके होमियोपैथिक अध्यापक नियुक्त हुए, पर ऊपर लिखे चिकित्सकोंने ऐसा षड्यंत्र रचा कि सन् १८२१ ई० में उन्हें नौकरीसे हाथ धोना पड़ा। इसके वाद वे कोथेन चले गये, वहांके राजाकी एक दुरारोग्य बीमारी अच्छी की। इसीलिये उन्हें राज-चिकि-

अंजनी या गुहौरी।

आँखकी पलकके ऊपर या नीचे प्रदाह-भरी एक तरहकी फुन्सी होती है। इसे ही अंजनी या गुहौरी कहते हैं। यह एक या ज्यादा भी होती है, कभी कभी एक आराम होने पर दूसरी निकल आती है। इसमें बहुत दर्द होता है, कभी कभी पककर इसमेंसे पीव भी निकलता है।

चिकित्सा।

पल्सेटिला ६—इसकी सबसे बढ़िया दवा है, इस से बीमारी बढ़ नहीं पाती है।

स्टैफिसेग्रिया ६—इसका भी कितनी ही बार व्यवहार होता है। पल्सेटिलासे फायदा न होनेपर इसका व्यवहार कर देखना उचित है। इसमे गुहौरीमें पीव न होकर वह कड़ी बोयेंकी तरह हो जाती है।

हिपर सलफर ३०—इसका व्यवहार पीव पैदा हो जानेपर होता है।

सलफर ३०—यदि बार बार गुहौरी होती हो, तो दुबारा होना रोकनेके लिये, सलफर एक बहुत बढ़िया दवा है।

कानका दर्द, कानमें पानी जानेकी वजहसे यदि कानमें दर्द पैदा हो जाये तो भी यह लाभ करता है।

आर्निका ३x—चोटकी वजहसे कानके दर्दमें उपयोगी है।

एपिस मेलिफिका ६—इसमें कानमें डंक मारने की तरह दर्द होता है।

बेलेडोना ६—सरमें भारके साथ दर्द। दर्द एकाएक पैदा होता है और एकाएक ही गायब हो जाता है। आवाज सहन नहीं होती है।

कैमोमिला १२—क्षय हुए दाँतकी वजहसे कानकी बीमारी होनेपर इस दवासे विशेष लाभ होता है।

जेलसिमियम ६—कानमें गरजकी आवाज,एकाएक थोड़ी देरके लिये सुननेकी शक्तिका गायब हो जाना।

मर्क-सोल ३०—दांतकी बीमारीके साथ ही साथ यदि कानमें तकलीफ हो तो ज्यादा फायदा करता है।

पल्सेटिला ६—यह कानके दर्दकी बहुत बढ़िया दवा है। पुरानी सर्दीकी वजहसे कानमें दर्द, सुननेकी ताकतका घट जाना, ऐसा मालूम होता है, मानो कान बन्द हो गया है। आयविक प्रकृतिका दर्द। बच्चोंके कानके दर्दमें ज्यादा फायदा करता है।

कर्ण-प्रदाह ।

कर्ण-कुहरके प्रदाहकी पहली अवस्थाको एक स्वतंत्र रोग कहते हैं। यह रोग ठण्ड प्रभृति कारणसे पैदा होता है। किन्तु यह प्रायः कर्ण-कुहरकी बीमारीके साथ अथवा कण्ठ-गलकोषके नाना प्रकारके दूषित अवस्थाके साथ मिला रहता है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३—नयी प्रदाहवाली अवस्थामें यह ज्यादा फायदा करता है। कर्ण-कुहरके भीतर गहराईवाले हिस्सेमें प्रदाह होकर यह भयानक दर्द होता है।

बेलेडोना ३—मस्तिष्कके उपसर्ग, रक्त इकट्ठा होना, कानमें टपककी तरह दर्द, कानमें सनसन या गरजकी

तरह आवाज, सुननेकी ताकतका घट जाना, इसके साथ ही कानमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, आवाज सहन न होना।

कैमोमिला ६—असह्य दर्द, दर्दकी वजहसे रोगी पागल हो जाता है। सुई गड़नेकी तरह यह दर्द होता है।

मर्क्युरियस ३०—कानमें टनटन आवाज होना, कानमें गुनगुन या गरजकी आवाज, कर्ण-मूलका फूलना, रातमें शय्याकी गरमीसे तकलीफोंका बढ़ना।

बच्चोंको कान पकनेकी बीमारी जल्दी आराम नहीं होना चाहती। यदि यह बीमारी बहुत दिनोंतक बनी रह जाती है तो इससे बहरापन पैदा हो जाता है। तेज बाहरी दवा डालकर जल्दीसे पीब बन्द करनेसे कितनी ही बार बहुत बड़ी बड़ी खराबियाँ पैदा हो जाती हैं।

चिकित्सा।

आरम मेटालिकम ३०—बहुत ज्यादा परिमाण में बदबूदार पीब निकलना। कण्ठमाला दोषवाले बच्चे और उपदंश दोष अथवा बहुत ज्यादा पाराके अपव्यवहारकी बीमारीवाले मनुष्योंके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है।

केप्सिकम ६—कानसे पीब-रक्त निकलना, कितनों का ही कथन है, कि कान पकनेकी यह एक बहुत ही बढ़िया दवा है।

ग्रेफाइटिस ३०—खून मिला पानीकी तरह पीब का बदबूदार स्राव, लसदार गोंदकी तरह स्राव।

हाइड्रैस्टिस ६—गाढ़ा श्लेष्माका स्राव होनेपर यह काम करता है।

मर्क्युरियस ३०—कानसे खून-मिला पीब निकलना, कानकी जड़का बहुत फूल जाना, कुछ न कुछ बहरापन भी

शामिल रहता है। रोगवाली जगहमें नोच फेंकनेकी तरह दर्द होता है।

सोरिनम ३०— बहुत बदबूदार पीवका स्राव ; बहुत ही कड़ी, जल्दी आराम न होनेवाली बीमारी।

नाइट्रिक एसिड ३०— बदबूदार पीवका स्राव। शरीरमें पाराका दोष रहनेपर और भी सफलता-पूर्वक इसका व्यवहार होता है।

साइलिसिया ३०—कान बन्द, मानो ताला लगा हुआ है और पपड़ी जमती है। कानसे पतला पीव बहता है। रिकेट रोग-ग्रस्त बच्चोंके लिये यह उपयोगी है।

पिचकारीसे पानी देकर कान धोना अच्छा नहीं होता। कभी कभी पिचकारीके धक्केसे कानका परदा यदि फट जाता है, तो हमेशाके लिये बहरापन आ जाता है।

नाककी सर्दी।

नासिका गह्वरकी श्लेष्मिक झिल्लीके नये प्रदाहकी वजह से ही यह बीमारी हुआ करती है। ऋतुका अदल-बदल, नाकमें कोई उपदाह पैदा करनेवाली चीज, जैसे धूल, बालू

सामने कपालमें दर्द होने लगनेपर इसका प्रयोग होता है, रोगी चुपचाप पड़ा रहता है, हिलना-डोलना नहीं चाहता है।

एलियम सिपा ३—नाकसे बहुत ज्यादा परिमाणमें जलन करनेवाला पानीकी तरह स्राव। यह स्राव नाकके अगले भागसे बूँद बूँद टपका करता है। आँखकी पलक फूल जानेके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें आँसू निकलना।

डलकामारा ६—तर ठण्डी हवा लगकर सर्दी हो जाना, खुली हवामें बढ़ना और बन्द कमरेमें तकलीफका घटना।

इयुफ्रेशिया ३—आँखोंसे झालदार आँसू बहना, पर नाकका स्राव खाल उधेड़नेवाला नहीं होता। इस तरहकी सर्दी।

जेलसिमियम ६—हरेक ऋतु-परिवर्त्तनके समय और वसन्त तथा गर्मीके दिनोंकी सर्दी। नाकसे झालदार पानीकी तरह स्राव।

मर्कुरियस ३०—जब सर्दी अच्छी तरह पक जाती तब इसका व्यवहार होता है। गाढ़ा स्राव या पतल ... ही नाक और गलेमें दर्द। ... और ...
ीकी तरह ...

नक्स

सफलता पर प्राप्त हुआ। बस, अब उनकी उन्नतिके दिन लौटने लगे। पर १८३० ईस्वीमें उनकी पत्नीका देहान्त हो गया। इसके बाद मेलानी नामकी एक धनवती फ्रेञ्च रमणी उनकी चिकित्सा-निपुणतापर मुग्ध हो गयी, उसने इनसे विवाह कर लिया। इस समय हैनिमैनकी अवस्था ८० वर्षकी थी। उन्होंने अपनी इस गुणवती रमणीकी सलाहके अनुसार अपने लिये ३० हजार रुपये रखकर दो बड़े बड़े मकान तथा लाख रुपयोंसे भी अधिककी सम्पत्ति अपनी प्रथम पत्नीसे उत्पन्न सन्तानोंमें बांट दी। हैनिमैनने अपने अन्तिम जीवन-कालमें बहुत अधिक सम्पत्ति उपार्जन की थी। सन् १८४३ ई० की २ री जुलाईको उन्होंने यह संसार छोड़, परलोक प्रस्थान किया। हैनिमैनने बहुत-सी पुस्तकें लिखी हैं, उनमें मेटिरिया-मेडिका प्युरा, आर्गेनन और क्रानिक डिजीजेज प्रधान हैं।

औषध।

जिस चीजका व्यवहार करनेपर बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य सुधर जाता है और जो स्वस्थ शरीरको रोगी बना सकता है, वही औषध है। औषध दो तरहका होता है—आभ्यन्तरिक (internal) और बाहिक—(external)—जिसे खाना पड़ता है, वह आभ्यन्तरिक या भीतरी है और जिसे शरीरके ऊपर आदिमें लेप, मर्दन, मालिश इत्यादि करना पड़ता

ज्वर। बहुत छींकके साथ सूखी सर्दी, रातके समय नाक बन्द हो जाया करती है। दिनके समय नाकसे पतली सर्दी का स्राव होता है। नाक पर्यायक्रमसे बन्द होती और खुलती है।

पल्सेटिला ३—पुरानी अवस्थामें गाढ़ा पीले रंग का अथवा पीली आभा लिये हरे रंगका स्राव होता है।

नाकसे रक्तस्राव।

यह बहुतसे कारणोंसे हो सकता है। किसी दूसरी बीमारीके उपसर्गके रूपमें या नाक अथवा माथेमें चोट लग- कर, माथेमें खून इकट्ठा होकर, क्रोध, बहुत ज्यादा परिश्रम आदि कारणसे यह रोग उत्पन्न हो सकता है। सरमें दर्द, सरमें चक्कर आना, कपालमें तकलीफ, इस रोगके पूर्वके लक्षण हैं। बवासीरका खूनका स्राव अथवा स्त्रियोंका मासिक रजस्राव रुककर भी नाकसे रक्तस्राव हुआ करता है।

चिकित्सा।

बेलेडोना ३—चमकीले लाल रंगका रक्त और मस्तिष्कका लक्षण मौजूद रहनेपर इसका प्रयोग होता है।

इपिकाक ३—यह इस रोगकी एक बेजोड़ प्रधान दवा है। चमकीले लाल रंगका रक्त, हमेशा ही जी मिचलाया करता है।

आर्निका ३x—चोटकी वजहसे बीमारी होनेपर इसका प्रयोग होता है।

कोकस ६—मैले रंगका रक्त, सूत या तारकी तरह लम्बा होकर बाहर निकलता है।

ब्रायोनिया ६—स्त्रियोंको यदि रजःस्राव होनेके बदले नाकसे रक्तस्राव हो तो लाभ करता है।

हैमामेलिस ३—जल्दी जल्दी काले रंगका पतला रक्तस्राव। बवासीरसे रक्त न जाकर नाकसे रक्तस्राव।

वात-रोग।

यह एक तरहकी नयी बीमारी है। इसे नया सन्धिवात कहा जाता है। इसमें ज्वर आनेपर शरीरकी सन्धियों, खासकर बड़ी सन्धियोंमें प्रदाह हो जाता है। रोगवाली जगहपर तेज दर्द, लाली और सूजन रहना इसका प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ६—तेज बोखार, प्यास, दोनों गाल लाल हो जाना, तेज दर्द, दर्दका रातमें बढ़ना। रोगवाली जगह लाल और फूली रहती है।

बेलेडोना ३०—सन्धियोंमें जलन, माथेमें तीर बिंधनेकी तरह तेज दर्द, रातमें तकलीफका बढ़ना। हिलने डोलनेपर बढ़ना, बोखारके साथ ही साथ चेहरा लाल रोगवाली जगहपर चमकीली लाल रंगकी सूजन। मस्तिष्क के लक्षणका प्रकट होते हैं।

आर्निका ३०—सन्धियोंमें कुचलनेकी तरह दर्द। सूजन लाल रंगकी और कड़ी। रोगवाली सन्धिमें ऐसा मालूम होता है, मानो कीड़े रेंग रहे हैं। थोड़ा भी हिलने पर दर्द बढ़ जाता है, किसीके पास आते ही रोगी डरता है, कि कहीं वह रोगवाली जगहको छू न ले।

ब्रायोनिया ३०, २००—तीर बिंधनेकी तरह या ...की तरह दर्द, सन्धिकी अपेक्षा मांस-पेशियोंमें ही दर्द होता है, रातमें और अंग हिलानेपर दर्दका बढ़ना।

मर्कुरियस ३०, २००—जलन करनेवाला और काटनेकी तरह दर्द ; रातमें और खासकर पिछली रातमें बिछावनकी गरमीसे और तर या ठगढी हवामें तकलीफ

बढ़ती है, पसीना बहुत होता है, पर तकलीफ घटती नहीं है।

ह्रासटक्स ६, ३०—काटनेकी तरह या जलन करनेवाला दर्द, रोगवाले अंगमें कमजोरी और कीड़ा रेंगनेकी तरह अनुभव होना, विश्रामसे बढ़ना और हिलाने-डोलानेपर घटना।

पल्सेटिला ६, ३०—दर्द एक सन्धिसे दूसरीमें जाया आया करता है। शामके वक्त और रातमें दर्दका बढ़ना, खुली हवामें घटना। शान्त प्रकृतिकी स्त्रियोंके लिये बहुत उपयोगी है।

फेरम-मेट ३०, २००—एक ही समय ३।४ सन्धियोंमें बीमारी। शूल वेधने या छेदनेकी तरह दर्द। दर्दके कारण रोगीको रोगवाले अंशको हमेशा हिलाते रहना पड़ता है।

कोलचिकम ३०—छेदने या सुई गड़नेकी तरह दर्द, खासकर अंगुलीकी सन्धिमें दर्द। रातमें असह्य दर्द। रोगवाली जगह अकसर फूलती नहीं है।

फास्फोरस ३०, २००—कलाई और अंगुलीकी सन्धियोंमें वात। मोच खा जानेकी तरह दर्द, सवेरे और शामके वक्त दर्दका बढ़ना। लम्बा, संकरा कड़ा मल, सहजमें नहीं निकलता है।

आर्सैनिक ३०, २००—पैरमें सूजन, जलन करने-वाला दर्द। गरम कमरेमें रहनेकी इच्छा। बहुत अधिक मानसिक कष्ट होता है। रातमें, खासकर आधी रातके बाद दर्द बढ़ जाता है।

पेशी वात।

सर्दी लगाने और पेशियोंको बहुत अधिक हिलानेके कारण यह रोग होता है। अधिकतर इसका पहला आक्रमण एकाएक और रातके समय हुआ करता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ६—तेज बोखार, बेचैनी, प्यास चिल्कक मारनेकी तरह दर्द, रोगवाली जगहका लाल हो जाना, गर्म हो जाना और सूजन भी पैदा हो जाया करती है।

आर्निका ३०—यदि चोटके कारणसे हुआ हो तो यह एक बहुत बढ़िया दवा है। रोगवाली जगहपर तेज होता है।

बेलेडोना ६, ३०—तेज बोखार और मस्तिष्कके

विकारके लक्षण। माथेमें दर्दके साथ आँखोंका लाल हो जाना।

ब्रायोनिया ३०, २००—हिलाने डुलानेपर दर्दका बढ़ना और आराम करनेपर घटना। कब्जियत और तेज प्यास रहती है।

सिमिसिफ्युगा ३०—इस रोगकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है। पेशीमें स्पर्शका सहन न होना; तलपेटकी पेशीका वात हो जानेपर इसका प्रयोग होता है।

डलकामारा ६—तर ऋतुमें वातका होना।

ह्रासटक्स ६, ३०—लगातार हिलाने-डोलानेपर रोगका घटना और विश्राम करनेपर बढ़ना।

लम्बेगो या कटिवात।

कटिवात, कमरकी माँसपेशी और कमरके पिछले भागकी फेसिया (fascia) पर इसका हमला होता है। यह हमला बहुत तेजीसे और एकाएक होता है।

चिकित्सा।

आर्निका ३०, २००—बाहरी चोट या भारी चीज उठाने-वगैरहके कारणोंसे बीमारी होनेपर इसका सफलतापूर्वक व्यवहार होता है।

आर्सेनिक ३०, २००—पैरमें सूजन, जलन करने-वाला दर्द। गरम कमरेमें रहनेकी इच्छा। बहुत अधिक मानसिक कष्ट होता है। रातमें, खासकर आधी रातके बाद दर्द बढ़ जाता है।

पेशी वात।

सर्दी लगाने और पेशियोंको बहुत अधिक हिलानेके कारण यह रोग होता है। अधिकतर इसका पहला आक्र-मण एकाएक और रातके समय हुआ करता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३—तेज बोखार, बेचैनी, प्यास चिल्क मारनेकी तरह दर्द, रोगवाली जगहका लाल हो जाना, प्रदाह हो जाना और सूजन भी पैदा हो जाया करती है।

आर्निका ३०—यदि चोटके कारणसे हुआ हो तो यह एक बहुत बढ़िया दवा है। रोगवाली जगहपर तेज ... होता है।

बेलेडोना ३, ३०—तेज बोखार और मस्तिष्कके

विकारके लक्षण । माथेमें दर्दके साथ आँखोंका लाल हो जाना ।

ब्रायोनिया ३०, २००—हिलाने डुलानेपर दर्दका बढ़ना और आराम करनेपर घटना । कब्जियत और तेज प्यास रहती है ।

सिमिसिफ्युगा ३०—इस रोगकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है । पेशीमें स्पर्शका सहन न होना ; तलपेटकी पेशीका वात हो जानेपर इसका प्रयोग होता है ।

डलकामारा ६—तर ऋतुमें वातका होना ।

हासटक्स ६, ३०—लगातार हिलाने-डोलानेपर रोगका घटना और विश्राम करनेपर बढ़ना ।

लम्बेगो या कटिवात ।

कटिवात, कमरकी माँसपेशी और कमरके पिछले भाग की फेसिया (fasoia) पर इसका हमला होता है । यह हमला बहुत तेजीसे और एकाएक होता है ।

चिकित्सा ।

आर्निका ३०, २००—बाहरी चोट या भारी ची: उठाने-वगैरहके कारणोंसे बीमारी होनेपर इसका सफलत पूर्वक व्यवहार होता है ।

गठियाकी बीमारी पैरमें होती हैं तथा पैरके अंगूठेकी सन्धियोंमें होती है। सन्धिमें युरेट आफ सोडा इकट्ठा होता है और खूनमें यूरिक एसिड मौजूद पाया जाता है। यह बीमारी अकसर अधिक उमरवालोंको ही होती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ६, ३०—तेज बोखारके साथ आक्रमण की पहली अवस्थामें व्यवहृत हो सकता है। इसमें बेचैनी, प्यास और मानसिक उद्वेग वर्त्तमान रहता है।

आर्निका ३०—सन्धियोंमें कुचलनेकी तरह दर्द, लाली और छूना सहन न होना।

नक्स-वोमिका ६, ३०—शराबियोंकी बीमारी, खासकर यदि अजीर्ण रोग मौजूद रहे तो बहुत फायदा करता है।

पल्सेटिला ६, ३०—दर्द एक सन्धिसे दूसरीमें आता-जाता है। खुली हवामें घटता है।

आर्सेनिक ३०, २००—रोगी कमजोर और सुस्त रहता है, रोगवाली सन्धिको ढके रहनेपर आराम होता है। जलन करनेवाला दर्द, बेचैनी और प्यास।

हासटक्स ६, ३०—काटनेकी तरह दर्द,

है, वह वाह्यिक या वाहरी औषध है। साधारणतः इसमें भीतरी औषधका ही व्यवहार होता है और उसीसे बीमारी अच्छी होती है, पर यदि शरीरको कोई जगह कट जाये, मोच आ जाये, चोट लग जाये तो लगानेकी वाहरी दवाओं की भी जरूरत पड़ती है।

औषधकी उत्पत्ति।

अधिकांश दवाएँ गाछ-पालोंसे ही तैयार होती हैं। जैसे बेलेड़ोना, ब्रायोनिया, नक्स-वोमिका, पल्सेटिला, काल-मेघ, चिरायता इत्यादि। कितनी ही दवाएँ धातुसे मिलती हैं, जैसे आरम मेटालिकम (सोना), अर्जेण्टम मेटालिकम (चाँदी), क्युप्रम मेटालिकम (ताँबा), सलफर (गन्धक) इत्यादि। प्राणियोंसे भी कितनी ही दवाओंकी उत्पत्ति होती है, जैसे सर्पविष कोबरा, लैकेसिस, क्रोटेलस इत्यादि और भी एक तरहकी दवा होती है, जिसे नोसोड्स (Noso-des) कहते हैं। ये रोग-बीज या रोगी जान्तव-पदार्थसे तैयार होती हैं—"सोरिनम" या अकौताके बीजसे प्रस्तुत ; "वेरियोलिनम" चेचकके टीका-बीजसे प्रस्तुत ; "सिफिलि-नम" उपदंश-विषके बीजसे प्रस्तुत।

लक्षण।

स्वस्थ शरीर बिगड़ जानेके कारण अथवा औषध सेवन

गठियाकी बीमारी पैरमें होती हैं तथा पैरके अंगूठेकी सन्धियोंमें होती है। सन्धिमें युरेट आफ सोडा इकट्ठा होता है और खूनमें यूरिक एसिड मौजूद पाया जाता है। यह बीमारी अकसर अधिक उमरवालोंको ही होती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ६, ३०--तेज बोखारके साथ आक्रमण की पहली अवस्थामें व्यवहृत हो सकता है। इसमें वेचैनी, प्यास और मानसिक उद्वेग वर्त्तमान रहता है।

आर्निका ३०—सन्धियोंमें कुचलनेकी तरह दर्द, लाली और छूना सहन न होना।

नक्स-वोमिका ६, ३०—शराबियोंकी बीमारी, खासकर यदि अजीर्ण रोग मौजूद रहे तो बहुत फायदा करता है।

पल्सेटिला ६, ३०—दर्द एक सन्धिसे दूसरीमें आता-जाता है। खुली हवामें घटता है।

आर्सेनिक ३०, २००—रोगी कमजोर और सुस्त रहता है, रोगवाली सन्धिको ढके रहनेपर आराम मालूम होता है। जलन करनेवाला दर्द, वेचैनी और प्यास।

हासटक्स ६, ३०—काटनेकी तरह दर्द, रातमें

बालास्थि-विकृति या रिकेट रोग।

जब बच्चोंकी हड्डीमें फास्फेट आफ लाइम प्रभृति चीजोंकी कमी हो जाती हैं, तब उनकी हड्डियाँ कोमल और लचीली हो जाती हैं। यह बीमारी अक्सर कण्ठमालावाले बच्चोंको ही हुआ करती है। यह रोग ६ महीनेके बच्चेसे लेकर दाँत न निकलनेतककी उमरमें होता है। रोगीके ब्रह्मतालु नहीं जुड़ते, इसीलिये माथा बड़ा दिखाई देता है, पेट बड़ा निकल आता है और हाथ-पैर दुबले पड़ जाते हैं।

चिकित्सा।

कैल्केरिया कार्ब ३०, २००—इसकी एक प्रधान दवा है। बच्चेका माथा और पेट बड़ा, रातमें खूब पसीना होता है। पाखानेमें खट्टी गन्ध आती है।

एसिड फास्फोरिक ३०—सारे शरीरमें दर्द, बहुत दिनोंका पुराना अतिसार, पर पतले दस्त आते रहने-पर भी बच्चा कमजोर नहीं होता है।

साइलिसिया ३०—यह इसकी एक दूसरी बढ़िया दवा है। माथा और तलवेमें पसीना, शरीरमें स्पर्श सहन न होना, इस दवाका विशेष लक्षण है। यदि कण्ठमाला दोष, सन्धि और अस्थियोंमें मालूम हो तो इस दवासे बहुत फायदा होता है।

और विश्रामसे बढ़ना। रोगी आराम मिलनेकी आशासे लगातार रोगी अंगको हिलाया करता है।

ब्रायोनिया ६, ३०—हिलानेपर बढ़ना और विश्राम से घटना। सुई गड़ने या नोच फेंकनेकी तरह दर्द।

स्टैफिसेग्रिया ३०—हाथ-पैरोंकी छोटी छोटी सन्धियोंमें सूजन और दर्द होता है।

कोलचिकम ३—चलने-फिरनेवाला दर्द, एक सन्धिसे दूसरी सन्धिमें चला जाता है। सूजन लाल या हलकी लाली लिये रहती है, अंगुलियोंके साथ कलाई या पँड़ीमें दर्द। इतना दर्द कि किसीके पास आनेपर डर मालूम होता है।

कैल्केरिया कार्ब ३०, २००—प्रत्येक ऋतु-परिवर्तनके समय उपसर्गोंका लौट आना।

एण्टिम-क्रूड ६, ३०—पाकस्थलीकी गड़बड़ी रहती है, खासकर मिचली और जीभपर सफेद मोटी तह जमी रहती है।

बालास्थि-विकृति या रिकेट रोग।

जब बच्चोंकी हड्डीमें फास्फेट आफ लाइम प्रभृति चीजोंकी कमी हो जाती हैं, तब उनकी हड्डियाँ कोमल और लचीली हो जाती हैं। यह बीमारी अकसर कण्ठमालावाले बच्चोंको ही हुआ करती है। यह रोग ६ महीनेके बच्चेसे लेकर दाँत न निकलनेतककी उमरमें होता है। रोगीके ब्रह्मतालु नहीं जुड़ते, इसीलिये माथा बड़ा दिखाई देता है, पेट बड़ा निकल आता है और हाथ-पैर दुबले पड़ जाते हैं।

चिकित्सा।

कैल्केरिया कार्ब ३०, २००—इसकी एक प्रधान दवा है। बच्चेका माथा और पेट बड़ा, रातमें खूब पसीना होता है। पाखानेमें खट्टी गन्ध आती है।

एसिड फास्फोरिक ३०—सारे शरीरमें दर्द, बहुत दिनोंका पुराना अतिसार, पर पतले दस्त आते रहने-पर भी बच्चा कमजोर नहीं होता है।

साइलिसिया ३०—यह इसकी एक दूसरी बढ़िया दवा है। माथा और तलवेमें पसीना, शरीरमें स्पर्श सहन न होना, इस दवाका विशेष लक्षण है। यदि कण्ठमाला दोष, सन्धि और अस्थियोंमें मालूम हो तो इस दवासे बहुत फायदा होता है।

इनके अलावा कैल्केरिया-फास, एसाफिटिडा, हिपर प्रभृति दवाएँ भी लक्षणके अनुसार प्रयोग की जाती हैं। पुष्ट करनेवाला भोजन देना चाहिये।

एनिमिया या रक्तस्वल्पता।

खूनका घट जाना या नष्ट हो जाना अथवा खूनके लाल कणके घट जानेको रक्तस्वल्पता या एनिमिया कहते हैं। पुष्ट करनेवाले भोजनकी कमी, निर्मल हवा और सूर्यकी रोशनी-की कमी, बहुत दिनोंतक कोई खून जानेवाला रोग भोगना, बहुत दिनोंतक मैलेरिया भोगना इत्यादि कारणोंसे खूनके स्वाभाविक उपादान घटकर यह बीमारी हो जाती है।

चिकित्सा।

चायना ३x, ६, ३०—शरीरका रक्त, वीर्य, रस वगैरह बहुत ज्यादा नष्ट हो जानेके बाद रक्तहीनताका पैदा होना। भयानक कमजोरी, किसी काममें मन न लगना या करनेकी इच्छाका न होना, कलेजा धड़कना। चेहरा लाल और उसके साथ ही हाथ-पैर ठण्डे। आँखसे धुँधला दिखाई देना, कानमें आवाजका सहन न होना। कोई भी कष्ट सहन नहीं होता है।

फेरम-मेट ६, ३०, २००—शरीर एकदम मानो रक्त-रहित, चेहरा रुईकी तरह सफेद, शरीरकी किसी भी श्लैष्मिक झिल्लीका सफेद हो जाना। कोई चीज खाते ही वमन हो जाता है। शराब या मांस खानेसे अनिच्छा रहती है।

हेलोनियस ६, ३०—शरीरसे बहुत ज्यादा परिमाणमें स्राव आदि हो जानेके बाद भयानक कमजोरी, खासकर जरायुसे स्राव होकर कमजोरी आ जाना, किसी भी बाहरी काममें मन उलझाये रहनेपर अच्छा रहता है।

अर्जेण्टम-नाई ६, ३०—चीनी या मिसरी खानेकी बहुत अधिक इच्छा। फेफड़ा या हृत्पिण्डकी किसी बीमारीके न रहनेपर भी साँस छोटी छोटी लेता है। चेहरा उतरा हुआ सफेद, बदहजमी, छातीमें जलन प्रभृति रोग जो हमेशा भोगते रहते हैं, उनके लिये यह लाभदायक है।

कैलि-कार्ब ३०, २००—हमेशा सिहरावन मालूम होते रहना। बहुत स्त्री-सम्भोग करनेका यह नतीजा होता है कि आँखसे धुँधला दिखाई देता है। ऐसा मालूम होता है, कि शरीरमें खून बिलकुल ही नहीं है।

नेट्रम-म्यूर ३०, २००—बहुत दिनोंतक मैलेरिया बोखार भोगनेके बाद या किसी दूसरे कारणसे शरीरसे

बहुत ज्यादा रस-रक्त निकल जाना और इसी वजहसे रक्त-हीनताका पैदा हो जाना। भयानक दुबलापन, शरीरकी त्वचा सूखी और रुखड़ी, शरीरका रंग पीला, भयानक दुःखित चित्त; कलेजा धड़कना। बहुत अधिक नमक खानेकी इच्छा होती है।

डायबिटिज या बहुमूत्र।

यह धातुदोषकी वजहसे पैदा हुआ एक तरहका रोग है। इसमें पेशाब बहुत अधिक होता है और उसमें चीनी भी मिली रहती है। हमलोग जो कुछ मीठी चीजें खाते हैं, वह शर्करामें परिणत होकर शरीरका ताप बढ़ानेके काममें लगती है, पर इस बीमारीमें वह चीनी अच्छी तरह न पच कर, बिना किसी परिवर्त्तनके, उसी हालतमें, पेशाबके साथ निकल जाती है।

चिकित्सा।

इयुरेनियम ३x, ३०—अगर मन्दाग्निकी वजहसे बीमारी हो तो यह ज्यादा लाभ करता है। हमेशा पेशाब लगा रहना, बार बार पेशाब करना, पेशाबमें मछलीकी गन्ध रहती है।

साइजिजियम ⅹ, ३०—रोगकी किसी भी अवस्थामें इसका अत्यन्त सफलतापूर्वक व्यवहार हो सकता है। इससे पेशावसे चीनीका परिमाण बहुत घट जाता है। प्यास, कमजोरी, दुबलापन, बार बार ज्यादा मात्रामें पेशाब, पेशावका आक्षेपिक गुरुत्व बढ़ना, बहुमूत्रके कारण शरीरमें जखम।

नेट्रम-सल्फ ६x और **नेट्रम फास** ३x—(बायोकेमिक निम्न क्रमका विचूर्ण) इसके सेवनसे भी बहुत फायदा होता देखा जाता है।

अर्जेण्टम मेटालिकम ६, ३०—बहुत ज्यादा मीठा पेशाब होना। रोगी बहुत कमजोर हो जाता है, दोनों पैरोंमें शोथ हो जाता है।

आर्सेनिक ३०—शोथके साथ बहुमूत्र। बहुत प्यास।

कैन्थरिस ६—इसमें पेशाब करनेके समय जलन रहती है और बूँद बूँद पेशाब होता है।

एसिड फास ३x, ३०—चीनी मिला पेशाब। कमजोरीके बिना ही बहुमूत्र। हमेशा अधिक मात्रामें बिना किसी रंगका पेशाब होना। तृप्त करनेवाली रसदार चीजें खानेकी इच्छा। धातुदौर्बल्य।

करनेके कारण जो अस्वाभाविक अवस्था उत्पन्न हो जाती है, उसको लक्षण कहते हैं।

सबजेक्टिव और आबजेक्टिव लक्षण।

अपने शरीरमें जिन सब लक्षणोंको रोगी अनुभव करता है और जिन्हें रोगी यदि न बताये तो चिकित्सक जान नहीं सकता, उन्हें आश्रयनिष्ठ या आन्तरिक (subjective) लक्षण कहते हैं। जैसे, बदनमें दर्द, हाथ-पैरमें झुनझुनी, माथे-दर्द इत्यादि। परन्तु जो लक्षण रोगीको देखते ही चिकित्सक समझ सकते हैं, वे विषय-निष्ठ या बाहरी (objective) लक्षण हैं—जैसे, प्रदाह होकर किसी स्थान का लाल हो जाना या फूल उठना इत्यादि।

बहुत ज्यादा रस-रक्त निकल जाना और इसी वजहसे रक्त-हीनताका पैदा हो जाना। भयानक दुबलापन, शरीरकी त्वचा सूखी और रुखड़ी, शरीरका रंग पीला, भयानक दुःखित चित्त। कलेजा धड़कना। बहुत अधिक नमक खानेकी इच्छा होती है।

डायबिटिज या बहुमूत्र।

यह धातुदोषकी वजहसे पैदा हुआ एक तरहका रोग है। इसमें पेशाब बहुत अधिक होता है और उसमें चीनी भी मिली रहती है। हमलोग जो कुछ मीठी चीजें खाते हैं, वह शर्करामें परिणत होकर शरीरका ताप बढ़ानेके काममें लगती है, पर इस बीमारीमें वह चीनी अच्छी तरह न पच कर, बिना किसी परिवर्त्तनके, उसी हालतमें, पेशाबके साथ निकल जाती है।

चिकित्सा।

इयुरेनियम ३x, ३०—अगर मन्दाग्निकी वजहसे बीमारी हो तो यह ज्यादा लाभ करता है। हमेशा पेशाब लगा रहना, बार बार पेशाब करना, पेशाबमें मछलीकी गन्ध रहती है।

साइजिजियम ∅, ३०—रोगकी किसी भी अवस्थामें इसका अत्यन्त सफलतापूर्वक व्यवहार हो सकता है। इससे पेशावसे चीनीका परिमाण बहुत घट जाता है। प्यास, कमजोरी, दुबलापन, बार बार ज्यादा मात्रामें पेशाव, पेशावका आपेक्षिक गुरुत्व बढ़ना, बहुमूत्रके कारण शरीरमें जखम।

नेट्रम-सल्फ ६x और **नेट्रम फास** ३x—(बायोकेमिक निम्न क्रमका विचूर्ण) इसके सेवनसे भी बहुत फायदा होता देखा जाता है।

अर्जेण्टम मेटालिकम ६, ३०—बहुत ज्यादा मीठा पेशाब होना। रोगी बहुत कमजोर हो जाता है, दोनों पैरोंमें शोथ हो जाता है।

आर्सेनिक ३०—शोथके साथ बहुमूत्र। बहुत प्यास।

कैन्थरिस ६—इसमें पेशाव करनेके समय जलन रहती है और बूँद बूँद पेशाव होता है।

एसिड फास ३x, ३०—चीनी मिला पेशाव। कमजोरीके बिना ही बहुमूत्र। हमेशा अधिक मात्रामें बिना किसी रंगका पेशाव होना। तृप्त करनेवाली रसदार चीजें खानेकी इच्छा। धातुदौर्बल्य।

कियुरेरि ६x, ३०—जल्दी जल्दी साफ पेशाब होनेके साथ गुर्देमें काटने और ऐंठनेकी तरह दर्द। रातमें प्यास बढ़ जाती है।

हेलोनियस ३x, ३०—कमरमें दर्द, गुर्देमें जलन करनेवाला दर्द, दोनों पैरोंमें सुन्न हो जानेकी तरह मालूम होना, चलना-फिरना आरम्भ करनेपर यह अच्छा हो जाता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब हो जाता है।

टेरिबिन्थ ३, ३०—मसानेसे उरुतक जलन करनेवाला दर्द, रातमें बार बार ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता है। पेशाबसे सड़ी गन्ध निकलती है।

श्वेतसार मिला भोजन, मछली, खटाई और सब तरहकी मीठी चीजें इस बीमारीमें नुकसान करती हैं। अतएव, इन्हें बहुत सावधानतासे त्याग देना चाहिये। पुराने चावलका भात अवस्थाके अनुसार, सो भी सिर्फ एक बार खाया जा सकता है। जवके भूंसीकी रोटी, ताजी साग सब्जियाँ, [illegible]ड़ा निकाला दूध, सहजमें ही सीझ जानेवाले कोमल व[illegible] [illegible] मांस प्रभृति इस बीमारीके पथ्य हैं।

शोथ।

समूचा शरीर या खास खास जोड़ोंकी जलभरी सूजनको शोथ कहते हैं।

शोथ कोई अलग बीमारी नहीं है, बल्कि यह किसी दूसरी बीमारीका परिणाम या लक्षण होता है। होता यह है कि रक्तका पानीवाला हिस्सा, खून बहनेवाली, रक्तवाही शिराओंके भीतरसे जाकर त्वचाके नीचे बनावटवाले उपादान और माथा, छाती, उदर इत्यादि कितनी ही जगहोंमें जमकर सूजन पैदा कर देता है, शोथ रोगवाली जगहको अंगुलीसे दबानेपर गड़हा पड़ जाता है और अंगुली हटा लेने बाद धीरे धीरे वह जगह भरती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ६—नयी अवस्थामें बोखार रहनेपर इसका प्रयोग हो सकता है। बेचैनी और तेज प्यास मौजूद रहती है।

एसेटिक एसिड ३, ३०—बहुत तेज प्यास और कमजोरी। त्वचा सूखी और गर्म रहती है।

३०—प्यासका न रहना, त्वचाकी आकृति ... भांति दिखाई देती है। पेशावका

कियुरेरि ६x, ३०—जल्दी जल्दी साफ पेशाब होनेके साथ गुर्देमें काटने और ऐंठनेकी तरह दर्द। रातमें प्यास बढ़ जाती है।

हेलोनियस २x, ३०—कमरमें दर्द, गुर्देमें जलन करनेवाला दर्द, दोनों पैरोंमें सुन्न हो जानेकी तरह मालूम होना, चलना-फिरना आरम्भ करनेपर यह अच्छा हो जाता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब हो जाता है।

टेरिबिन्थ ३, ३०—कमानेसे उरुतक जलन करने-
ा दर्द, रातमें बार बार ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता
। पेशाबसे मड़ी गन्ध निकलती है।

मकसार मिला भोजन, मछली, खटाई और सब तरहकी
ट्टी चीजें इस बीमारीमें नुकसान करती हैं। अतएव, इन्हें
हुत सावधानतासे त्याग देना चाहिये। पुराने चावलका
ात अवस्थाके अनुसार, सो भी सिर्फ एक बार खाया जा
कता है। जवके भूसीकी रोटी, ताजी साग सब्जियाँ,
ा निकाला दूध, सहजमें ही सीझ जानेवाले कोमल बकरे-
ा मांस प्रभृति इस बीमारीके पथ्य हैं।

शोथ।

समूचा शरीर या खास खास जोड़ोंकी जलभरी सूजनको
थ कहते हैं।

शोथ कोई अलग बीमारी नहीं है, बल्कि यह किसी
दूसरी बीमारीका परिणाम या लक्षण होता है। होता यह
है कि रक्तका पानीवाला हिस्सा, खून बहनेवाली, रक्तवाही
शिराओंके भीतरसे जाकर त्वचाके नीचे बनावटवाले उपादान
और माथा, छाती, उदर इत्यादि कितनी ही जगहोंमें जमकर
सूजन पैदा कर देता है, शोथ रोगवाली जगहको अंगुलीसे
दबानेपर गड़हा पड़ जाता है और अंगुली हटा लेने बाद धीरे
धीरे वह जगह भरती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ६—नयी अवस्थामें बोखार रहनेपर
सका प्रयोग हो सकता है। बेचैनी और तेज प्यास मौजूद
हती है।

एसेटिक एसिड ३, ३०—बहुत तेज प्यास और
मजोरी। त्वचा सूखी और गर्म रहती है।

एपिस ६, ३०—प्यासका न रहना, त्वचाकी आकृति
मकी तरह सफेदकी भाँति दिखाई देती है।

परिमाण बहुत घट जाता है, उसका रंग भी मैला पड़ जाता है। समूची देहमें डंक मारनेकी तरह दर्द होता है।

एपोसाइनम कैनाबाइनम φ—पेटमें कुरच जानेकी तरह दर्द, तेज प्यास पर पानी पीते ही कै हो जाती है।

आर्सेनिक ३x, ३०—मसाना, यकृत अथवा हृत्पिण्डका दोष रहनेकी वजहसे शोथ रोगमें यह उपयोगी है। रोगी बहुत दुर्बल। रातके समय बेचैनी और मानसिक उद्वेग, बार बार थोड़ा थोड़ा पानी पीता है। डाक्टर बेयर कहते हैं, कि यह सब तरहके शोथमें फायदा करता है।

चायना ६—कमजोर करनेवाली बीमारीके बाद वाले शोथमें यह फायदा करता है।

डिजिटेलिस ६—हृत्पिण्डकी बी[illegible] पैदा हुए शोथमें यह लाभदायक है। त्व[illegible] आभा लिये, पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा और असन रहता है।

हेलिबोरस ३०—प्यास न रहन[illegible] के चूरकी तरह तली जमती है। यही [illegible]

आयोडिन ३०—मांस-पे[illegible] रोगी बहुत दुबला और शीर्ण हो जाता [illegible] रहता है।

पल्सेटिला ६—औरतोंके मासिक रजःस्रावकी गड़बड़ीकी वजहसे शोथमें यह उपयोगी है। प्यास नहीं रहती, रोगिनी बहुत ही कोमल स्वभावकी रहती है।

सलफर ३०—किसी रुके हुए चर्मरोगके बाद होनेवाले शोथ-रोगमें यह फायदा करता है।

शोथकी नयी बीमारीमें अगर बोखार रहे, तो बोखारके पथ्यकी तरह ही हलकी चीजें खानेको देनी चाहियें। पुरानी बीमारीमें अगर बोखार न रहे तो एक शाम पुराने चावल का भात दिया जा सकता है। मानकच्चूकी तरकारी शोथवाले रोगियोंके लिये फायदेकी चीज है। नमक खाना बन्द कर देना चाहिये।

हृत्शूल।

हृत्पिण्डके तेज आक्षेपिक दर्दको हृत्शूल कहते हैं। साधारणतः उमर बढ़ जानेपर और पुरुषोंको ही यह बीमारी होती है। हृत्पिण्डकी बीमारी या कारोनरी धमनी रुकनेकी वजहसे हृत्पिण्डके पेशी-तन्तुका क्षीण हो जाना प्रभृति हृत्शूल या कलेजेके दर्दके कारण माने जाते हैं। इस बीमारी में एकाएक हृत्पिण्डमें दर्द पैदा हो जाता है और वह छाती

परिमाण बहुत घट जाता है, उसका रंग भी मैला पड़ जाता है। समूची देहमें डंक मारनेकी तरह दर्द होता है।

एपोसाइनम कैनाबाइनम φ—पेटमें कुचल जानेकी तरह दर्द, तेज प्यास पर पानी पीते ही कै हो जाती है।

आर्सेनिक ३x, ३०—मसाना, यकृत अथवा हृत्पिण्डका दोष रहनेकी वजहसे शोथ रोगमें यह उपयोगी है। रोगी बहुत दुर्बल। रातके समय बेचैनी और मानसिक उद्वेग, बार बार थोड़ा थोड़ा पानी पीता है। डाक्टर बेयर कहते हैं, कि यह सब तरहके शोथमें फायदा करता है।

चायना ६—कमजोर करनेवाली बीमारीके बाद वाले शोथमें यह फायदा करता है।

डिजिटेलिस ६—हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे पैदा हुए शोथमें यह लाभदायक है। त्वचाका रंग नीली आभा लिये, पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा। नाड़ी कोमल और अनियमित रहती है।

हेलिबोरस ३०—प्यास न रहना, पेशाबमें काफीके के चूरकी तरह तली जमती है। यही इसकी विशेषता है।

आयोडिन ३०—मांस-पेशियोंके क्षयकी वजहसे रोगी बहुत दुबला और शीर्ण हो जाता है, पर रात्तसी भूख बनी रहती है।

पल्सेटिला ६—औरतोंके मासिक रजःस्रावकी गड़बड़ीकी वजहसे शोथमें यह उपयोगी है। प्यास नहीं रहती, रोगिनी बहुत ही कोमल स्वभावकी रहती है।

सलफर ३०—किसी रुके हुए चर्मरोगके बाद होनेवाले शोथ-रोगमें यह फायदा करता है।

शोथकी नयी बीमारीमें अगर बोखार रहे, तो बोखारके पथ्यकी तरह ही हलकी चीजें खानेको देनी चाहियें। पुरानी बीमारीमें अगर बोखार न रहे तो एक शाम पुराने चावल का भात दिया जा सकता है। मानकच्चूकी तरकारी शोथवाले रोगियोंके लिये फायदेकी चीज है। नमक खाना बन्द कर देना चाहिये।

हृत्शूल ।

हृत्पिण्डके तेज आक्षेपिक दर्दको हृत्शूल कहते हैं। साधारणतः उमर बढ़ जानेपर और पुरुषोंको ही यह बीमारी होती है। हृत्पिण्डकी बीमारी या कारोनरी धमनी रुकनेकी वजहसे हृत्पिण्डके पेशी-तन्तुका क्षीण हो जाना प्रभृति हृत्शूल या कलेजेके दर्दके कारण माने जाते हैं। इस बीमारी में एकाएक हृत्पिण्डमें दर्द पैदा हो जाता है और वह छाती

औषधका आकार ।

होमियोपैथिक दवा दो आकारकी तैयार होती है। जैसे,—अरिष्ट (अर्क) और विचूर्ण। गाछ-पातोंका रस निकालकर सुरासारके साथ साधारणतः अरिष्ट तैयार किया जाता है। लोहा, सोना, चाँदी प्रभृति कड़े धातु-पदार्थ दूधकी चीनीके साथ खलमें खूब घोटे जाते हैं, इनको ही विचूर्ण कहते हैं, ६x या ३ शक्तितक विचूर्ण होता है, इसके बाद सुरासारमें अरिष्ट या अर्क बनता है। गाछ-पौधोंसे निकाले हुए रसको मूल अरिष्ट या मदर टिंचर कहते हैं, उसका चिन्ह है φ।

मूल औषधको दूधकी चीनीके साथ खरलमें घोटने और फिर सुरासार मिलाकर, नियमके अनुसार हिलाकर क्रम तैयार किया जाता है। क्रम दो तरहसे बनता है। एक भाग मूल औषध और ९ भाग सुरासार (अलकोहल) या दूधकी चीनी मिलाकर दशमिक क्रम और १ भाग मूल औषधमें ९९ भाग सुरासार या दूधकी चीनी मिलाकर शततमिक क्रम तैयार करना पड़ता है। इसकी पूरी पूरी तरकीब फार्माकोपिया नामक पुस्तकमें मिलती है।

औषध-प्रयोग ।

एक समय एक ही दवा प्रयोग करनेका नियम है। एक

के सामनेवाले भागमें, बाहु, कन्धा प्रभृति स्थानोंतक फैल जाता है। इसी वजहसे बहुत ज्यादा उद्वेग, बेहोश हो जानेकी आशंका, मृत्युका भय, साँसमें तकलीफ वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३—हृत्पिण्डमें दर्द, यह दर्द सभी ओर फैलता है, मानसिक उद्वेग और मृत्युभय, रोगी समझता है कि वह मर रहा है। यही एकोनाइटकी विशेषता है।

सिमिसिफ्यूगा ३—दर्द समूची छातीमें फैल है, इसके साथ ही मस्तिष्कमें रक्तसंचय और बेहोशी।

आर्सेनिक ३, ३०—अच्छा हो जानेपर दुबारा रोकनेके लिये इसका प्रयोग होता है, पर दौरा होनेके समय बेचैनी, उद्वेग, मृत्युभय, रोगी दवा नहीं खाना चाहता, क्योंकि उसकी यह धारणा रहती है कि वह मर रहा है।

बेलेडोना ३- नयी बीमारीमें इससे कुछ समयके फायदा हो सकता है। इसीलिये, इसका प्रयोग होता है।

क्युप्रम-मेट ३०—बीमारीका दौरा होनेके समय चेहरा नीला हो जाता है और समूचा शरीर ठण्डा हो जाता है।

डिजिटेलिस ३x, ३०—ज्यादा उमरके रोगीकी पुरानी बीमारीमें यह फायदा करता है, रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि हिलने-डोलनेसे हृत्पिण्डकी क्रिया बन्द हो जायगी। नाड़ी कोमल, अनियमित और रुक रुककर चलने-वाली। यही डिजिटेलिसकी विशेषता है।

हाइड्रोसियानिक एसिड ३—नयी बीमारीमें ज्यादा फायदा करता है।

लैकेसिस ३०—नींदके बाद रोगका बढ़ना। कलेजा धड़कना, रोगी कमजोर और दुबला हो जाता है। कमरमें कपड़ा रहना अच्छा नहीं मालम होता।

स्पाइजिलिया ६—डा० जसेटने इसे एक प्रधान दवा माना है। हृदिपण्के यंत्रमें विकारकी वजहसे बीमारी, हृत्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह तेज दर्द, जरा भी हिलने डोलनेसे बढ़ता है। इतनी जोरकी कलेजेमें धड़कन होती है कि ऐसा मालूम होता है, कि वक्ष-प्राचीरको ऊपर उठा रहा है।

विरेट्रम एल्बम १२—हाथ-पैरोंमें ऐंठन, साधा-

रण सुस्ती, वक्षस्थलमें साँस रोक देनेवाली सिकुड़न। इसी कारणसे शरीरमें पसीना होने लगना।

मूर्च्छा।

जब स्नायुओंकी शक्ति कमजोर हो जाती है, उस स थोड़ी या पूरी पूरी बेहोशी आ जानेको मूर्च्छा कहते ससमें इच्छा और पेशीकी शक्ति नष्ट हो जाती है। शरी रस रक्त, धातु आदि तरल पदार्थोंके क्षय हो जानेकी व ने अथवा शरीरकी प्रकृतिगत कमजोरीके कारण अथ कायक डर जाना, शोक इत्यादि मनपर जोरका धक्का लग के कारण बेहोशी आ जाती है।

चिकित्सा।

आवेशके समय 'मस्कस' ϕ या 'कैम्फर' ϕ को सुँघान हिये। इसकी वजहसे बेहोशी आ जाये तो 'एकोनाइ और उसके बाद 'ओपियम' ३० लाभ करता है।

धातुगत कारणकी वजहसे बेहोशी आ जानेपर 'आयो न' ६ और शारीरिक तरल पदार्थके क्षयके कारण मूर्च्छा 'चायना' ३० लाभदायक है। यकृत कमजोरीमें 'आर्स न' ३०। हिस्टीरिया रोगवाली स्त्रियोंके लिये 'इग्नेशिया'

३०। 'कैमोमिला' १२ और 'काकुलस' ६ भी कभी कभी व्यवहृत होते हैं। वायुप्रधान रोगीके लिये 'नक्स-मस्केटा' ३० ज्यादा फायदेमन्द है। ठण्डा शरीर और लसदार पसीनाके साथ मूर्च्छा आती हो तो 'वेरेट्रम एल्बम' १२ का प्रयोग किया जाता है।

हृत्कम्प या हृत्स्पन्दन ।

हृत्पिण्डके धड़कनेका वेग और तेजी अगर बहुत बढ़ जाये तो उसे हृत्कम्प या हृत्स्पन्दन कहते हैं। बोलचालकी भाषामें यह कलेजा धड़कना कहलाता है। इसमें हृत्पिण्ड-की क्रिया नियमित भावसे नहीं होती है। पर बहुत अधिक आनन्द, शोक या भयकी वजहसे उत्पन्न मनोभाव, ज्यादा परिश्रम, मन्दाग्नि रोग, स्त्रियोंकी मासिक ऋतुस्रावकी बीमारी, हिस्टीरिया और बहुत ज्यादा चाय या शराब पीना या तम्बाकू खाना प्रभृति इसके उत्तेजक कारण (exciting cause) माने जाते हैं।

चिकित्सा ।

मस्कस ६—हृत्पिण्डके स्नायु या पेशीकी कम-जोरीकी वजहसे नया आक्रमण होनेपर फायदा करता है।

एसिड फास ६—बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवनके कारण कलेजा धड़कना ।

नक्स-वोमिका ३०—बहुत ज्यादा काफी सेवनकी वजहसे हृत्स्पन्दन ।

नक्स-मस्केटा ६—गल्म-वायु रोगवाली स्त्रियोंके लिये ज्यादा फायदेमन्द है ।

आयोडिन ३०—समूचे स्नायुमण्डलकी सुस्तीमें बहु ज्यादा फायदा करता है ।

एकोनाइट ६ और **कैक्टस** ६—रक्तकी अधिकताके कारण कलेजा कांपना ।

डिजिटेलिस ६—नाड़ी कोमल, अनियमित और रह रहकर चलनेवाली । इसके बाद धीरे धीरे मूर्च्छा और कलेजेका कांपना पैदा हो जाता है ।

शोककी वजहसे पैदा हुए हृत्कम्पमें 'इग्नेशिया' ३० और आनन्दकी वजहसे पैदा हुई बीमारीमें 'काफिया' ३० खासकर यदि इसके साथ ही नींद न आती हो । स्त्रियोंके और बच्चोंके क्रोध या चिढ़की वजहसे पैदा हुई बीमारीमें 'कैमोमिला' १२ विशेष लाभदायक है ।

मुंहमें घाव ।

बोलचालकी भाषामें इसे गालका घाव कहते हैं। यह बच्चोंमें अधिक परिमाणमें होता देखा जाता है। थोड़ा थोड़ा बोखार, अजीर्ण, चिड़चिड़ा मिजाज प्रभृति इसके प्राथमिक लक्षण हैं।

चिकित्सा ।

बोरैक्स ३x, ३०—यह इस बीमारीकी प्रधान दवा है और सिर्फ इसी दवाके प्रयोगसे यह बीमारी अकसर आराम हो जाया करती है। सोहागाका लावा चूरकर शहदमें मिलाकर जखम पर लगानेकी प्रथा अब भी देखी जाती है। इससे भी खूब फायदा होता दिखाई देता है।

मर्कुरियस ६—मुँहमें बदबू, मसुढ़ेसे खून बहना और बहुत लार जानेके लक्षणमें इसका व्यवहार होता है।

इथूजा ६—बच्चा दूध पीकर सो जाता है। ऐसे लक्षणवाले मुँहके छालोंमें इसका व्यवहार होता है।

एरम ट्रिफिलियम ६—बहुत जलन करनेवाला मुँहका घाव, रोगी ओंठ नोचता नोचता मुँहसे खून निकाल डालता है।

हिपर सलफर ३०—उपदंश और पारा बहुत ज्यादा सेवनकी वजहसे गलेमें घाव।

स्टैफिसेग्रिया ६—खून बहनेवाले गलेके घावमें फायदा करता है।

सलफर ३०—यदि ठीक ठीक चुनी हुई दवासे फायदा न हो अथवा बीमारी आराम होकर बढ़ जाये, तो इसके प्रयोगसे बहुत लाभ होता है।

दन्तशूल या दाँतमें दर्द।

दाँतके दर्दका असली कारण है, दाँतका क्षय हो जाना। परन्तु अजीर्ण, तन्दुरुस्तीका बिगड़ जाना, गर्भावस्था, या गर्मी-सर्दीका एकाएक मौसम बदलना, भी उसके उत्तेजक कारण हुआ करते हैं। यदि दाँतका क्षय होकर दन्तगह्वर खुल जाता है, तो दाँतके भीतरके स्नायुमें प्रदाह पैदा हो जाता है और हवा तथा खानेकी चीजें जब उनमें लगती हैं तो वहाँ तकलीफ पैदा हो जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ?, ३x—असह्य दर्द, एकाएक रोग-का आक्रमण हो जाना, रोगी मानो पागल हो जाता है। सर्दी लगने बाद ही दाँतमें दर्द, थोड़ा बहुत बीमार होता है।

आर्निका ६—दाँत उखड़वाने बाद इससे बहुत फायदा होता है, नकली दाँत लगवाने बाद यह सूजन और दर्दको एकदम आराम कर देता है ।

काफिया ६—रोगीको पागल बना देनेवाला असह्य दर्द, दर्दकी वजहसे रोगी रोता है और उसे समझ नहीं पड़ता कि क्या करना चाहिये ।

कैमोमिला १२—चिड़चिड़े मिजाजवाले बच्चे और उन स्त्रियोंके लिये उपयोगी है, जिन्हें मासिक ऋतु-स्राव होनेके पहले दाँतमें दर्द होता है । रोगी बिछा-वनकी गर्मी सहन नहीं कर सकता, रातमें तकलीफ बढ़ जाती है ।

नक्स-वोमिका ३०—जो काफी और शराब इत्यादि बहुत पसन्द करते हैं, जिनका मिजाज गरम और चेहरा लाल रहता है, जो शारीरिक परिश्रम बिलकुल ही नहीं करते और जिन्हें सर्दी लग गयी होती है, उनके लिये उपयोगी है ।

पल्सेटिला ६—दबाव और टपककी तरह दर्द, ठण्डे पानीमें, बिछावनकी गरमीसे, गरम घरमें अथवा मुँहमें कोई गरम चीज रखनेपर दर्द बढ़ता है और ठण्डी हवामें, मुँहमें कोई गरम चीज रखनेपर दर्द बढ़ता है और ठण्डी

हवामें ठण्डी हवा खींचनेपर या खुली हवामें घटनेवाला दाँतका दर्द।

बेलेडोना ६—औरतों तथा बच्चोंके लिये ज्यादा फायदेमन्द है। इसमें मस्तिष्कके लक्षण वर्त्तमान रहते हैं, खुली हवामें, छूने, चबाने, खानेकी चीजें अथवा गरम पतली चीजोंके छू जानेसे दर्द पैदा हो जाता है।

स्टैफिसेग्रिया ६—इसमें दाँत क्षय हो जाते हैं और काले पड़ जाते हैं। मसूड़े मैले, जखम भरे, फूले और उन्हें छूनेसे ही दर्द, खुली हवामें, ठण्डी चीजें पीने, चबाने, खाने और रातके समय रोगका बढ़ना।

साइलिसिया ३०—दिन रात तंग करनेवाला काटनेकी तरह दर्द, यह रातमें बढ़ता है। दाँतमें दर्द मसूड़े में नासूरका घाव और बदबूदार स्राव निकलता है।

सलफर ३०—क्षय हुए दाँतमें इधर उधर घूमने-वाला दर्द, मसूड़े फूले, मसूड़ोंसे रक्तस्राव। यदि चुनी हुई दवाके प्रयोगसे कोई फायदा न हो तो इसका प्रयोग करना चाहिये। सन्ध्याके समय, हवाके झोंकेसे और ठण्डे पानीसे दर्दका बढ़ना।

दाँतकी जड़ या मसूढ़े फूलना ।

यह एक तरहका हलका व्रण-शोथ विशेष है। क्षय हुए दाँतकी जगहपर यह व्रण या फोड़ा होता है। टपककी तरह दर्द, उत्ताप, सूजन वगैरह इसके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३x—फोड़ा होनेकी पहली अवस्थामें। जब पीव पैदा होना शुरू हो जाता है, तो इससे फायदा नहीं होता है।

हिपर सलफर ६x, ३०—पीव पैदा होना आरम्भ हो जानेपर ठण्डी हवामें ज्यादा दर्द होता है। मसूढ़ेमें जखम, पारा सेवन करनेके बाद दर्द होता है।

मर्क-सोल ३०—यदि पीव पैदा होनेके पहले इसका प्रयोग होता है तो फिर पीव नहीं होता। डंक मारने की तरह दर्द। चमकीले लाल रंगका फोड़ा होता है।

साइलिसिया ३०—मसूढ़ा फूला और उसके साथ ही बहुत दर्द। यदि पीव पैदा हो ही गया हो और न रोका जा सकता हो, या पानीकी तरह पतला बदबूदार स्राव हो। आराम होनेमें बहुत देर लगनेवाले जखममें उपयोगी है।

जीभका जखम।

जीभके जखममें जीभ पहले लाल हो जाती है और थोड़ी-सी फूलती है। इसके बाद उसपर छोटे छोटे जखम पैदा होकर, उनमें पीब पैदा होने लगता है।

मर्कुरियस बिन आयोडाइड ३x विचूर्ण—इस रोगकी प्रधान दवा है। इससे बहुत जल्द काम होता है। पर पारा सेवन करनेका यदि इतिहास मिले तो 'नाइट्रिक एसिड' ३० व्यवहार करना चाहिये। डा० हियुज 'म्युरेटिक एसिड' की अधिक प्रशंसा करते हैं। मर्क-कोर ६ और मर्क-सोल ३०, हाइड्रैस्टिस ३x, फाइटोलैक्का ६, नाइलिसिया ३० प्रभृति दवाएँ भी लक्षणके अनुसार प्रयोग की जाती हैं; हाइड्रैस्टिस, कार्बोलिक एसिड, नाइट्रिक एसिड, बैप्टीशिया, प्रभृति दवाएँ लगायी भी जाती हैं। इसमें मांस मना है। निरामिष और पौष्टिक भोजन करना चाहिये।

गलेमें दर्द या गलकोष-प्रदाह।

गलेमें हल्का-सा दर्द या सूजन आ जानेपर उसे गलेका दर्द कहते हैं। इसकी पैदाइश सर्दीसे होती है और इसमें

साथ कोई दूसरा उपसर्ग नहीं रहता, पर गलेके भीतर सुरसुरी होना, बार बार निरर्थक ही खखार कर बलगम निकालनेकी चेष्टा करना, निगलनेके समय और साँस लेने तथा छोड़नेमें तकलीफ प्रभृति इसके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३x—आरम्भवाली अवस्थामें, तेज बोखार, बेचैनी, मानसिक उद्वेग मौजूद रहनेपर और सूखी, ठण्डी हवा लगना, रोगका कारण रहनेपर इससे बहुत फायदा होता है।

एपिस मेलिफिका ६, ३०—रोगवाली जगह फूली, चमकीली लाल, प्यास न लगना, पर गलकोषका सूखते रहना ; गलेमें गोंदकी तरह लसदार बलगम। रोग-वाली जगहपर डंक मारनेकी तरह दर्द होता है।

बेलेडोना ६x, ३०—मस्तिष्ककी गड़बड़ीके लक्षण, चेहरा लाल और तमतमाया हुआ तथा रोगवाली जगह लाल, इस लक्षणवाले गलकोप और तालुमूल प्रदाहमें भी यह दवा सफलता-पूर्वक व्यवहृत होती है। निगलनेमें कष्ट। गलनली बहुत सँकरी पड़ गयी है, ऐसा भी मालूम होता है। गलेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है।

कैप्सिकम ६—खाँसी आना, इसके साथ

गलेमें बहुत जलन और डंक मारने तथा सिकोड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है।

हिपर सलफर ३०—पीब होना आरम्भ होनेपर इसका व्यवहार होता है।

मर्क्युरियस ३०—गलेमें दर्द, लार बहना, दर्दका रातमें बिछावनकी गरमीसे बढ़ना। रोगवाली जगह फूली अनुभव होना और पीब भरनेकी तैयारीके लक्षणमें इसका सफलता-पूर्वक व्यवहार होता है।

सलफर ३०—पुरानी बीमारीमें लाभदायक है।

गर्म पानीका कुल्ला और सोनेके समय गर्म पानीका धुँआ लेना ज्यादा फायदा करता है। पतली चीजें खानी चाहियें।

टानसिलाइटिस या तालुपार्श्व-ग्रन्थि-प्रदाह।

तालुके दोनों बगलमें बादामोंकी जैसी दो ग्रन्थियाँ [illegible] हैं। इन्हें तालु-ग्रन्थि या टानसिल कहते हैं। इसके प्रदाहको तालुमूल ग्रन्थि प्रदाह, तालु-पार्श्व-ग्रन्थि-प्रदाह या अंग्रेजीमें टानसिलाइटिस कहते हैं। यह प्रदाह एक या

दोनों ग्रन्थियोंमें हो सकता है। तालुमूलका लाल होना, उत्ताप, सूजन, इसके साथ ही बोखार, शरीरमें दर्द, सर-दर्द, घर्घरदार श्वास, निगलने और बलगम निकालनेमें कष्ट, इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३x, ३०—प्रारम्भ अवस्थामें, सूखी ठण्डी हवासे पैदा हुई बीमारी, तेज बोखार, शरीर खूब गर्म, बेचैनी, प्यास और घबराहट रहती है।

एपिस मेलिफिका ६, १२—तालुमूल फूला, चमकीले लाल रंगका, उसमें जलन और डंक मारनेकी तरह दर्द; सूजन मिला जखम। प्यासका न रहना पर रोगवाली जगहका सूखापन।

बैराइटा कार्ब ३०—जिनको बार बार यह बीमारी होती है, उनके लिये और पुरानी सूजनवाली टान-सिलकी बीमारीमें यह लाभदायक है। पीब होनेकी तैयारी होनेपर इसका व्यवहार होता है।

बेलेडोना ६, ३०—इसका भी व्यवहार आरम्भकी अवस्थामें ही होता है। मस्तिष्कमें विकारके लक्षण मिला बोखार, गलेके भीतर सूजन, चमकीला लाल रंग,

कष्ट, लगातार घूँट लेते रहनेकी इच्छा, ऐसा अनुभव होता है, कि गला कुछ संकरा हो गया है।

जेलसिमियम ६—बोखारके साथ सुस्तीवाली अवस्था, रोगवाली जगहपर सुरसुरी मालूम होती है।

हिपर सलफर ३०—इसका प्रयोग तब होता है, जब टानसिल पक जाता है, उसमें इतना दर्द रहता है, कि स्पर्श सहन नहीं होता, छूनेसे भय।

मर्कुरियस ३०—बहुत लार बहना, जखम, बदबूदार श्वास। रातके समय उपसर्गोंका बढ़ना। जखमके साथ मैले लाल रंगका तालुमूल।

साइलिसिया ३०—टानसिल पककर फट जानेबाद जखमको सुखा देनेके लिये व्यवहृत होता है।

आराम करना और हलकी जल्द पचनेवाली चीजें खाना लाभदायक है। मछली-मांस खाना मना है। तेज बोखारवाली अवस्थामें साबू, बार्ली प्रभृति बोखारका पथ्य देना चाहिये।

अग्निमान्द्य या अजीर्ण।

खानेकी चीजें अच्छी तरह न पचनेके कारण मन्दाग्नि या अजीर्ण पैदा होता है। साधारणतः ज्यादा खाना या

तेलकी बनी चीजें, देरमें पचनेवाली गरिष्ठ चीजें खाना इत्यादि कारणोंसे यह बीमारी होती है। बहुत ज्यादा शराब पीना, तम्बाकू खाना, चाय या काफी पीना भी अग्निमान्द्य पैदा होनेका कारण होता है।

चिकित्सा।

एनाकार्डियम ६, ३०, २००—स्मरण शक्तिका घट जाना, भोजनके समय दर्दका घटना, पर कई घण्टे बाद ही फिर पेटमें दर्द पैदा हो जाना।

एण्टिम-क्रूड ६—बहुत ज्यादा खाने-पीनेके कारण नया अजीर्ण रोग। जीभपर सफेद मोटी मैलकी तह्री जमी रहती है।

आर्सेनिक ६, ३०—शराबियोंका अजीर्ण रोग, बहुत ज्यादा बरफ खानेके कारण अजीर्ण। पाकाशयमें जलनकी तरह तेज दर्द और हृदयमें दाह मालूम होता है।

ब्रायोनिया १२, ३०—चिड़चिड़े मिजाजका रोगी और गरमीके दिनोंकी मन्दाग्निमें ज्यादा फायदा करता है। भोजनके बाद ही पाकाशयमें दबाव मालूम होने लगना; भोजनके बाद ही खट्टी या बदबूदार डकार आना। भोजनके बाद वमन।

कार्बो-वेज ३०—वृद्धोंका अजीर्ण, ऊपरी

वायु-संचय हो जाना, दूध पीनेसे पेटमें वायु होना, पतला बदबूदार दस्त होता है।

चायना ६, ३०—किसी कड़ी बीमारीके बाद अजीर्ण रोग, भूख न लगना, मुँहका स्वाद तीता, खट्टी चीज खानेकी इच्छा। पाचन-शक्तिका बहुत घट जाना, बहुत हलकी चीजें खानेपर भी पेटमें वायु पैदा होता है, ऊपरी-निचला, समूचा पेट फूलता है।

लाइकोडियम ३०, २००—भूख गायब ; सभी समय पेट भरा रहनेकी तरह मालूम होता है। भूख लगने-पर दो एक ग्रास खाते ही पेट भर जाता है। तलपेटमें ... होना, पेट जोरसे गड़गड़ाता है। कब्ज, खट्टी डकार तीसरे पहरकी खट्टी कै। दिनके ४ बजेसे रातके ८ तक उपसर्गोंका बढ़ना।

नक्स-वोमिका ३०, २००—शारीरिक परिश्रम न करनेवाले मनुष्योंका अजीर्ण रोग। बहुत मसालेदार चीजें या उत्तेजक पदार्थ खानेके बाद अजीर्ण रोग। भोजनके एक घण्टा बाद ही पेटमें दर्द और दूसरे दूसरे उपसर्गोंका बढ़ना, खट्टी डकार।

नेट्रम-म्यूर ३०—अवसाद वायु रोगवाले सर्द-प्रकृतिके मनुष्योंकी पुरानी मन्दाग्निमें बड़ा ज्यादा फायदा

करता है। भूख खासी रहती है, पर भोजनसे अरुचि। भोजनके बाद कलेजेमें जलन, रोटी अच्छी न लगना, सफेद श्लेष्माकी कै होती है।

फास्फोरस ६, ३०—उदरमें कमजोरी और खाली-पन मालूम होना। भोजनके बाद पाकाशयमें दबावकी तरह दर्द, भोजनके बाद तुरन्त ही खायी हुई चीजकी कै हो जाती है।

पल्सेटिला ६, ३०—मलाईका वरफ, फल मूल और तेलकी या घीकी पकी चीजें खाने बाद अजीर्ण, खायी हुई चीजकी डकार अकसर खट्टी आती है और वह मुँहमें बहुत देरतक मौजूद रहती है। सवेरे मुँहका स्वाद बहुत खराब रहता है, प्यास नहीं रहती, हमेशा सिहरावन मालूम हुआ करता है।

सलफर ३०—बहुत बार पुरानी अवस्थामें व्यवहृत होता है।

पथ्य आदिपर ज्यादा खयाल रखना चाहिये। खानेके समय धीरे धीरे और खूब चबाकर खाना चाहिये। भोजन बँधे समयपर करना चाहिये, पर जबतक खायी चीज अच्छी तरह न पच जाये तबतक दूसरी चीज न खानी चाहिये।

वमन।

बहुत ज्यादा खाना, पाकाशयका जखम या कर्कट रोग, स्नायुमण्डलकी बीमारी, आँतोंका रुकना, स्त्रियोंकी गर्भावस्था, मस्तिष्ककी बीमारी वगैरहके कारण कै होती है।

चिकित्सा।

एण्टिम क्रूड ६x, ३०—बच्चोंका दूध कै करना, जीभपर मोटी सफेद मैलकी तही जमी रहना, मिचली ओकाई।

एपोमार्फिया ३x, ६x—मस्तिष्ककी बीमारीकी वजहसे वमन और जी मिचलाता है, सामुद्रिक मिचली और वमन (sea-sickness) में यह बहुत फायदा करता है।

आर्सेनिक ६x, २००—बहुत ज्यादा प्यास, पानी पीने बाद ही वमन।

काकुलस ३०—जहाज, नाव और गाड़ीमें सवारी करनेपर तथा गर्भावस्थाकी मिचली और वमनमें उपयोगी है।

इपिकाक ६, ३०, २००—यह वमनकी बहुत बढ़िया दवा है। जिनको कै और मिचली बहुत ज्यादा रहती है।

नक्स-वामिका ६, ३०—अजीर्णकी वजहसे बहुत ही तकलीफ देनेवाली मिचली, खायी हुई चीज या गई

तरल पदार्थ कै के साथ निकलते हैं, गर्भावस्थामें सवेरेके वक्त होनेवाली कै।

फास्फोरस ६, ३०—पानी पीने बाद, पानी पेटमें जाकर गरम होते ही कै हो जाना।

सलफर ३०—पुराने, बहुत ही तेज वमनमें कभी कभी इसकी जरूरत पड़ती है।

इस रोगमें धानके लावाका मांड़, कच्चे नारियलका पानी वगैरह लाभ करता है। छोटे छोटे बरफके टुकड़े चूसनेको देनेसे कै का जोर घट सकता है।

डिसेण्ट्री या रक्तामाशय।

कोलन (colon) या बड़ी आँत या बड़ी आँतकी श्लेष्मिक झिल्लीके प्रदाहको रक्तामाशय कहते हैं। इसमें कुछ न कुछ बोखार, सफेद आम मिले या आम और खून मिले दस्त आते हैं। साथ ही पेटमें दर्द, कुंथन वगैरह उपसर्ग भी वर्त्तमान रहते हैं।

रक्तामाशय रोगमें रोगीको २४ घण्टोंमें ४०, ५०, ६० या बीमारीकी तेजीके अनुसार इससे भी ज्यादा बार दस्त आ सकते हैं। पेटमें दर्दके कारण रोगी बेहोशतक हो जा

निम्न-क्रम जैसे १x, २x, ३x, प्रभृति पूरी उमरवालोंके लिये, टिंचर १ बूँद, बालकोंको आधा बूँद और छोटे बच्चोंको चौथाई बूँद देना उचित है। मध्यम क्रम जैसे ६, १२, ३० पूरी उमरवालोंको आधा बूँद या ४ अनुवटिकायें और बालकोंके लिये इसकी आधी मात्रा, उच्च क्रम जैसे २००, ५००, १००० प्रभृति दवाओंको अरिष्टके रूपमें व्यवहार करना कभी उचित नहीं है। इनका व्यवहार हमेशा अनुवटिकाके रूपमें करना चाहिये। मात्रा पूरी उमरवालोंके लिये १ अनुवटिका ही काफी होती है। यह बात हमेशा याद रखनी चाहिये कि किसी बीमारीका आराम होना, होमियोपैथिक दवाके परिमाणपर निर्भर नहीं करता, रोगके लक्षणोंके साथ दवाके लक्षणका सादृश्य ठीक मिलाकर प्रयोग करनेपर, किसी भी छोटीसे छोटी सूक्ष्म मात्रासे आरोग्य हो सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि कभी कभी १x, २x प्रभृति निम्न-क्रमकी दवा कुछ ज्यादा मात्रामें देनेकी जरूरत आ पड़े परन्तु ३०, २००, ५००, १००० शक्तियाँ प्रभृति कभी भी ज्यादा मात्रामें देनी उचित नहीं है।

सकता है। पेशाब खूब घट जाता है या एकदम ही बन्द हो जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३, ३०—रोगकी आरम्भकी अवस्थामें, जब बोखार, पेटमें दर्द, बेचैनी, घबराहट प्रभृति लक्षण रहते हैं। खासकर सर्दी लगकर रोग पैदा होनेपर इसके प्रयोग से बहुत फायदा होता है।

एलोज ३०—बहुत कूथन, आमके साथ रक्त अथवा थक्का थक्का सफेद आम, अनजानमें पाखाना हो जाना, बहुत कमजोरी रहती है।

आर्सेनिक ३०—रक्तामाशयकी अन्तिम अवस्थामें जब रोगी बहुत ही सुस्त हो जाता है और इसके साथ ही बेचैनी, मृत्युका भय, मल काला और बदबूदार होनेका लक्षण होता है।

बैप्टिशिया ३x, ३—सान्निपातिक लक्षण प्रकट होनेपर यह ज्यादा फायदा करता है।

बेलेडोना ३—बच्चोंके लिये बहुत फायदेमन्द है। हाथ-पैर ठण्डे, माथा गरम, उदरमें तेज दर्द, पसीना नहीं न होना, नींदमें चौंकनेके लक्षण रहते हैं।

कैन्थरिस ३०—रोगी घबड़ाया और बेचैन रहता है। उदरमें तेज जलन, आँतोंकी खरोंचकी तरह (scrapings of intestines) दस्त अथवा सिर्फ खून मिला आमका दस्त होता है।

कोलसिन्थ ६—उदरमें तेज दर्द, खाने-पीने बाद बढ़ता है, पर सोनेपर या पैर सिकोड़कर सोनेपर घटता है, मल आम और खून मिला रहता है।

कोलचिकम ६—शरद ऋतुके आमाशयमें उपयोगी है। इसमें कूथन और पेटमें मरोड़ बहुत रहता है।

इपिकाक ३x, ३०—लगातार मिचली, खून-मिला और घासकी तरह हरे रंगका मल।

मर्कुरियस ३०—सब तरहके अमाशयोंकी यह बढ़िया दवा है। यदि खून बहुत अधिक जाता हो तो मर्क-कोर और यदि दस्तमें खून कम हो तथा सफेद आम गिरती हो तो मर्क-सोल व्यवहृत होता है। बहुत कूथन, पाखानेमें बहुत देरतक बैठ रहना पड़ता है। पाखाना हो जाने बाद भी कूथन बनी ही रहती है, यही मर्कुरियसकी विशेषता है।

नक्स-वोमिका ३०—पाखाना होनेके पहले पे में तेज दर्द और बहुत कूथन, पाखाना हो जाने बाद कूथन

एकदम बन्द हो जाना। यही नक्स-वोमिकाकी विशेषता है और इसी बातमें मर्कुरियससे इसका प्रभेद है।

सलफर ६, ३०—अगर चुनी हुई दवासे कोई लाभ न हो तथा आराम होनेवाली अवस्थामें अत्यन्त उपयोगिताके साथ इसका व्यवहार होता है।

पतली और पुष्ट करनेवाली चीजें खानेको देनी चाहियें, पानीमें बनी बार्ली, शटी, ज्वर तेज न रहनेपर बकरीका दूध, ताजा मट्ठा, गन्धभादुलियाके पत्तेका रस और रोग जब आराम होनेकी ओर आये, उस अवस्थामें चीड़ेका मांड़, भातका मांड़, अनार, बिदानाका रस, ईखकी चीनीके साथ कच्चा बेल पका कर उसका गूदा, शिङ्गी या मागुर मछलीका शोरवा प्रभृति देना चाहिये।

अतिसार या उदरामय।

बार बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पतले दस्त आनेको अतिसार या उदरामय कहते हैं। साधारणतः इसे चार भागोंमें बांटा जा सकता है। (क) ज्यादा मात्रामें उत्तेजक या गन्दा खाने-पीनेके कारण आंतोंमें प्रदाह होकर अतिसार पैदा होता है। (ख) गर्मीके दिनोंका अतिसार। (ग) प्रदाहके कारण पैदा हुआ अतिसार, जैसे सरदी लगकर,

पसीना रुककर, गर्म अवस्थामें ठण्डी पतली चीजें पीनेपर दस्त आने लगना। (घ) पाचन क्रियामें गड़बड़ी होकर अजीर्ण पदार्थ निकलनेवाला अतिसार। इसके अलावा सान्निपातिक ज्वर, हृद-रोग, विलेपी ज्वर इत्यादिके उपसर्ग के रूपमें भी अतिसार होता देखा जाता है। क्रिया-विकार की वजहसे साधारण पतले दस्त आते हैं; इसमें आंतोंमें प्रदाह हुए बिना ही पतले दस्त आया करते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३x, ६—प्रादाहिक अतिसार, पसीना रुकनेकी वजहसे या सूखी ठण्डी हवा लगकर अतिसार। मल पानीकी तरह, खून मिला अथवा हरा।

एलोज ६, ३०—खाने-पीने बाद, सवेरे या रातके अन्तम भागमें जल्दी जल्दी उठकर पाखाने जाना पड़ता है, पाखाना लगनेपर वेग सम्हाला नहीं जाता। मल पीला, पानीको तरह पतला, गरम और आम मिला रहता है। पाखाना होनेके पहले नाभीके चारों ओर बहुत दर्द रहता है। पाखाना होने बाद बहुत कमजोरी मालूम होती है और पसीना होता है।

एण्टिम क्रूड ६—खानेकी गड़बड़ीके कारण अजीर्ण, पेटमें दर्द, जी मिचलाना और जीभपर सफेद मैलकी

तही, मल कुछ बँधा और कुछ पतला निकलता है। पाचन क्रियामें गड़बड़ीकी वजहसे जो खाया जाता है, उसी डकार आती है।

आर्सेनिक ३०—खाने-पीने बाद ही पतले दस्तों का बढ़ जाना, फीका पीले रंगका पानीकी तरह दस्त, यह परिमाणमें थोड़ा होता है, पर बारमें अधिक होता है, उसमें बहुत बदबू रहती है। रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है, बेचैनी, प्यास, बच्चोंका गरमीके दिनोंका अतिसार।

कैल्केरिया कार्ब ३०—मोटे थुलथुले बच्चोंके उदरामयमें ज्यादा फायदा करता है। माथेमें पसीना, तीसरे पहरके समय ज्यादा पतले दस्त आते हैं। दूध सहन नहीं होता है, दहीके थक्कोंकी तरह खट्टी गन्ध लिये कै होती और इसी तरहके दस्त आते हैं। कभी कभी सड़े अण्डेकी तरह गन्धभरा दस्त आता है।

चायना ६, १२—अनपचा भोजन मिला मल, गहरे हल्के पीले रंगका अथवा भूरे रंगका या सफेद मल, भोजनके बाद और रातके समय ज्यादा दस्त आना, पाखाना बाद कमजोरी, अजीर्ण खाद्य मिले मलमें ज्यादा [illegible] है।

इपिकाक ६, ३०—फेन भरा, घासकी तरह हरा, [illegible] की तरह या आम मिला मल। बच्चोंका गर्मीके दिनोंका

ातिसार, पेटमें दर्द और मरोड़। जी मिचलाना अथवा मन।

नेट्रम-सल्फ ६, ३०—कुछ दिनोंतक सर्दी पड़ने बाद, सवेरेके समय पतले दस्त आते हों तो यह फायदा करता है।

नक्स-वोमिका ६, ३०—रातमें जागरण या अमिताचार, अत्याचार करनेके बाद पतले दस्त आना, सवेरे बढ़ना। पाखाना परिमाणमें थोड़ा पर बार बार लगता है। जिन्हें दूध सहन नहीं होता, उनके लिये उपयोगी है।

पोडोफाइलम ६—परिमाणमें बहुत अधिक और भयानक बदबूदार मल। गर्मीके दिनोंमें, सवेरे और बच्चोंको दाँत निकलनेके समय ज्यादा पतले दस्त आना या हलके पीले रंगका पानीकी तरह मल, बड़े वेगसे निकलता है।

पल्सेटिला ६, ३०—इसके मलका रंग हमेशा बदला करता है। दो बारके दस्तका रंग कभी एक समान नहीं रहता। आँटा, पीठी या घीकी पकी चीजें खानेके कारण या कुल्फी मलाईका बरफ या आइसक्रीम खानेकी वजहसे पतले दस्त। रातमें दस्त ज्यादा आते हैं।

सलफर ३०—आधी रातके बाद दस्त आरम्भ होकर सवेरेतक बढ़ता है। बिछावनपर सोये रहनेके समय

ही पाखाना लग आता है। यह वेग रोगी सम्हाल नहीं सकता। समझता है, कि कपड़ा खराब हो जायगा, दौड़ कर पाखाने जाना पड़ता है। किसी तरहके भी दाने या उद्भेद यदि बैठकर पतले दस्त आने लगें तो सलफर अधिक फायदा करता है।

पथ्य आदि—नये अतिसारमें भात रोटी खाना बन्दकर अवस्थाके अनुसार उपवास करना या पानीकी बार्ली वगैरह खाना चाहिये। यदि अतिसार जोरका न हो और भूख लगे तो च्यूड़ेका माँड़ दिया जा सकता है। फलोंमें थोड़ा-सा अनार या बिदानाका रस या नारंगीका रस दिया जा सकता है। आराम हो जानेपर भातके माँड़के साथ गन्धमादुलियाके पत्तेका शोरबा या जीवित मछलीका शोरबा फायदा करता है।

क्रिमि ।

बहुत तरहकी क्रिमि रहनेपर भी साधारणतः तीन तरह की क्रिमि दिखाई देती है। सूतकी तरह क्रिमि। केंचुएकी भाँति क्रिमि या चिपटी क्रिमि और कीनेकी तरह क्रिमि, इसके अलावा कितने ही बच्चोंको उड़नेवाली क्रिमि या flying

worms होती दिखाई देती हैं। आमके छोटे छोटे कीड़ोंकी तरह कृमि पाखानेके साथ निकलकर उड़ जाती है।

सूतकी तरह कृमि मलद्वारके पास मलनालीमें रहती है। मलद्वारका खुजलाना, नाकका खुजलाना, साँस छोड़नेमें बदबू, नींद खुल जाना इत्यादि इसके लक्षण हैं। अगर कृमिके कारण लड़कोंमें अकड़न पैदा हो जाये तो 'सिना' २०० का प्रयोग हो सकता है पर इस अवस्थामें सिनाकी अपेक्षा भी 'इण्डिगो' ज्यादा फायदा करता है।

आर्टिस्टा इण्डिका १x, ३x—भारतीय पौधों से तैयार नयी अविष्कार की हुई दवा है। कृमिके समस्त उपसर्गों में जैसे नाभीके चारों ओर मरोड़की तरह दर्द और 'सिना' की तरह नाकका खुजलाना और नाककी ठोर रगड़ना, कृमिकी वजहसे पतला दस्त आना, बेहोशी, इसके प्रयोगके खास लक्षण हैं।

एम्बेलिया राइबस ३x, ३—आयुर्वेदकी सबसे बढ़िया कृमि-नष्ट करनेवाली दवा विड़ङ्गसे यह तैयार होती है। यह भी बच्चोंके कृमिसे पैदा हुए उपसर्ग, अजीर्ण, अतिसार, पेट फूलना वगैरहमें व्यवहृत होती है।

बहुतोंकी धारणा है, कि 'सिना' ही कृमि नष्ट करने-वाली एक ही दवा है, पर यह भयंकर भूल है। मलद्वार-की छोटी क्रिमिमें सिनाकी कोई क्रिया नहीं होती। इसमें

'ट्युक्रियम' १x फायदा करता है। इस तरहकी कृमिके कारण अगर बच्चेको बोखार, बेचैनी, नींदमें गड़बड़ी हो तो 'एकोनाइट' ३x और बहुत उत्तेजित अवस्थामें 'इग्ने-शिया' ३० बहुत फायदा करता है। छोटी लड़कियोंके मलद्वारके पासकी छोटी क्रिमि जब योनिमें घुस जाती है, तो श्वेतप्रदर या इसी तरहकी दूसरी बीमारी पैदा कर देती है। इस अवस्थामें 'कैलिडियम सेग्विनम' ३०, ही ज्यादा फायदा करता है।

सैबाडिला :—नाभीके चारों ओर मरोड़की तरह दर्द, इसके साथ ही वमनेच्छा और वमन।

स्पाइजिलिया :—छोटी सूतकी तरह कृमिमें मलद्वारमें खुजली होनेपर इससे बहुत ज्यादा फायदा होता है।

पथ्य—ज्वरके साथ कृमिका उपसर्ग रहनेपर बोखार की तरह हल्का पथ्य देना चाहिये। साधारणतः मीठी चीजें, खट्टे पदार्थ, घी, मांस, साग तथा गन्दे भोजन नुकसान करते हैं। तीता, कसैला और कड़ुवा पदार्थ इन बीमारीमें फायदा करता है।

शूलवेदना या कालिक ।

आँतांके पेशी-तन्तुको अकड़न (Spasm) की वजहसे [पै]दा हुए दर्दको शूल या कालिक कहते हैं। नाभीके चारों ओर मरोड़की तरह दर्द ही इसका प्रधान लक्षण है। शूल रोग रह रहकर होता है और इसमें ज्वर नहीं रहता। इसी लक्षणको देखकर इससे और अन्त्र-प्रदाह प्रभृति इसी प्रकारके अन्य रोगसे इसका पार्थक्य निर्णय किया जाता है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ६, ३०—पेटमें बहुत मरोड़का दर्द और उसी कारणसे बेचैनी, तेज प्यास और मृत्यु-भय।

बेलेडोना ६, ३०—दर्द एकाएक पैदा होता है और एकाएक ही चला जाता है, तेज दर्द, खोंचा मारनेकी तरह दर्द, हिलने-डोलने और दबानेसे दर्दका बढ़ना, बच्चोंके लिये यह ज्यादा फायदा करता है, पेट फूलता है, मुख-मण्डल लाल रहता है।

कोलोसिन्थ ६, ३०—पेटमें बहुत अधिक दर्द, रोगी दर्दसे सामनेकी ओर झुक जाता है, दर्दवाली जगह जोरसे दबा रखनेसे दर्द घट जाता है।

संक्षिप्त

सरल पारिवारिक चिकित्सा

[होमियोपैथिक मतसे]

हैनिमैन पब्लिशिङ्ग को० द्वारा

संगृहीत और प्रकाशित।

हैनिमैन पब्लिशिङ्ग को०

१६५ नं० बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता।

मूल्य।

कितनी देरका अन्तर देकर दवा देना उचित है ?

चिकित्सकको इस विषयका भी पूरा पूरा ज्ञान रहना चाहिये, कि किस बीमारीमें, किस क्रमकी दवा, कितनी देरका अन्तर देकर देना उचित है। हैजाकी तरहकी तुरन्त जान ले लेनेवाली बीमारीमें, अवस्थाके अनुसार एक घण्टा, आध घण्टा अथवा १०, १५ मिनिटका अन्तर देकर दवा दी जा सकती है। सान्निपातिक, स्वल्प-विराम प्रभृति ज्वरोंमें, जहां कोई उपसर्ग जबर्दस्त नहीं होता, पर बीमारीकी मियाद ज्यादा दिनोंकी होती है, उसमें २४ घण्टोंमें, ६ या ३० क्रमकी दवा दो तीन बार दे देना ही काफी मालूम होता है। पुरानी बीमारियोंमें ऊंचे क्रमकी दवा ज्यादा दिनोंका अन्तर देकर देनी पड़ती है—जैसे, २०० दो तीन दिनोंके अन्तरसे, एक हजार एक सप्ताह या दस दिनोंके अन्तरसे और लाख क्रम एक महीनेका अन्तर देकर प्रयोग करना चाहिये। यही साधारण नियम है, पर इसमें हेरफेर इलाज करनेवालेके अनुभवपर निर्भर करता है।

औषधकी रक्षा-विधि।

खूब हिफाजतसे हवादानीमें दवा धरकर साफ-सुथरे होमियोपैथिक औषधके बक्स या थैलेमें रखना चाहिये।

कैमोमिला १२—कैमोमिलाका मानसिक लक्ष चिड़चिड़ापन और बद-मिजाजी रहनी चाहिये, ऐसे चिड़ चिड़े बच्चोंके पेटके दर्दमें यह ज्यादा फायदा करता है।

डायस्कोरिया ६—दर्द पुट्ठेके पाससे आरम्भ होकर समूचे पेटमें फैल जाता है। चित्त होकर सोने या पीछेकी ओर टेढ़े होने अथवा झुकनेसे घटता है (कोलो- सिन्थके विपरीत)।

नक्स-वोमिका ३०—अजीर्ण और अम्ल-पित्त- वाले रोगियोंके शूलका दर्द। पाकस्थलीमें बहुत ज्यादा परि- माणमें वायु होकर शूलका दर्द पैदा हो जाता है।

प्लम्बम ३०—शूलके दर्दकी यह बहुत बढ़िया है। दर्दके समय ऐसा मालूम होता है, मानो तल- ी मेरुदण्डकी ओर कोई डोरीसे बांधकर खींच रहा है।

लाइकोपोडियम ३०, २००—आसमानकी वजहसे शूलका दर्द।

पल्सेटिला ६, ३०—घी-तेलमें पकी चीजें खानेके कारण शूलका दर्द होनेपर इससे लाभ होता है।

इस रोगमें उत्तेजना न पैदा करनेवाली हल्की और पुष्ट

कब्जियत।

मलनालीमें मल इकट्ठा होना और मलकी गाँठें बँध जाना, दस्त साफ न आना—इसीको कोष्ठबद्ध या कब्ज कहते हैं। नियमित रूपसे परिश्रम न करना, ज्यादती करना, मानसिक उद्वेग, ठीक ठीक भोजन न मिलना, यकृत रोग प्रभृति कारणोंसे कब्ज होता है।

चिकित्सा।

एल्यूमिना ६, ३०—पाखाना लगता ही नहीं, सात आठ दिनोंतक दस्त नहीं आते और पेटमें मल इकट्ठा हुआ करता है। मलनालीकी क्रिया ही नहीं होती, वेग दिये विना ढीला पाखाना भी नहीं निकलता। मल कड़ा, गाँठ गाँठ और आम मिला; बच्चोंके कब्जमें यह ज्यादा फायदा करता है।

ब्रायोनिया ६, ३०—ब्रायोनियाका लक्षण भी एल्यूमिनाकी तरह ही है। यह भी बच्चोंके कब्जमें लाभ करता है।

कास्टिकम ३०—बार बार पाखाना लगता है, पर पाखाना होता नहीं है। इसके साथ दर्द और कूथन भी बनी रहती है। मल, सूखा और कड़ा। बैठे रहनेकी अपेक्षा खड़े होनेपर सहजमें ही पाखाना होता है।

ग्रेफाइटिस ३०, २००—इसमें मल बहुत क
और बड़े बड़े ढेंके रूपमें निकलता है, इसपर आम लि
रहती है।

हिपर सलफर ६, ३०—मल कड़ा भी नहीं औ
पाखाना लगनेपर भी होता नहीं, ऐसे कब्जमें
उपयोगी है।

लाइकोपोडियम ३०, २००—मलद्वारके सिकु
जानेकी वजहसे कब्ज : पाखाना लगता है, पर हो
नहीं है।

नक्स-वोमिका ६, ३०—मलनालीकी अनियमि
पेरिस्टोलिक क्रियाकी वजहसे कब्ज, बार बार पाखा
जानेकी इच्छा, पर भरपूर खुलासा दस्त न होना। पे
पूब वायु होता है। नीचेकी ओर आता है, इसीलिये व
बार पाखानेका वेग होता है। (लाइकोपोडियमका लक्ष
बहुत कुछ इसी ढङ्गका होनेपर भी मलद्वारके संकोचनक
वजहसे ऐसा होता है।)

ओपियम ३०, २००—पाखानेकी इच्छा या वे
बिल्कुल ही नहीं होता है। आंत और मलद्वारकी कमजोर
और क्रिया लोप हो जानेकी वजहसे ऐसा होता है: म
कड़ा, काला, गोल ढेंकी तरह रहता है।

साइलिसिया ३०, २००—मल वाहर थोड़ा-सा निकलकर फिर भीतर घुस जाता है। इसीलिये, ऐसा मालूम होता है, कि मलनलीमें मल निकाल बाहर करनेकी बिलकुल ही शक्ति नहीं है।

सलफर ३०, २००—पुरानी बीमारीमें और सोरा धातुवाले मनुष्योंके लिये यह ज्यादा लाभदायक है।

नियमित समयपर खाना और पाखाना जाना अच्छा है। बहुत ज्यादा परिमाणमें ठण्डा पानी खासकर सवेरे शय्यापर रहते रहते पी लेना फायदा करता है।

बवासीर या अर्श।

किसी भी कारणसे खूनके दौरानकी गति रुक जानेके कारण मलद्वारके पासवाली शिराओंमें खून इकट्ठा हो जाता है और वे फूल जाती हैं और कड़ी हो जाती हैं। इसीको अर्श या या बवासीर कहते हैं। इसी वजहसे अगर मटरके बराबर भी कोई शिरा बढ़ जाती है, तो उसको बवासीरका मसा या वलि कहते हैं। यह कभी एक होता है और कभी अंगूरके भव्वेकी तरह कितने ही मसे निकल आते हैं। अगर मसा मलद्वारके बाहर रहता है, तो उसे "वहिर्वलि" या

बाहरी मसा कहते हैं और भीतर रहनेपर "अन्तर्वलि
भीतरी मसा कहते हैं।

चिकित्सा।

आर्सेनिक ६, ३०—बहुत जलन करनेवाला व
सीर, ठण्डे प्रयोगसे और आधी रातके बाद तकलीफ
बढ़ना। गरम कमरेमें और गरम सेंकसे घटना।

इस्कुलस ३०—यह अर्श रोगकी एक बढ़िया द
है, कमरमें दर्द और यकृतकी जगहपर भारीपन माल
होता है। अकसर बादी बवासीरमें, पर कभी कभी खू
बवासीरमें भी यह फायदा करता है। ऐसा अनुभव हो
है, मानो मलद्वार काठके टुकड़ेसे बन्द हो रहा है, ऐ
लगी है।

एलोज ६, ३०—अंगूरके गुच्छेकी तरह मसा
इसमें खुजली और जलन, मसासे खून बहना, ठण्डे पानी
प्रयोगसे जलन और तकलीफें घटना एलोजकी विशेषता है

कालिन्सोनिया ३x, ३०—अर्शकी यह बहुत
ही उत्तम दवा है। कब्जियतके साथ बहुत ज्यादा खून
जानेवाला खूनी बवासीर, मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है
कि लकड़ीके टुकड़े भरे हैं। गर्भवती स्त्रियोंकी योनिमें
सूजनके साथ बवासीर।

नक्स-वोमिका ६, ३०—कुल्हेमें दर्द ; बादी य खूनी बवासीरका मसा बड़ा ; उसमें जलन और डंक मारने की तरह दर्द, खुजलीकी वजहसे रातमें नींद नहीं आती कब्ज, बार बार पाखाना जानेकी इच्छा, नियमसे न रहने वाले, कसरत न करनेवाले और शराब पीनेवालोंकी बवा सीरमें यह फायदेमन्द है।

मिलिफोलियम ६, ३०—मसेसे सफेद चमकी लाल रंगका खून निकलता है।

हैमामेलिस ३x, ३०—बहुत अकड़नके दर्दके सा बहुत ज्यादा खूनका स्राव होनेपर यह फायदा करता है इसको लगानेसे अकड़नका दर्द बहुत जल्द दूर हो जाता है

सलफर ३०, २००—पर्यायक्रमसे कब्ज और अति सारके साथ बवासीर, सवेरे बड़े वेगसे पाखाना लगता है बहुत जलन होती है। नक्स-वोमिकाके प्रयोगके बाद औ चुनी हुई दवासे फायदा न होनेपर इसका व्यवहार होता है

सभी तरहकी उत्तेजक और जल्द न पचनेवाली ची मांस, मछली, उड़द, बेल, कद्दू, पोईकी साग प्रभृति नुक सान करती हैं। इसीलिये, इन्हें सावधानता-पूर्वक त्या देना चाहिये। घुड़सवारीसे भी नुक्सान होता है। ओ परवल, भण्टा, मक्खन वगैरह फायदा करते हैं।

हिचकी ।

डायफ्राम अर्थात वक्ष और उदरकी बीचवाली पे: ग्लाटिस या श्वासनली द्वार अर्थात टेंटुआकी त्राण लिये अकड़नके साथ श्वास लेनेमें जो कर्कश आवाज हो उसको हिचकी कहते हैं। पेटकी साधारण-सी गड़ब कारण हिचकी या बच्चोंकी हिचकी भयकी बात नहीं है, कड़ा बोखार, हैजा तथा दूसरी दूसरी प्राणघातक बीमा में उपसर्गके रूपमें जो हिचकी पैदा हो जाती है, वह ३ जल्दी और सहजमें न बन्द हो जाये, तो बहुत जल्द जान लेनेवाली बन जाती है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३x, ६—बहुत तकलीफ और बेचैन सवेरे खाने-पीने बाद हिचकीका बढ़ना। हिचकीकी बढ़त मे रक्तकी अधिकता भी प्रकट होती है।

बेलेडोना ६—भयानक प्रकृतिकी हिचकी, दम घुटता है। हिचकी आधी रातके बाद बढ़ती है; होता है। आक्षेपिक हिचकी, रोगीके शरीरमें ... उठ आता है।

आर्सेनिक १२—कुछ पथ्य लिये बिना भी डकार

आना और उसके साथ ही हिचकी आने लगना। साधा-रण हिलने-डोलनेपर हिचकीका बढ़ना।

कैल्केरिया कार्ब ६x—पाकस्थलीमें जलनके साथ खट्टी डकार और हिचकी आती है।

कार्बोवेज ३०—थोड़ा-सा भी खानेपर हिचकी और खाने-पीने बाद भी जरासे कारणसे हिचकीका बढ़ जाना।

सिकुटा ६—बहुत जोरकी आवाजके साथ हिचकी, यही इस दवाकी विशेषता है। उल्टी, मिचली, सरमें दर्द, भूख न लगना या बहुत ज्यादा भूख लगना।

हायोसायमस ६—आधी रातके बाद बहुत जोर से हिचकी आने लगती है। अनजानमें पेशाब हो जाता है और मुँहमें फेन भर आता है। भोजनके बाद बहुत देरतक हिचकी आया करती है। पेटमें नश्तर लगवाने बाद हिचकी।

इग्नेशिया ३०—संध्याके समय खाने-पीनेके बाद और तम्बाकू खानेके बाद आनेवाली हिचकीमें यह उपयोगी है। बच्चेके मानसिक उद्वेग, बेचैनी और रातमें बहुत रोने बाद हिचकी आने लगे तो इससे बहुत फायदा होता है।

लाइकोपोडियम ३०—धूम-पान या भोज
बार बार बार हिचकी और पेट फूलना ।

नेट्रम-म्यूर ३०—बहुत किनाइन सेवन कर
बार हिचकी, मिचली और जम्हाई आना ।

नक्स-वोमिका ३०, २००—बिना किसी क
के ही हिचकी आने लगना, ठण्डा पानी पीनेपर हिच
बहुत ज्यादा खाने या धूमपानकी वजहसे हिचकी आना

पल्सेटिला ६, ३०—पानी पीने अथवा फल अ
खानेके बाद हिचकी । खट्टी डकारके साथ हिचकी ।

खुजली या गात्रकण्डु ।

इसमें न पकनेवाली फुन्सियाँ निकली हैं, बहुत खु
जाती हैं और त्वचाको बदरंग कर देनेवाला एक तर
बहुत होता है । साधारणतः मलद्वार, अण्डकोष
स्त्री-अंग प्रभृतिमें यह बीमारी होती है । पर हाथ-पैर
शरीरके अन्य स्थानोंमें भी यह हो जाया करती है । जी
गर्मीकी दवा, बहुत दिनोंतक कोई पुरानी बीमारी भोग
बुढ़ापेकी वजहसे कमजोरी, धातुदोष इत्यादि इस
कारण हैं ।

चिकित्सा ।

सलफर ३०, २००—साधारणतः रोगकी नयी अवस्थामें यह फायदेमन्द है ।

आर्सेनिक ३०—बीमारी पुरानी पड़ जानेपर इसकी श्रेष्ठ दवा है। कमजोरीके साथ बहुत जलन रहना ।

एकोनाइट ३०—यदि इसके साथ ही बोखार भी हो तो यह फायदा करता है ।

इग्नेशिया ३०—मच्छड़ काटनेकी तरह छोटी छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं ।

पेट्रोलियम ६—सूखी और रुखड़ी त्वचा और गरमीसे रोग वृद्धिके लक्षणमें यह फायदा करता है ।

मर्क-सोल ३०—शय्यापर सोनेसे और शय्याव गरमीसे अगर रोग बढ़े तो यह फायदा करता है ।

खुली हवाका सेवन और ठण्डे पानीसे नित्य नहाना ल करता है। अगर बहुत अधिक कमजोरी हो तो कुछ ग पानीसे नहाना चाहिये। उत्तेजना पैदा करनेवाली खाना-पीना एकदम त्याग देना चाहिये ।

दवा सूखे और साफ घरमें रखें। धूप, तेज गन्ध, धूलके कण, धूआँ प्रभृति बक्समें न जाने चाहियें। कपूर, ऐलोपैथिक दवाएँ, सुगन्धवाले पदार्थ, तेज गन्धवाली चीजें, होमियोपैथिक दवाके गुण नष्ट कर देती हैं। इसलिये, इन चीजोंको दवाके बक्सके पास न रखना चाहिये। जहाँ दवा रहे, वहाँ धूप या धूना न देना चाहिये।

औषध प्रयोग-विधि।

दवा साफ उत्तम पानीमें देनी चाहिये। जहाँ अच्छा पानी न मिले, वहाँ दूधकी चीनी (sugar of milk) या गोली अथवा छोटी गोलीमें मिलाकर देनी चाहिये। विचूर्णवाले द्रव्य मुँहमें छोड़ देनेसे ही काम हो जाता है अथवा मुँहमें डालकर थोड़ा-सा पानी पी लेना चाहिये। दवा खानेके पहले मुँह अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिये। दवा सेवनके कमसे कम आधा घण्टा पहले और बाद कुछ खाना या तम्बाकू वगैरह न पीना चाहिये।

दूधकी चीनी क्या है और उसका व्यवहार।

इसे अँगरेजीमें 'शुगर आफ मिल्क' कहते हैं, यह दूधसे तैयार की जाती है। गरम दूधमें कोई एसिड या नेबूका रस देनेपर दूध फट जाता है और छाना तथा पानी अलग अलग हो जाता है। इसीको 'छानाका पानी' कहते हैं।

2

ग्रैफाइटिस ३०, २०० —शहदकी तरह रस बहने-
ाले तथा कानके पीछे, हाथकी अंगुलियोंमें, घुटने तथा
होहनीके एकजिमामें यह ज्यादा फायदा करता है।

सिकुटा ३०—पुरुषोंकी दाढ़ीमें होनेवाले एक-
जिमामें लाभदायक है।

वोविस्टा ३०—हाथके पिछले भागके एकजिमामें।

जखम।

चोटकी वजहसे या किसी रोगमें त्वचा या श्लैष्मिक
झिल्लीका कोई अंश नष्ट होकर अगर वहाँ पीव हो जाये और
पीव तथा किसी दूसरी तरहका स्राव निकलता हो तो उसे
जखम कहते हैं।

चिकित्सा।

एसिड-नाइट्रिक ३०, २००—नाना प्रकारके
जखममें इसका प्रयोग होता है। मुँहका जखम, पारा सेवन
करने और उपदंशके जखममें यह ज्यादा फायदा करता है।
जखममें सफ़ेद फूसी (slough) की तरह जमा रहना,
किनारे समान न रहना। जखमसे सहजमें खूनका स्राव

अकौता या एकजिमा।

जलन, खुजली और दर्दके साथ चर्म्मके ऊपर छोटे छ
दाने निकलनेपर उसे अकौता कहते हैं। एकजिमा शर
के सभी स्थानोंमें हो सकता है। पुठे, कान इत्यादि अंग
जोड़ या सन्धिवाले स्थानोंमें यह अधिक होता देखा जात
है। बच्चोंका माथा और कानके पीछे भी एक तरहका एक
जिमा होता है, पैर और घुटनेमें भी एकजिमा होता है।
जो हमेशा चीनी, मयदा, चूना इत्यादिका कारबार करते हैं,
उनके हाथमें एकजिमा होता दिखाई देता है।

चिकित्सा।

ग्रैफाइटिस ३०, २०० —शहदकी तरह रस बहनेवाले तथा कानके पीछे, हाथकी अंगुलियोंमें, घुटने तथा कोहनीके पकजिमामें यह ज्यादा फायदा करता है।

सिकुटा ३०—पुरुषोंकी दाढ़ीमें होनेवाले पकजिमामें लाभदायक है।

वोविस्टा ३० —हाथके पिछले भागके पकजिमामें।

जखम ।

चोटकी वजहसे या किसी रोगमें त्वचा या श्लैष्मिक झिल्लीका कोई अंश नष्ट होकर अगर वहाँ पीव हो जाये और पीव तथा किसी दूसरी तरहका स्राव निकलता हो तो उसे जखम कहते हैं।

चिकित्सा ।

एसिड-नाइट्रिक ३०, २००—नाना प्रकारके जखममें इसका प्रयोग होता है। मुँहका जखम, पारा सेवन करने और उपदंशके जखममें यह ज्यादा फायदा करता है। जखममें सफेद फूसी (slough) की तरह जमा रहना, किनारे समान न रहना। जखमसे सहजमें खूनका स्राव।

कुल नहीं रहती, पसीना बहुत थोड़ा होता है और वह भी चेहरा या हाथ-पैरोंमें होता है। बोखार उतर जानेपर इग्नेशियाका रोगी भले चँगे मनुष्योंकी तरह काम-काज कर सकता है, पर सिर्फ पुराने बोखारमें ही ऐसा दिखाई देता है।

इपिकाक ३०—किनाइनसे रोका हुआ बोखार तथा खाने-पीनेकी गड़बड़ीसे जो बोखार फिरसे दोहरा जाता है, उसमें "इपिकाक" बहुत फायदा करता है। इपिकाकका एक खास लक्षण है, सभी अवस्थाओंमें भयानक मिचली। डा० जार, अपने ४० वरसोंके तजुर्वोंके अनुसार, जब कोई विशेष लक्षण न मिले तो इपिकाक ३० देकर सविराम ज्वर का इलाज करनेकी सलाह देते हैं, ऐसा करनेपर उन्हें बहुत फायदा दिखाई दिया है और कई जानकार चिकित्सक उनके इस मतका समर्थन भी कहते हैं, पर इसके अलावा कितनों-हीका ऐसा भी कहना है, कि ऐसा इलाज होमियोपैथिक नियमके विरुद्ध है, यह मत कभी उचित समझकर माना नहीं जा सकता। ज्वरके पहलेवाली अवस्थामें अंगड़ाई लेना, जम्हाई आना, मिचली और मुँहमें बहुत थूक भर आना, शीतके समय बिलकुल ही प्यास न रहना, बाहरी उत्तापसे शीतका बढ़ना, तापवाली अवस्थामें प्यासका मौजूद रहना, ताप बहुत देरतक बना रहना, छातीमें भार, साँस

अकौता या एकजिमा।

जलन, खुजली और दर्दके साथ चर्म्मके ऊपर छोटे छोटे दाने निकलनेपर उसे अकौता कहते हैं। एकजिमा शरीर के सभी स्थानोंमें हो सकता है। पुठे, कान इत्यादि अंग जोड़ या सन्धिवाले स्थानोंमें यह अधिक होता देखा जाता है। बच्चोंका माथा और कानके पीछे भी एक तरहका एकजिमा होता है, पैर और घुटनेमें भी एकजिमा होता है। जो हमेशा चीनी, मयदा, चूना इत्यादिका कारबार करते हैं, उनके हाथमें एकजिमा होता दिखाई देता है।

चिकित्सा।

रासटक्स ३—साधारण एकजिमाकी बढ़िया दवा है।

एकोनाइट ३—अगर एकजिमाके साथ ज्वर रहे और [illegible] ठंडी सूखी हवा लगकर बीमारी हुई हो तो यह उपयोगी होता है।

बेलेडोना ३०—चमकीले लाल रंगके दानेवाले एकजिमामें इसका प्रयोग होता है।

क्रोटन टिग ३—छिद्रयुक्त एकजिमामें उपयोगी है। इसमें बहुत खुजली होती है।

ग्रैफाइटिस ३०, २०० —शहदकी तरह रस बहने-वाले तथा कानके पीछे, हाथकी अंगुलियोंमें, घुटने तथा कोहनीके एकजिमामें यह ज्यादा फायदा करता है ।

सिकुटा ३०—पुरुषोंकी दाढ़ीमें होनेवाले एक-ज़ेमामें लाभदायक है ।

वोविस्टा ३०—हाथके पिछले भागके एकजिमामें ।

जखम ।

चोटकी वजहसे या किसी रोगमें त्वचा या श्लैष्मिक झिल्लीका कोई अंश नष्ट होकर अगर वहाँ पीव हो जाये और पीव तथा किसी दूसरी तरहका स्राव निकलता हो तो उसे जखम कहते हैं ।

चिकित्सा ।

एसिड-नाइट्रिक ३०, २००—नाना प्रकारके जखममें इसका प्रयोग होता है । मुँहका जखम, पारा सेवन करने और उपदंशके जखममें यह ज्यादा फायदा करता है । जखममें सफेद फूसी (slough) की तरह जमा रहना, किनारे समान न रहना । जखमसे सहजमें खूनका स्राव ।

ज़ख़ममें पानी लगनेपर तकलीफ बढ़ती है, कांटीसे ख
और जलनकी तरह मालूम होना इसका विशेष लक्षण है

एसिड सल्फुरिक ३०—बच्चोंके मुँह और ग
घावमें यह फायदेमन्द है। कुछ हल्की पीले रंगकी
भरा ज़ख़म, इसके साथ ही बच्चेका खट्टी गन्ध मिला
गला दूध के करना।

आर्सेनिक ३०, २००—छिछला ज़ख़म, ज़ख़
स्राव मैला और खून मिला रहता है। बेहद जलन, अ
रातके समय बढ़ना। मुँह और जीभके ज़ख़ममें यह फा
करता है।

आयोडिन ३०, २००—स्क्रोफुला या कण्ठम
धातुवाले मनुष्योंके जलन-और रक्तस्रावी ज़ख़ममें यह उ
फायदा करता है।

कार्बोवेज ३० बदबूदार तथा रातमें जलन बढ़
वाले ज़ख़ममें यह बहुत अधिक फायदा करता है।

हिपर सल्फर ३०, २००—छिछला सुस्ती त
घाव (superficial indolent ulcer) अर्थात जो ज़
जल्दी आराम नहीं होता तथा ज़ख़ममें सड़े पनीरकी त
गन्ध निकलती है। ज़ख़मके चारों ओर बेहद दर्द।

मर्क्युरियस ३०—बहुत दिनोंके नासूरके ज़ख़
यह लाभदायक है। उसमेंसे पानीकी तरह पीब निकलना

नेट्रम-सल्फ ३०—बहुत दिनोंके पुराने नासूरमें यह फायदा करता है। नासूरसे पानीकी तरह पीव बहा करता है।

प्लम्बम-मेटालिकम ३०—जखम काला हो जाता है, वहाँ सड़ना आरम्भ होनेकी तैयार हो जानेपर इसका व्यवहार होता है।

साइलिसिया ३०, २००—यह नासूरकी प्रधान दवा है। फोड़ेका पीव सूखता नहीं।

सलफर ३०—पुराने जखममें ज्यादा फायदा करता है।

स्फोटक या फोड़ा ।

फोड़ेकी शकल मटरसे लेकर अण्डेके बराबरकी हो सकती है। रोगवाली जगहपर पहले सूजन पैदा हो जाती है, उसमें प्रदाह और दर्द रहता है। इसके बाद धीरे धीरे उसकी सूजन कड़ी हो जाती है और उसमें धीरे धीरे पीव पैदा होने लगता है। पीव पैदा होनेपर उसमें टपककी तरह दर्द होता है। कितने ही कारणोंसे रक्त दूषित होकर फोड़ा पैदा हो जाया करता है।

तो पकाकर फाड़ भी देता है, पकाकर फाड़नेके लिये कितने
ही मनुष्य तुतमलंगाकी पोल्टीस व्यवहार किया करते हैं।

सड़नेवाला फोड़ा या कार्बङ्कल।

यह एक बड़ा घेरा बाँधकर पैदा होनेवाला, एक तरहका
दूषित फोड़ा है। जिन स्थानोंकी त्वचाके नीचेकी बनावटके
उपादान घने हैं तथा तन्तुमय हो रहे हैं, जैसे चूतड़, पीठ
इत्यादि, वहीं यह विषैला फोड़ा हुआ करता है। अधिक उमर
में जब शरीर कमज़ोर हो पड़ता है, उसी समय यह फोड़ा
हो सकता है। इसमें बेतरह जलन होती है। इसमें बहुत-सा
मुँह होकर पानीकी तरह पतला पीवका स्राव हुआ करता है।

चिकित्सा।

एन्थ्रासिनम ३०, २००—कार्बङ्कलकी यह एक
बेजोड़ श्रेष्ठ दवा है। आर्सेनिकके बाद या आर्सेनिकके
प्रयोगसे फायदा न होनेपर, इसका प्रयोग होता है। कार्ब
ङ्कलमें बहुत-से छोटे छोटे छेद होते हैं। उनसे पतल
पानीकी तरह पीव निकलता है, आधी रातके बाद बोझ
तथा दूसरे दूसरे उपसर्ग बढ़ जाते हैं। बेतरह जलन, रो
जलन दूर करनेके लिये, उसपर पानी डालना चाहता है

टैरैण्टुला ६, ३०—आर्सेनिक और पेन्थ्रासिनमकी तरह कार्वङ्कलमें भयानक जलन, इतनी जलन कि रोगी सहन नहीं कर सकता, बेचैन, प्यास, ज्वरका ताप बढ़ा हुआ १०-४°।१०५°, भीतरी तकलीफ और मानसिक उद्वेग देखते ही वह रोगी 'एकोनाइट' का मालूम होता है, पर कार्वङ्कलमें एकोनाइटसे कोई लाभ नहीं होता। उसके बदले 'टैरेण्टुला' ३० ही व्यवहृत होता है।

अँगुलबेढ़ा।

प्रदाह, दर्द और पीव पैदा होनेकी जब सम्भावना हो जाती है तो अँगुलीकी उस सूजनको अँगुलबेढ़ा कहते हैं। नख कटवानेके समय चमड़ेका कट जाना, अँगुलीमें चोट लगना, जल जाना इत्यादि कारणोंसे अँगुलबेढ़ा हुआ करता है।

चिकित्सा।

सभी अवस्थामें 'साइलिसिया' ३० इसकी उत्कृष्ट दवा है, पर पहली अवस्थामें ज्वर, टपककी तरह दर्द इत्यादि लक्षण रहें तो 'बेलेडोना' ६, से बहुत फायदा होता है। इस अवस्थामें कितने ही 'साइलिसिया' ३० के साथ पर्याय-

कमरे भी इसका व्यवहार किया करते हैं। डा० लियु
कहा है, कि 'साइलिसिया' ३० अथवा 'फ्लुरिक एसि
३० के प्रयोगसे बीमारी अंकुर अवस्थामें ही आरोग्य
जाती है। रोग अच्छी तरह प्रकट हो जानेपर कितनी
बार नश्तर लगवानेकी जरूरत होती है। इस अवस्
'हिपर-सल्फर' ३०, २०० का प्रयोग करनेपर जलन
तकलीफ सब घट जाती है। यदि दुबारा रोगका आक्र
हो जाये तो दुबारा 'साइलिसिया' २०० देना चाहि
तेज प्यास, जलन, डंकका दर्द, बेचैनी प्रभृति लक्षण
'आर्सेनिक' ३० या 'टैरेण्टुला' ३० व्यवहृत हुआ करता

नेबू, बैंगन या पत्थरमें छेदकर अंगुली उसमें घुसा
रखनेसे बहुत फायदा होता है। नमक मिले गरम पान
उसमें डुबो रखनेसे भी फायदा होता है।

विष-फोड़ा।

बैसिलस एन्थ्रासिस नामका एक तरहका ज़हर
बीमारीका मूल कारण होता है। यह ज़हर शरीरमें प्रवे
करके ही ज़हर फैलाया करता है। रोगवाली ज
लाल हो जाती है और सूज उठती है। इसके बाद
नी फुन्सियाँ हो जाती हैं और फिर वह फटकर जा

हो जाता है। अगर बीमारी कड़ी होती है तो तेज बोखार, मिचली, वमनेच्छा, पतले दस्त आना, पसीना वगैरह लक्षण पैदा हो जाते हैं।

आर्सेनिक ३०—बहुत जलन, बेचैनी, भीतरी तकलीफ और प्यास रहनेपर इसका प्रयोग होता है।

एन्थ्रासिनम ३०, २००—इसके लक्षण भी आर्सेनिककी तरह ही हैं, पर इसमें जलन बहुत ज्यादा होती है, रोगी बहुत बेचैन हो पड़ता है। खून खराब होकर इस ढङ्गके लक्षण प्रकट होते हैं।

हाइपेरिकम ६—आरम्भ अवस्थामें इस दवाके व्यवहारसे विशेष लाभ होता है।

लैकेसिस ३०—यदि फुन्सियाँ नीली आभा लिये हों, भयानक जलन और सड़ जानेकी सम्भावना रहनेपर यह उपयोगी है।

एपिस ३०—बहुत सूजन और लाली, उसमें डंक मारनेकी तरह दर्द रहनेपर यह फायदा करता है।

कार्बोवेज ३०—बहुत जलन और बहुत ज्यादा पसीना होकर यदि रोगीको शीत आ जाये तो इसका प्रयोग होता है।

सिकेलि कोर ६—सड़न या गेंग्रीन आरम्भ होनेपर यह ज्यादा फायदा करता है।

बिछावनकी गरमीसे खुजली पैदा हो जाना। यह खुजली इतनी बढ़ जाती है, कि असह्य हो उठती है। अँगुलियोंके गासेमें अकौता या खजली होती है, चमड़ा बहुत ही गन्दा, ऐसा मालूम होता है, मानो रोगीने कभी स्नान न किया हो।

सिपिया ३०—बहुत खुजली, पर खुजलानेपर जलन होती है। सूखी खुजलीकी तरह दाने निकलते हैं।

सलफर ३०, २००—यह खजलीकी एक बहुत बढ़िया दवा है। खासकर यदि मलहम आदि बाहरी दवाएँ व्यवहार करनेके कारण नाना प्रकारके उपसर्ग पैदा हो जायं तो इससे बहुत ही अधिक फायदा होता है।

बहुतोंका मत है कि सवेरेका नहाना बहुत फायदा करता है। रोज बालू मलकर खुजलीका दाना धोनेपर जल्दी आराम हो जाता है। नीमका पत्ता सिझाए हुए पानीसे खुजली धोनेपर या नीमका तेल लगानेपर ज्यादा फायदा होता है।

दद्रु या दाद

ऊँची शक्तिका 'वेसिलिनम' (२००, १म या उससे भी अधिक), सप्ताह, पक्ष या महीनेके अन्तमें व्यवहार करनेपर

बहुत फायदा होता है। अंगुलीकी तरहकी दादकी 'सि
३० बढ़िया दवा है। 'नेट्रम-सल्फ' २०० कितनोंक
बहुत अधिक फायदा करता है। 'टल्यूरियम' ३० इ
एक दूसरी उत्कृष्ट दवा है। ग्रेफाइटिस २००, नाइ
एसिड २००, मर्कुरियस ३०, फास्फोरस ३०, सल्फर
इत्यादि दवाएँ भी कितनी ही बार बहुत फायदा करती

उपदंश या सिफिलिस।

बाद वह हार्ड सैंकर या कठिन क्षतमें परिणत हो जाती है। पुट्ठे या वलगमकी गाँठ फूलती है। पुट्ठेकी गाँठको वाघी कहते हैं। यह इसकी प्राथमिक अवस्थाका लक्षण है।

दूसरी अवस्थामें—कठिन क्षत होनेके दो महीने के बीचमें ही बोखार, हड्डियोंमें दर्द, गलेमें जखम और नाना प्रकारके उद्भेद, बदनपर चकत्ते इत्यादि प्रकट होते हैं। नखमें भी विकार पैदा हो जाता है। सरके केश झड़ जाते हैं। आइराइटिस अर्थात आँखका उपतारा-प्रदाह पैदा हो जाता है।

तीसरी अवस्थामें—प्रायः डेढ़ वर्ष बाद गामाटा निकलता है अर्थात अण्डकोष, जरायु, यकृत, मस्तिष्क, चर्म, अस्थि, वगैरह शरीरके सभी अंग-प्रत्यंग और यंत्रोंमें अर्वुद या टियुमर (बतौड़ी) सा प्रकट हो जाती है।

कोमल जखमवाला उपदंश संगमके तीसरे ही दिन निकल आता है। यह सङ्गमेन्द्रियपर होता है। एकसे अधिक जखम हो जाता है, देखनेमें यह साधारण ही जखम की तरह होता है। इसके प्रायः तीसरे सप्ताहके बाद वाघी होती है। कोमल क्षतवाला उपदंश साधारणतः दो महीनोंमें अच्छा हो जाता है।

चिकित्सा।

मर्कुरियस सोल्युब्लिस ३x, ६x (विचूर्ण),

आर्सेनिक ३०, २००—सड़नेवाला जखम, गैंग्रीन, बदबूदार पतला स्राव, रोगी गरममें अच्छा रहता है। के समय रोगका बढ़ना, सुस्ती, बेचैनी, छटपटी।

थूजा ३०, २००—बहुत ज्यादा मासांकुरवाले समान लीके जखममें यह ज्यादा फायदा करता है।

साइलिसिया ३०, २००—जखमसे बदबू भरा पतला स्राव निकलना, कण्ठमालाग्रस्त मनुष्योंके लिये यह विशेष फायदेमन्द है।

सलफर ३०, २००—सोरा दोष युक्त व्यक्तियोंके लिये यह उपयोगी है, कोई दवा जब ठीक ठीक रीतिके अनुसार काम नहीं करती है, तब इसकी जरूरत पड़ती है।

आरम मेटालिकम ३०, २००—पहले पारेका अपव्यवहार हुआ रहनेपर यह इस अवस्थाकी एक बढ़िया दवा है। नाककी हड्डीमें जखम, उससे बदबूदार पीव निकलना, सर्दीका बिलकुल ही सहन न होना। नाककी हड्डीपर रोगका आक्रमण होकर टुकड़े टुकड़े हड्डी निकलती है। ज्यादा पाराके अपव्यवहारके कारण मुँहके भीतर तालु[illegible] जखम।

कार्बो-एनिमेलिस ६, ३०—पत्थरकी तरह क[illegible] घावो और बड़े तथा कड़े घावमें यह लाभ करता है।

ग्लोब्यूल्स और २५ से ८० तकको पिल्यूल्स कहते हैं। जहाँ अच्छा पानी नहीं मिलता, वहाँ इनके सहारे ही रोगीको दवा दी जाती है, इसके अलावा यदि सूक्ष्म मात्रामें दवा देनी होती है, तो वह भी इनके ही सहारे दी जाती है। एक बूँद तरल ओषधिसे १५ नं० के २०० ग्लोब्यूल तर हो जाते हैं। अवस्थाके अनुसार २।१ ग्लोब्यूल एक मात्राका काम देते हैं।

थर्मोमिटरका व्यवहार।

थर्मोमिटरका व्यवहार यह जाननेके लिये ही किया जाता है, कि रोगीके शरीरमें बोखार कितनी डिग्री है। यह प्रायः सबने ही देखा है, कि थर्मोमिटर क्या चीज है इसी-लिये उसके विषयमें कुछ लिखना अनावश्यक है। परन्तु यहाँ बता दिया जाता है, कि थर्मोमिटर किस तरह देखा जाता है। थर्मोमिटरमें साधारणतः ६५° डिग्री (डिग्रीका चिन्ह °) से ११०° डिग्री तककी लकीरें रहती हैं। इससे कम या अधिककी जरूरत ही नहीं पड़ती। क्योंकि यदि शरीरका ताप ६५° से भी कम हो जाता है, तो उसे कोलैप्स (शीत आ जाना) की अवस्था कहते हैं और इस अवस्थामें रोगीके जीवनकी आशा नहीं रहती। १०७° या १०८° या उससे भी ऊपर चढ़नेपर रोगीकी मारात्मक अवस्था आ पहुँचती है। मैलेरिया ज्वरमें १०६°।७° ज्वर चढ़ सकता है पर यह ताप ज्यादा देरतक न ठहरे तो भयकी कोई व

क्लिपर सलफर ३०, २००—पाराके अपव्य
की वजहसे नाना प्रकारके उपसर्गोंमें यह व्यवहृत होता

सहकारी उपाय—रोगवाली जगहको
साफ रखना जरूरी है। लिंगमुण्डमें कुछ गरम "केलेण्
लोशनकी पिचकारी दी जा सकती है। अगर जग
बहुत दर्द होता हो तो उसको भी इस तरह धोनेसे
फायदा होता है। कोई दूसरा मल्हम लगाना उचित
है। इससे बीमारी बढ़कर जटिल हो जाती है।

पथ्य आदि—शराब, मछली, मांस और गरम म
की गरम चीजें जहरकी तरह त्याग देनी चाहियें।
मक्खन, घी और घी की बनी चीजें खाना उत्तम है।
रोगमें नियमित भोजन ज्यादा फायदा करता है। रो
अगर बहुत सुस्त हो पड़े तो मांसका जूस दिया ज
सकता है।

सूजाक या प्रमेह।

दूषित संसर्गके कारण सूजाकका रोग एक व्यक्तिसे
[illegible] दूसरे व्यक्तिमें प्रवेश कर जाता है। इसी तरह
यह बीमारी पैदा होती है। इसके [illegible]

कहते हैं। हिन्दीमें सूज़ाक कहलाता है। पुरुषकी मूत्रनली और स्त्रियोंके प्रसवद्वारमें इसमें प्रदाह हो जाता है। रोग-वाली जगहसे पीवकी तरह स्राव निकलता है। यह सूज़ाक का पहला लक्षण है।

दूषित संगमके बाद, दो से लेकर आठ दिनोंके भीतर, [त]ब लक्षण प्रकट होते हैं। पर इसके विपरीत भी होता किसी किसीको चौदह दिनोंके पहले लक्षण प्रकट [न]हीं होते और किसी किसीको कई घण्टोंके भीतर ही [बी]मारी प्रकट हो जाती है।

चिकित्सा।

एगनस कैक्टस ३०—प्रदाहका लक्षण दूर होने-पर इसका व्यवहार होता है; स्राव पीवकी तरह पीले रङ्ग-का होता है, लिङ्गमें कड़ापन नहीं आता है, पर सङ्गमकी इच्छा बहुत अधिक रहती है।

आर्सेनिक ३०, २००—जलन करनेवाला स्राव, जहाँपर लगता है, वहीं अकड़न होती है और खाल उधड़ जाती है, मूत्रनलीके भीतर नोच फेंकनेकी तरह दर्द होता है। डा० वारजो कहते हैं, यह स्त्रियोंके प्रमेहमें ज्यादा फायद[ा] करता है।

मर्क्युरियस ३०, २००—उपदंश या उल्टी चमड़ी रोगके साथ अगर सूजाक भी मिला रहे तो यह ज्यादा फायदा करता है। खासकर यदि इसके पहले ज्यादा पारा न सेवन किया गया हो, रातमें बढ़नेवाला पीली आभा लिये हरा अथवा पीव मिला स्राव होनेपर यह फायदा करता है।

नाइट्रिक एसिड ३०, २००—पाराके अपव्यवहार के बाद इसके सेवनसे बहुत फायदा होता है, खासकर जब जखम या लिङ्ग आदिका प्रदाह मौजूद रहनेका लक्षण रहता है।

नक्स-वोमिका ३०, २००—एलोपैथिक चिकित्सकों द्वारा कोपेवा, क्युवेव और दूसरी दूसरी तेज दवाओं से इलाज होनेपर यह बहुत सफलता-पूर्वक व्यवहृत होता है। बहुत ज्यादा कामेच्छा बनी रहती है।

सलफर ३०, २००—मूत्रनलीके छेदवाली राहमें जलन, बार बार पेशाब करनेकी इच्छा, पेशाब खूब महीन धारमें निकलना, कण्ठमाला धातुवाले मनुष्योंको अन्तर देकर दी जानेवाली दवाओंमें यह बहुत लाभदायक है।

पथ्य आदि—इस रोगमें निरामिष भोजन ही करना चाहिये। तेल, मिर्चा, गरम चीजें, मांस, मछली वगैरह विषकी तरह त्याग देना चाहिये।

कैलि-आयोड ३०—गले हुए जखमके साथ वाघी होनेपर यह उपयोगी है।

नाइट्रिक एसिड ३०, २००—यदि पाराका बहुत ज्यादा सेवन हुआ हो तो इसके बाद बहुत फायदा करता है

साइलिसिया ३०, २००—नश्तर लगवाने बा जखमको सुखानेके लिये और नासूरमें ज्यादा फायद करता है।

पथ्य—दूध रोटी तथा दूसरी दूसरी पुष्ट करनेवाल चीजें खानी चाहियें। यदि बोखार न रहे तथा आरा होनेकी ओर बढ़नेवाली अवस्थामें भात दिया जा सकता है मांस, मछली इस रोगमें कुपथ्य हैं। इसलिये, इन्हें त्या देना चाहिये।

स्वप्नदोष या स्पर्माटोरिया।

मूत्रनलीकी राहसे जभी तभी या निद्रावस्थामें वि कामकी उत्तेजना हुए ही यदि बार बार वीर्यपात हो उसे शुक्रमेह कहते हैं। इसका मुख्य कारण जननेन्द्रि कमजोरी या उपदाह है, पर जवानी आनेपर बहुत ज्य हस्तमैथुन, ज्यादा स्त्री-सहवास इसके गौण कारण हैं। बहुत ज्यादा कब्जियत, बवासीर, मूत्राशयका उपदाह, कु

. होती है। रोगी सभी विषयोंमें उत्साह-रहित रहता कोई भी काम करनेकी इच्छा नहीं होती।

डायस्कोरिया ६, ३०—रातभर औरतोंके सपने . है और एक रातमें एकसे अधिक बार स्वप्नदोष इस दवासे बहुत अधिक फायदा होता है।

लाइकोपोडियम ३०, २००—हस्तमैथन या बहुत स्त्री-सहवासके कारणसे शुक्रमेह।

नक्स-वोमिका ३०, २००—ईर्षालु, द्वेषी और को... मनुष्योंके लिये उपयोगी है, मानसिक परिश्रमका सामर्थ्य न रहना, उत्तेजक भोजन आदि करनेपर रातके समय अश्लील सपने देखनेके साथ ही वीर्य-स्खलन हो जाता है। सवेरा होनेके समय बार बार स्वप्नदोष।

फास्फोरिक एसिड १x, ३०—बहुत दिनोंके वीर्यक्षयका जब यह नतीजा होता है कि शुक्रमेह हो जात है, उस समय इससे बहुत फायदा होता है। सभी स्नायु सुस्त, कमजोर, पीठ, जाँघ और घुटना कमजोर, स्वप्नदो या संगमके बाद बहुत कमजोरी मालूम होना।

फास्फोरस ३०, २००—लम्बे तथा दुबले पत आदमियोंके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है। बार ब तकलीफ देनेवाला लिङ्गमें कड़ापन होना और वीर्य निक जाना। स्त्री-सहवासकी बहुत अभि

मालूम होती है। रोगी सभी विषयोंमें उत्साह-रहित रहता है, कोई भी काम करनेकी इच्छा नहीं होती।

डायस्कोरिया ६, ३०—रातभर औरतोंके सपने देखता है और एक रातमें एकसे अधिक बार स्वप्नदोष होनेपर इस दवासे बहुत अधिक फायदा होता है।

लाइकोपोडियम ३०, २००—हस्तमैथन या बहुत ज्यादा स्त्री-सहवासके कारणसे शुक्रमेह।

नक्स-वोमिका ३०, २००—ईर्षालु, द्वेषी और क्रोधी मनुष्योंके लिये उपयोगी है, मानसिक परिश्रमका सामर्थ्य न रहना, उत्तेजक भोजन आदि करनेपर रातके समय अश्लील सपने देखनेके साथ ही वीर्य-स्खलन हो जाता है। सवेरा होनेके समय बार बार स्वप्नदोष।

फास्फोरिक एसिड १x, ३०—बहुत दिनों वीर्यक्षयका जब यह नतीजा होता है कि शुक्रमेह हो जा है, उस समय इससे बहुत फायदा होता है। सभी स्ना सुस्त, कमजोर, पीठ, जाँघ और घुटना कमजोर, स्वप्नद या संगमके बाद बहुत कमजोरी मालूम होना।

फास्फोरस ३०, २००—लम्बे तथा दुबले प आदमियोंके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है। बार तकलीफ देनेवाला लिङ्गमें कड़ापन होना और वीर्य नि जाना। स्त्री-सहवासकी बहुत अधिक इच्छा।

…ालूम होती है। रोगी सभी विषयोंमें उत्साह-रहित रहता है, कोई भी काम करनेकी इच्छा नहीं होती।

डायस्कोरिया ६, ३०—रातभर औरतोंके सपने देखता है और एक रातमें एकसे अधिक बार स्वप्नदोष होनेपर इस दवासे बहुत अधिक फायदा होता है।

लाइकोपोडियम ३०, २००—हस्तमैथुन या बहुत ज्यादा स्त्री-सहवासके कारणसे शुक्रमेह।

नक्स-वोमिका ३०, २००—ईर्षालु, द्वेषी और क्रोधी मनुष्योंके लिये उपयोगी है, मानसिक परिश्रमका सामर्थ्य न रहना, उत्तेजक भोजन आदि करनेपर रातके समय अश्लील सपने देखनेके साथ ही वीर्य-स्खलन हो जाता है। सवेरा होनेके समय बार बार स्वप्नदोष।

फास्फोरिक एसिड १x, ३०—बहुत दिनोंके वीर्यक्षयका जब यह नतीजा होता है कि शुक्रमेह हो जात… है, उस समय इससे बहुत फायदा होता है। सभी स्ना… सुस्त, कमजोर, पीठ, जाँघ और घुटना कमजोर, स्वप्न… या संगमके बाद बहुत कमज़ोरी मालूम होना।

फास्फोरस ३०, २००—लम्बे तथा दुबले … आदमियोंके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है। बा… तकलीफ देनेवाला लिङ्गमें कड़ापन होना और वीर्य… …ना। स्त्री-सहवासकी बहुत अधिक इच्छा।

ा आनन्द नहीं मिलता। इस ढङ्गकी अवस्थाको आंशिक
वजभंग कहा जाता है, पर वास्तविक या सम्पूर्ण ध्वजभंग
हनेपर इतना भी कड़ापन नहीं आता, पुरुषाङ्गमें एकदम
कड़ापन आता ही नहीं।

यदि क्षणिक ध्वजभंग हो तो भयकी कोई बात नहीं है।
तेज मनोविकार, बहुत दिनोंसे कमजोर करनेवाली बीमारी
वगैरह भोगनेके कारण ध्वजभंग हो जा सकता है। यह
सहजमें ही आराम हो जा सकता है। बहुत ज्यादा स्त्री-
सहवास, बहुत दिनोंतक हस्तमैथुनका अभ्यास और जनने-
न्द्रियकी दूसरी दूसरी बीमारियाँ सूजाक वगैरह कारणोंसे
ध्वजभंग। वह भी ठीक ठीक इलाज करनेपर आराम हो
जाया करता है। बहुत ज्यादा नशा खानेके कारण भी
कभी कभी ध्वजभंग होता देखा जाता है। यह भी सहजमें
ही आराम हो जाता है।

चिकित्सा।

शुक्रमेहमें जिन दवाओंका उल्लेख किया गया है। इस
रोगमें भी उनका ही प्रयोग होता है। उनके अलावा नीचे
लिखी दवाएँ भी व्यवहृत होती हैं।

डैमियाना ।—इसका १०।१५ बूँदकी मात्रामें
प्रयोग होता है। स्नायविक दुर्बलताकी वजहसे ध्वजभंग,

पाखाना पेशाबके समय वेग देनेपर शुक्रदाय हो जाना ध्वजभंगकी यह एक बहुत लाभदायक दवा है।

बैराइटा कार्ब ३०, २००—इन्द्रिय शक्तिकी क्षीणता, अण्डकोष शिथिल होकर दब जाता है और इसके चारो ओर बहुत पसीना होता है।

ब्युफो २००, १०००—इसका निम्नक्रम बहुत नुकसान करता है। यह ध्वजभंगकी बहुत श्रेष्ठ दवा है। यदि दूसरी दवाके प्रयोगसे लाभ न हो तो इसका प्रयोग करना चाहिये।

लाइकोपोडियम ३०—संगमकी इच्छाका एकदम न होना, स्मरण-शक्तिका घट जाना, स्त्री-सहवासके समय बहुत जल्द वीर्यपात हो जाना।

सैबाल सेरुलेटा θ—इसकी मात्रा ५।६ बूँद है। जोरीके कारण स्त्री-सहवासकी शक्तिका न रहना—इसमें यह विशेष फायदा करता है।

सहकारी उपाय—शुक्रमेहकी तरह।

पथ्य आदि—दूध, घी, मक्खन, रोहित मछली करनेवाली और ताकत बढ़ानेवाली चीजें खानी चाहियें।

प्रथम रजोदर्शनमें विलम्ब।

बारह, तेरह, वर्षकी उमरमें या किशोरीकी तन्दुरुस्ती और धातु तथा प्रकृतिके अनुसार चौदह पन्द्रह वर्षकी उमर में भी पहले पहल ऋतु हो सकता है। पर कितनोंको ही ऐसा भी हो जाता है कि जवानी आ जानेपर भी ऋतु नहीं होता। मुख्यकर कलेजा धड़कना, श्वासमें तकलीफ, दुःखित रहना, माथेमें भार मालूम होना, कमर और तलपेटमें दर्द प्रभृति इसके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

एपिस ३०—जो हमेशा काम काजमें लगी रहती हैं, कभी एक कभी दूसरा काम करती हैं, पर कोई भी काम ठीक ठीक नहीं कर सकतीं, हाथसे चीजें गिरकर टूट जाती हैं, पर इससे लज्जित होनेके बदले वे हँसती हैं, उनके लिये यह बहुत लाभदायक है। इसमें शरीरमें शोथका लक्षण भी दिखाई देता है।

चायना ३, ३०—किसी कड़ी बीमारीके बाद अथवा बहुत ज्यादा रसरक्तका क्षय हो जानेके कारण रोगिनी यदि बहुत कमजोर हो पड़े तो इसका व्यवहार होता है।

कैल्केरिया कार्ब ३०, २००—हृष्ट-पुष्ट और

कफ प्रधान धातुवाली स्त्रियोंके लिये यह लाभदायक इसमें ऋतु बन्द रहनेके साथ ही साथ तलपेटसे उ कनकनीकी तरह दर्द होता है।

फास्फोरस ३०, २००—लम्बी, पकहरी और र रोग-ग्रस्ता स्त्रियोंके लिये यह उपयोगी है। ऋतुके ब मलद्वार या मूत्रद्वारसे रक्तस्राव होता है।

पल्सेटिला ३०, २००—उमर हो जानेवाली बालि काओंको ऋतुके बदले श्वेत-प्रदर और देखते देखते रोगिण अगर बहुत सफेद पड़ती चली जाय तो यह फायदा करता है। पेटमें दर्द, भूख न लगना, अरुचि, नाकसे खून गिरना प्रभृति इसके साथके उपसर्ग हैं।

सिपिया ३०—ऋतुके बदले श्वेत-प्रदर और नाक से खून गिरना, कब्ज और मलद्वारमें भार मालूम होती है।

सल्फर ३०, २००—गोराङ्गीन और गण्डमाला धातुवाली जवान स्त्रियोंके लिये यह उपयोगी है। जिनको धातु-विकार होता है, उन्हें यदि माहवार ऋतुस्राव न होता हो तो मलद्वारके अर्शमें ज्यादा फायदा होता है। माथेकी चाँदी और हाथ-पैरके तलवोंमें जलन इत्यादि।

रजोलोप या एमिनोरिया।

एक बार ऋतु होनेके बाद किसी रोगकी वजहसे यदि उसका होना बन्द हो जाये तो, उसको रजोलोप या अङ्गरेजीमें एमिनोरिया कहते हैं। एकाएक डर जाना, सर्दी लगना, मानसिक उद्वेग, ऋतुके समय खाने-पीनेमें सावधान न रहना प्रभृति कारणोंसे रजोलोप हो जाया करता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३x, ३०—डकार या सर्दीसे बीमारीके पैदा होनेपर इसके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है। ज्वर, प्यास, मानसिक उद्वेग, नाड़ी भरी, तेज, कठिन प्रभृति इसके साथवाले उपसर्ग हैं।

एपिस ३, ३०—अगर डिम्बकोष फूलकर ऋतुस्राव होना बन्द हो जाये तो यह ज्यादा फायदा करता है, जो युवतियाँ हमेशा काममें लगी रहती हैं, पर कोई भी काम ठीक ठीक नहीं कर सकतीं, हाथसे चीज गिरकर टूट जाती है, पर उससे लज्जित न होकर हँसा करती हैं। इस तरहके मानसिक लक्षणवाली युवतियोंके लिये एपिस बहुत फायदेमन्द है।

कोलोसिन्थ ३, ६—यदि चिड़चिड़ापन ऋतुरोध हो जानेके कारण हुआ हो तो इसका व्यवहार होता है। पेटमें शूलकी तरह दर्द होता है, इसलिये रोगिनीको हाथ पैर सिकोड़कर बैठे रहना पड़ता है।

चायना ३, ३०—स्वाभाविक दुर्बलता या कोई दूसरी बीमारी बहुत दिनोंतक भोगनेके बाद यदि रोगिनी कमजोर हो पड़ी हो और इसी वजहसे ऋतु बन्द हो गया हो तो यह विशेष उपयोगी होता है।

कैल्केरिया-कार्ब ३०, २००—हृष्ट-पुष्ट और श्लेष्मा-प्रधान स्त्रियोंके ऋतुबन्ध रोगमें अत्यन्त उपयोगिताके साथ इसका व्यवहार होता है।

सिमिसिफ्युगा ६, ३०—वात रोगवाली स्त्रियोंको यदि सर्दी लगकर ऋतु बन्द हो गया हो तो इसका व्यवहार होता है। समूचे शरीरमें दर्द होता है।

पल्सेटिला ३०, २००—जवानी आरम्भ होनेके समयकी बीमारी। ऋतु न होकर बदलेमें श्वेत-प्रदर होना। पैरमें सर्दी लगकर या बहुत ज्यादा खट्टी चीज खाकर यदि ऋतु बन्द हो गया हो तो यह फायदा करता है। इसके सिवा चिड़चिड़ापनका भाव, पेटमें दर्द, पतले दस्त आना, भूख न लगना, अरुचि प्रभृति इसके आनुषंगिक लक्षण हैं।

सिपिया ३०, २००—ऋतु या तो एकदम बन्द रहता है अथवा बहुत थोड़ा होता है, इसके साथ ही श्वेत-प्रदर, कब्जियत और मलद्वारका भारी मालूम होना इत्यादि।

सलफर ३०, २००—यदि सोरा-दोष रहनेवाली अथवा कण्ठमाला धातुवाली स्त्रियोंको देरसे ऋतु होता हो अथवा एक बार होकर बन्द हो गया हो तो इसका प्रयोग होता है। हाथ-पैरोंमें जलन, कमजोरी, माथेकी चाँदी तथा आँखोंमें जलनका लक्षण इसमें दिखाई देता है।

जैन्थकजाइलम १x, ३०—यह दुबली-पतली स्त्रियोंके लिये फायदेमन्द है। पैरमें अधिक पानी लगना अथवा सर्दी लग जानेके कारण ऋतु बन्द हो जानेपर यह ज्यादा उपयोगी है।

आनुसंगिक चिकित्सा—इस रोगमें निर्मल हवाका सेवन और खुली हवा आनेवाले घरमें रहना, रोज ठण्डे पानीसे नहाना चाहिये, नियमित भावसे परिश्रम करना और स्वास्थ्य-रक्षाके नियमोंका पूरा पूरा पालन करना बहुत जरूरी है। मनको हमेशा प्रसन्न रखना भी बहुत फायदा करता है।

मैलेरियासे उत्पन्न बोखार।

Male और Aria इन दो इटैलियन शब्दोंको लेकर यह मैलेरिया शब्द बना है। इसका अर्थ है, बुरी या दूपित हवा।

Hœmatozoa of Laneran नामक जीवाणुको ही अब विद्वानोंने मैलेरियाका मुख्य कारण मान लिया है। एनोफेलिस नामक एक तरहके मच्छड़की देहमें यह जीवाणु पाया जाता है। यह मच्छड़ मैलेरियाको जीवाणुमें पहुँचाता है। जब यह किसी भले-चंगे आदमीको काटता है, तो मैलेरियाका जीवाणु उस मनुष्यके रक्तके लालकणमें घुस जाता है और बहुत ही थोड़े दिनोंमें समूचा खून दूपित बना डालता है।

प्रकार—मैलेरियामें सविराम ज्वर, स्वल्पविराम ज्वर और मैलेरियल कैकक्सिया अर्थात मैलेरियासे उत्पन्न धातु-विकार प्रधान हैं।

इनके अलावा एक तरहका सामान्य अविराम ज्वर (हलका लगातार बना रहनेवाला बोखार) भी दिखाई देता है। यह ज्वर अवस्थाके अनुसार एक दिन, दो दिन या तीन दिनोंतक रहता है और फिर छूट जाता है। सर्दी लग जाना, पानीमें भींजना, धूपमें घूमना अथवा बहुत ज्याद खाना-पीना प्रभृति इस ज्वरके प्रधान कारण हैं।

अतिरजः अर्थात जरायुसे बहुत रक्त जाना।

मासिक ऋतुके समय ज्यादा मात्रामें या अधिक दिनों तक बराबर ऋतुस्राव होते रहनेको अतिरजः या अंग्रेजीमें मेनोरेजिया कहते हैं। ऋतुके अलावा अन्य समय भी जरायुसे बहुत ज्यादा खूनका स्राव अगर हो तो उसे रक्त-स्राविक्य या अंग्रेजीमें मेट्रोरेजिया कहते हैं, पर असलमें दोनोंमें ही खून अधिक जाता है, इसलिये दोनोंका ही साधारण नाम रक्तस्राविक्य है।

चिकित्सा।

एकोनाइट १x, ३—डर कर अथवा सर्दी लगकर बीमारी पैदा हो जानेपर यह ज्यादा फायदा करता है। पेटमें दर्द, ज्वर, बेचैनी, मृत्युका-भय, प्यास इत्यादि इसके आनुषंगिक लक्षण हैं।

आर्निका ३, ३०—चोट लग जाना, गिर जाना या जरायुमें चोट लगना और इसी वजहसे मासिकके बाद ज्यादा रक्तस्राव होनेपर इसका व्यवहार होता है।

बेलेडोना ३, ३०—बहुत ज्यादा परिमाणमें चमकीले लाल रंगका गरम रक्तस्राव होनेके साथ, [illegible] मालूम

ोना कि योनिकी राहसे पेटकी सब नस-नाड़ियाँ बाहर निकल पड़ेंगी, मस्तिष्कमें रक्तसञ्चय, सरमें दर्द, सरमें चक्कर आता है, आँखें लाल हो जाती हैं।

चायना ३x, ३०—गर्भ-स्राव या प्रसवके बाद बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होनेपर यह फायदा करता है। यदि रोगिनी कमजोर हो पड़े तथा दूसरे रोगोंके कारण रोगिनी बहुत दुर्बल हो जाये और उसे रक्तस्राव होने लगे। कम-जोरीके कारण रोगिनीको अच्छी तरह कानसे भी नहीं सुन पड़ता, आँखसे दिखाई नहीं देता। बहुत चाय पीनेके कारण यदि रक्तस्राव हो तो यह लाभ करता है।

इपिकाक ३, ३०, २००—एक झोंकमें बहुत-चमकीला लाल रंगका पतला और ढेला ढेला खून नि जाना, पेटमें दर्द और हमेशा मिचली मौजूद रहती है।

नक्स-वोमिका ३०, २००—जल्दी जल्दी ज्यादा परिमाणमें और बहुत दिनोंतक होनेवाला ऋतु यह तेज स्वभाववाली स्त्रियोंके लिये उपयोगी है।

हैमामेलिस φ, ३x—जरायुसे काले रंग स्राव होना। चोट आ जानेके बादके रक्तस्रावों

ज्यादा परिमाणमें चमकीले लाल रंगका रक्तस्राव, चोट लगने बाद यदि लगातार लाल रंगका रक्तस्राव हो तो भी फायदा करता है।

फलेन्ड्रियम ३, ३०, २००—नम्र प्रकृतिवाली स्त्री, जिन्हें बातबातमें ही रुलाई आ जाती है, ऐसी स्त्रियोंको अधिक रक्तस्राव। इसमें समय रोग लक्षणोंका बढ़ना, खुली हवामें रोगिणीको आराम मालूम होना, पीठ, पेट, कमर इत्यादिके भागों और दर्द घूमता फिरता है।

सैबाइना ३x, ३०—चमकीले लाल रंगका थक्का थक्का रक्तस्राव, इसके साथ ही दर्द होता है।

सिकेलि-कार ३, ३०—रोगिणी, दुबली-पतली स्त्रियोंके लिये फायदेमन्द है। सारे शरीरमें झुनझुनी होती है।

लानेवाली चीजें देनी चाहियें, दूध उत्तम पथ्य है। मछली, मांस और दूसरी उग्रवीर्य चीजें न देनी चाहियें।

बाधकका दर्द या डिसमेनोरिया ।

इसका अङ्गरेजी नाम डिसमेनोरिया या पेनफुल मेनस्ट्रुएशन है। ऋतुके समय या उसके कुछ पहले ही या बाद, पीठ, कमर, जरायु, डिम्बकोष प्रभृति स्थानोंमें बहुत दर्दका लक्षण मौजूद रहनेपर उसको बाधकका दर्द कहते हैं।

कमर और पेटमें दर्द—यह दर्द स्नायुशूलकी तरह रह रहकर पैदा होता है, पेटमें दर्द, मिचली और वमन, सर-दर्द, हाथ-पैर और शरीरमें पेंठन, कभी कभी जाड़ा, कभी उत्ताप इत्यादि लक्षण ऋतुके समय पैदा हो जाया करते हैं।

चिकित्सा ।

कैमोमिला १२, ३०—प्रसवके दर्दकी तरह तेज दर्द, बेतरह और असह्य दर्दके कारण रोगिनी धीरज नहीं धर सकती, उसका मिजाज रूखा और चिड़चिड़ा रहता है। ऋतुके समय सफेद या हरे रंगके पानीकी तरह पतले दस्त आते हैं, उसमें मल भी मिला रहता है। काला ढेला ढेला रक्त या झिल्ली मिला ऋतुस्राव होता है।

बेलेडोना ३० — यह रक्तप्रधान धातुमें फायदा करता है। कमरसे उरु और पैरकी पोटलीतक प्रसवके दर्दकी तरह दर्द, दर्दके कारण चेहरा लाल हो जाता है। दर्द एकाएक आता और एकाएक चला जाता है।

कैफिया ६, ३०—तेज दर्द, दर्दकी वजहसे रोगिनी बहुत बेचैन हो पड़ती है और निराश हो जाती है। दर्दकी तेज़ी इतनी ज्यादा रहती है, कि रोगिनी उसे सहन नहीं कर सकती, स्त्री-अङ्गमें खुजली और उत्तेजना होती है।

कालोफाइलम ३०—पेटमें तेज सङ्कोचनका दर्द, कमरसे पेड़ूकी हड्डीतक दर्दका फैल जाना। सविराम प्रकृतिका दर्द रहता है।

लैकेसिस ३०, २००—बायें डिम्बकोषमें दर्द आरम्भ होकर चारों ओर फैल जाता है। हाथ-पैर और आँख मुँह में जलन, स्राव कम होनेपर तकलीफ बढ़ जाती है और स्राव बढ़नेपर तकलीफ घट जाती है।

मैग्नेशिया-फास ६ (विचूर्ण)—यह वातके दर्दमें ज्यादा फायदा करता है। उत्तापके प्रयोगसे और [illegible] आरम्भ होनेवाला दर्द घटता है

मैग्नेशिया-म्यूर ६, ३०—बहुत दर्द [illegible] [illegible] [illegible] दर्दके कारण [illegible] [illegible]

तक पैदा हो सकती है। सरमें दर्द, गर्म कपड़ेसे माथा बाँधनेपर घटना। बकरीकी मींगीकी तरह गुठला गुठला मल निकलता है।

पल्सेटिला ३०, २००—यह बाधकके दर्दकी एक विशेष दवा है। नम्र स्वभाववाली और रोनी प्रकृतिवाली स्त्रियोंके लिये फायदेमन्द है। थोड़ा थोड़ा रजःस्राव। तलपेट और कमरमें दर्द, सिहरावन मालूम होना, कम्प।

वाइबर्नम ओपुलस १x, ३x—बाधकके दर्द-की यह एक बहुत ही उत्तम दवा है। अगर आक्षेपिक प्रकृतिका असह्य दर्द हो तो यह ज्यादा फायदा करता है। (अमेरिकाके आदिम अधिवासीगण बाधकके दर्दकी घरेलू दवाके रूपमें इसका व्यवहार करते थे)।

आस्टिलेगो ६, ३०—ऋतुके पहले कूल्हेमें भार मालूम होना और तेज दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ धक्का देकर बाहर निकला आता है। जरायुका दर्द उरुतक फैल जाता है।

जैन्थकजाइलम १x, ३०—सब तरहके बाधकके दर्दमें इसका बहुत सफलतापूर्वक व्यवहार होता है।

सहकारी चिकित्सा और पथ्य—गरम पानीका सेंक (बोतलमें गर्म पानी भरकर या गर्म पानीमें कपड़ा

भिगोकर निचोड़कर सेंकने) से कितनी ही बार बहुत फायदा होता है, अगर स्राव थोड़ा होनेकी वजहसे तेज दर्द हो तो यह और भी फायदा करता है। खुली, निर्मल हवाका सेवन, परिमित रूपसे परिश्रम और पुष्ट करनेवाली तथा जल्द पचनेवाली चीजें खाना फायदा करता है।

अनुकल्प-रजः या विकेरियस मेन्स्ट्रुएशन।

ऋतुके समय जरायुसे रक्तस्राव न होकर उसके बदले नाक, फेफड़ा और पाकस्थली, आँख, कान, मलद्वार, मूत्रद्वार अथवा किसी अन्य द्वारसे होता है। इसीलिये, इसको अनुकल्प-स्राव कहते हैं। देखनेपर यह बीमारी भयानक मालूम होती है, पर वास्तवमें ऐसी बात नहीं है। ऋतुके बदले इस तरहका स्राव होना ध्यानकी बात है।

चिकित्सा।

ब्रायोनिया १२, ३०—पाकस्थली और नाकसे बदले रंगका रक्तस्राव होनेपर इससे फायदा होता है।

कालिनसोनिया ३—ऋतुस्रावके बदले मलद्वार से रक्तस्राव होनेपर यह फायदा करता है।

फेरम-फास ६x (विचूर्ण)—ऋतुस्रावके बदले नाकसे चमकीले लाल रंगका रक्तस्राव होता है।

हैमामेलिस १x, ३x—शरीरके किसी भी द्वारसे मैले रंगका रक्तस्राव होनेपर यह फायदा करता है। इसके साथ ही पेटमें ऐंठन, कलेजेमें दर्द, खाँसी वगैरह भी रह सकती है।

इपिकाक ३, ३०, २००—शरीरके किसी भी द्वार से चमकीले लाल रंगका रक्तस्राव होनेपर यह फायदा करता है, साथ ही मिचली और वमन वगैरहमें फायदा करता है।

मिलिफोलियस ६, ३०—फेफड़ेसे साफ लाल रंगका रक्त निकलनेपर यह फायदा करता है।

कैल्केरिया-कार्ब ३०—ऋतुस्रावके बदले श्वेत-प्रदर, कफ-प्रधान धातु, कण्ठमाला धातुवाली स्त्रियोंके लिये यह उपयोगी है।

पल्सेटिला ६, ३०—नम्र प्रकृतिवाली, रोनी प्रकृतिकी स्त्रियोंके लिये यह उपयोगी है। नाक और कानसे रक्तस्राव, ऋतुस्रावके बदले श्वेत-प्रदरका स्राव होता है।

अनियमित ऋतु।

ऋतु प्रत्येक महीनेके २८ वें दिन होता है। तीन चार दिनोंतक होता रहता है, स्वाभाविक नियम यह है कि एक से डेढ़ पावतक रजःस्राव होता है। इसमें यदि कोई गड़-बड़ी हो जाये तो उसे अनियमित ऋतु कहते हैं। इसमें भी नाना प्रकारके उपसर्ग वर्त्तमान रह सकते हैं।

चिकित्सा।

पल्सेटिला ३०—यह अनियमित ऋतुकी एक उत्कृष्ट दवा है। विशेषकर नम्र प्रकृतिकी स्त्रियोंको यह ज्यादा फायदा करती है। बहुत देरसे और बहुत थोड़ी मात्रामें रजःस्राव होनेपर इसका प्रयोग होता है।

कोनायम ३०, २००—विलम्बसे और थोड़ी मात्रा में रजःस्राव, दोनों स्तन सूखकर सिकुड़ जाते हैं या बढ़कर उनमें दर्द होने लगता है।

सेनिसियो [illegible], ३x—बहुतसे इसे अनियमित ऋतुकी अति श्रेष्ठ औषधि बताते हैं। इसके सेवनसे नियमित समयपर ऋतुस्राव होता है।

रक्तकृच्छ्र और रजोरोधमें जिन सब दवाओंका प्रयोग होता है, अनियमित ऋतुमें भी वे ही लक्षणोंके अनुसार दी

जा सकती हैं। इनका विस्तृत विवरण पहले दिया गया है।

श्वेत-प्रदर या लियुकोरिया।

जरायु, योनि प्रभृतिके श्लैष्मिक आवरणसे एक तरहका क्लेदस्राव निकलता है। यद्यपि इसका रंग और भी कई तरहका होता है, पर यह ज्यादा तर सादा ही होता है, इसीलिये, इसे श्वेत-प्रदर कहते हैं। इसका अँगरेजी नाम लियुकोरिया है। योनिसे जो स्राव निकलता है, यह सफेद, गदला, कड़ु, और स्रावके समय दर्द तथा तकलीफ भी मौजूद रहती है। कपड़ेमें पहले सफेद दाग पड़ता है, अगर ज्यादा दिनोंतक होता रहता है तो स्राव पीला और हरे रङ्गका रहता है, स्राव तेज रहता है, जिस स्थानपर लगता है, उसी जगहकी खाल उधड़ जाती है। पर जरायुसे निकला हुआ स्राव श्लेष्मा मिला रहता है और अण्डलालकी तरह चमकीला रहता है।

चिकित्सा।

नाइट्रिक एसिड ३०, २००—सड़ा, बदबूदार, पतला, पानीकी तरह या लसदार स्राव होनेपर यह फायदा

करता है। उपदंश और सूजाक रोगवाली स्त्रियोंके लिये ज्यादा लाभदायक है।

एल्यूमिना ६, ३०—बहुत ज्यादा परिमाणमें, खाल उधेड़नेवाला श्वेत-प्रदर। इतनी ज्यादा मात्रामें होता है, कि पैरतक चू पड़ता है। स्रावका रंग पीला, ऋतुके पहले और बाद बढ़ता है।

आर्सेनिक ३०—जलन करनेवाला पतला स्राव अथवा पीले रंगका गाढ़ा स्राव, बहुत सुस्ती रहती है।

बोरॅक्स ३०—बहुत ज्यादा परिमाणमें श्वेत-प्रदर का स्राव, अण्डेके सफेद अंशकी तरह लसदार स्राव, स्राव इतना गरम रहता है, कि रोगिनी सोचती है, कि पैरतक गर्म पानी चू रहा है।

कैल्केरिया-कार्ब ३०, २००—बहुत ज्यादा परिमाणमें, कभी कभी दूधकी तरह सफेद, कभी पीबकी तरह, कभी कभी गाढ़ा, कभी कभी पीले रङ्गका स्राव। योनिमें जलन और खुजली, कण्ठमाला दोषवाली स्त्रियोंके लिये यह ज्यादा उपयोगी है।

कॉस्टिकम ३०—प्रदरका रंग मांसके रसकी तरह और उसमें गन्ध भी रहती है। स्राव बहुत ज्यादा परिमाणमें हो तो यह विशेष उपयोगी है।

क्रौफाइटिस ३०, २००—बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार स्राव। बीच बीचमें एकाएक सोतेकी तरह झोंक से निकलता है। झालदार स्राव, जहाँ लगता है, वहींकी खाल उधड़ जाती है।

हाइड्रैस्टिस ३x, ३०—लसदार गोंदकी तरह प्रदरका स्राव, योनिमें लटकता है। सहजमें ही गिरता नहीं; झालदार स्राव रहनेकी वजहसे स्त्री-अंगमें खुजली पैदा हो जाती है।

कैलिबाइक्रोम ३०—स्राव डोरीकी तरह लम्बा हो जाता है। लसदार प्रदर-स्राव, स्त्री-अंगमें हिलता रहता है, सहजमें नहीं गिरता है।

फास्फोरिक एसिड ३०—बहुत ज्यादा स्वामी-सहवास या बहुत दिनोंतक कोई बीमारी भोगने बाद श्वेत-प्रदर हो जानेपर यह फायदा करता है।

पल्सेटिला ३०, २००—गाढ़ा मक्खनकी तरह श्वेत-प्रदर, ऋतुस्रावके बाद बढ़ना। नम्र स्वभाववाली, रोनी स्त्रियों के लिये उपयोगी है। श्वेत-प्रदरकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

सिपिया ३०, २००—यह भी श्वेत-प्रदरकी एक दूसरी उत्कृष्ट दवा है। पीली आभाके साथ हरापन मिला स्राव, जहाँ लगता है, वहीं दाग पड़ जाता है।

स्तन-प्रदाह या मैस्टाइटिस।

इस बीमारीमें स्तन फूलता है, तथा लाल और कड़ा हो जाता है। उसमें गरमी तथा भार मालूम होता है। दर्दसे रोगिनी बेचैन हो पड़ती है। बच्चेके स्तनपान करनेके समय बहुत दर्द होता है। कभी कभी दर्द स्तनकी घुण्डीसे लेकर स्कन्धास्थितक फैल जाता है।

चिकित्सा।

ब्रायोनिया ३x—पहली अवस्थाकी यह उत्कृष्ट दवा है। स्तन कुछ सफेद-सा मालूम होता है, कड़ा और भारी रहता है और उसमें दर्द होता है।

कैल्केरिया फ्लोरिका ३x, १२x (विचूर्ण)—डाक्टर शुस्लरके मतसे स्तन-प्रदाहकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है।

क्रोटन ६—अगर बच्चा स्तन पीता है तो स्तनमें बहुत अधिक दर्द होता है, स्तनका प्रदाह, दर्द स्तनकी घुण्डीसे स्कन्धास्थितक फैल जाता है।

फाइटोलैक्का ६, ३०—ब्रायोनियाके बाद इसमें बहुत फायदा होता है। यह पहली आरम्भिक अवस्थामें जितना फायदा करता है, पीब इकट्ठा होकर पककर फट जानेका उपक्रम होनेपर भी वैसा ही काम करता है।

फेलाण्ड्रियम ३x—बच्चा जब स्तनका दूध पीता है तो उस समय दर्द होता है और यह दर्द स्तनकी घुण्डीसे समूचे शरीरमें फैल जाता है।

लैक कैनिनम ३०—बहुत अधिक दूधके कारण स्तनमें प्रदाह पैदा हो जाता है और रोगिनीको तकलीफ होती है। स्तनको ऊपरकी ओर उठाकर बाँध रखना पड़ता है, पर जरा भी हिलने-डोलनेसे तकलीफ मालूम होने लगती है।

स्तनका फोड़ा।

इस फोड़ेकी चिकित्सा साधारण फोड़ेकी तरह ही होती है। 'बेलेडोना', 'मर्कुरियस', 'हिपर', 'साइलिसिया' प्रभृति दवाएँ व्यवहृत होती हैं। इनके अलावा—

ब्रायोनिया ६—स्तन बहुत कड़े और उसमें तेज दर्द। दूध जमकर कड़ा हो जानेपर तथा उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होनेपर फायदा करता है।

कैल्केरिया फ्ल्युयोरिका ६x, १२x (विचूर्ण)—डा० शुसलरके मतसे पहली अवस्थामें विशेष उपयोगी है।

कैल्केरिया सल्फ ६x (विचूर्ण), ३०—फोड़ा पककर पीव निकलनेपर फायदा करता है।

फाइटोलैक्का ६, ३०—यह स्तनके फोड़ेकी एक खास दवा है। सभी अवस्थाओंमें यह फायदा करती है।

तुरन्तके पैदा हुए बच्चोंका मलमूत्र बन्द।

बहुत बार तुरन्तके जन्मे बच्चोंको पाखाना पेशाब नहीं होता है। प्रसूतिको ठण्ड लग जानेकी वजहसे, ऐसा हुआ हो तो 'एकोनाइट' ३x। प्रसवके कष्टके कारण होनेपर 'आर्निका' ६ का प्रयोग करनेपर उपकार हो सकता है। बहुतोंके लक्षणमें 'ओपियम' ६ इसकी उत्कृष्ट दवा है।

धनुष्टङ्कार।

यह तुरन्तके जन्मे बच्चोंकी एक सांघातिक बीमारी है। प्रत्येक वर्ष इस बीमारीसे आक्रान्त बहुतसे बच्चे पैदा होकर कालके गालमें चले जाते हैं। धनुष्टङ्कारमें एक प्रकारका जीवाणु शरीरमें प्रवेश कर यह व्याधि पैदा करता है। नाड़ी काटनेमें दोष, या नाड़ीमें जख्म होना, और लगना इत्यादि कारणोंसे यह जीवाणु शरीरमें प्रवेश करता है। यथा स्नान

नहीं पी सकता है, जबड़े अटक जाते हैं, गर्दन अकड़ जाती है, देह धनुषकी तरह टेढ़ी पड़ जाती है, ये सब इसके लक्षण हैं। सर्दी लगना अगर उत्तेजक कारण हो या उसके साथ ही ज्वर हो, बेचैनी पैदा हो जाये तो उस समय 'एकोनाइट' ३x उसकी दवा है। गहरे प्रदाहकी वजहसे बीमारी होनेपर 'कैलेण्डुला' तेलकी पट्टीका नाभीपर बाहरी प्रयोग करना चाहिये और 'बेलेडोना' ३x सेवन करना चाहिये। विशेषकर तेज बोखार और माथा गरम हो जानेपर अकड़न और कम्पनमें 'जेलसिमियम' १x। चोटकी वजहसे रोग होनेपर 'आर्निका' ३x। इससे अगर फायदा न हो तो 'हाइपेरिकम' ३x देना चाहिये। तेज बेहोशीके लक्षणके अनुसार 'एसिड हाइड्रो' ३x, 'सिकुटा' ३x, २०० और 'स्ट्रिकनिया' ३x (विचूर्ण) तथा 'नक्स-वोमिका' ६ भी फायदेमन्द होता है।

छोटी माता।

सौरी घरमें बहुतसे बच्चोंको छोटी माताकी तरह उद्भेद निकलते देखा जाता है, पर छोटी माताकी तरह इसमें सर्दी वगैरहके लक्षण प्रायः नहीं रहते हैं। बोलचालमें इसे छोटी माता कहते हैं। गरम पानीसे बदन पोंछ देनेसे फायदा

होता है। 'ब्रायोनिया' ६ या १२ इसकी बढ़िया दवा है। पेटकी गड़बड़ीकी वजहसे हो तो 'एण्टिम-क्रूड' ६ या 'पल्सेटिला' ६ या ३० का प्रयोग करें। उद्भेद एकाएक बैठ जानेपर 'सल्फर' ३० का प्रयोग करना चाहिये।

नाभीके रोग।

नाड़ीके काटनेके एक सप्ताहके अन्दर ही नाभी सूखकर छूट पड़ती है। इसमें गड़बड़ी हो जाती है तो नाभीकी जगहमें फोड़ा हो जाता है और पीब या रस निकलता है कैलेन्डुला तेलकी पट्टी भिजाकर ऐसी अवस्थामें नाभीपर लगावें, भीतरी प्रयोगके लिये 'साइलिसिया' ३० और बहुतायत पीब निकलनेपर 'हिपर सल्फर' ६ का प्रयोग करें।

कामला या जाण्डिस।

प्रसव होनेके कई एक दिन बाद ही अकसर बच्चोंको कामला रोग देखा जाता है। इसमें समूचा अंग और आंख पीली हो जाती है। बच्चोंके कामला रोगमें 'कमोमिला' १२ या ३० का प्रयोग करनेपर विशेषकर बच्चा यदि रोता है तो जल्दी आराम हो जाती है। बहुत ज्यादा पसीना

और पैत्रिक उपदंश दोष रहनेपर 'मर्क्युरियस' ३०। कब्जि-यत या पतले दस्तमें 'नक्स-वोमिका' ६। कमजोरीमें 'चायना' ६ का विशेष उपयोगिताके साथ व्यवहार होता है। बहुत दिनोंतक ठहरनेवाले कामला रोगमें अगर चम-कीला पीला या सफेद पाखाना होता हो 'चेलिडोनियम' ६ या ३० का प्रयोग करें।

बच्चोंकी आँखोंका प्रदाह या आँख उठना।

कितने ही कारणोंसे बच्चोंकी आँखोंमें प्रदाह हो जाता । सौरी घरमें धूआँ लग जाना या ताप लगना, सर्दी ाना, तर सीड़भरे घरमें रहना प्रभृति कारणोंसे बच्चोंके नके कई दिन बाद ही बच्चेकी आँख उठ आती है। कुछ गर्म पानीका सेंक फायदा करता है।

एकोनाइट ३x, ६—सर्दी लगकर अगर आँखोंका हुआ हो और साथ ही बोखार रहे तो यह उप-है।

बेलेडोना—आँखें लाल हो जाती हैं और आँखकी फूलनेके लक्षणमें यह विशेष फायदा करता है।

पल्सेटिला ६ या मर्क्युरियस ६—आँख उठनेपर बहुत अधिक मात्रामें पीव निकलता है।

अर्जेण्टम नाइट्रिकम ६ या ३०—ऊपर लि… दवाओंसे फायदा न हो और अगर पलकोंमें जखम हो जा… तथा पीव बहता हो तो इससे बहुत लाभ होता है। इसक… आँखमें लगानेसे भी बहुत फायदा होता है। एक आउन्स बुझाये हुए पानीमें ४ ग्रेन अर्जेण्टम नाइट्रिकम ६x विचूर्ण मिलाकर उसी लोशनसे आँख धोनी चाहिये।

कानका पकना।

कण्ठमाला रोगसे ग्रसित कुछ बड़े हो गये बच्चोंको और छोटी माताके ज्वर इत्यादिके बाद, अथवा कोई चर्म-रोग बैठकर या भीतर दबकर कान बहा करता है।

कैल्केरिया कार्ब ३०—कण्ठमालाग्रस्त बच्चोंका कान पकना, सदा गुलगुला रहता है। माहतमें भी उसे सर्दी लग आती है। इन लक्षणोंमें इसका प्रयोग होता है।

सल्फर ३०—अगर कोई चर्म-रोग दबकर कान पकनेकी बीमारी हो जाये तो इसका व्यवहार होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—छोटी माताके बाद कान पकनेपर इससे बहुत लाभ होता है।

मर्क-सोल ६x या ३०—गाढ़ा बदबूदार पीव बहना, रातमें बीमारीका बढ़ना, इस लक्षणकी कान पकनेकी बीमारी में यह उपयोगी है।

पिता-मातामें यदि पाराका दोष रहे तो 'हिपर सलफर' ६ या 'नाइट्रिक-एसिड' ३० देना चाहिये।

बच्चोंका रोना।

शरीरमें किसी प्रकारकी तकलीफ रहनेपर बच्चा बोल नहीं सकता है। इस लिये रोकर ही अपनी तकलीफ बतलाता है, उसका रोग जाननेके लिये रोनेकी प्रकृति और अङ्गके हाव भावकी ओर विशेष दृष्टि रखनी चाहिये।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३x—ज्वर भाव, बेचैनी और नाड़ी पूर्ण रहती है।

ब्रायोनिया ६, १२—कब्जियत, छातीमें दर्द और खाँसते खाँसते रोता है।

बेलेडोना ३x, ६—मस्तिष्क-प्रदाह, दोनों गाल, आँख प्रभृति लाल रहते हैं।

पल्सेटिला ३x, ३०—हमेशा करवट बदलते रहना चाहता है। रोगीका मिजाज ठण्डा। खाने-पीनेका नियम न रहनेके कारण ज्वर, घीकी बनी और कहीं निमन्त्रण में ज्यादा गरिष्ट चीजें खानेके कारण अजीर्ण होकर ज्वर होनेपर इसका प्रयोग होता है। पल्सेटिला बतानेवाले ज्वरमें प्यास नहीं रहती।

पथ्य आदि—बोखार रहनेपर खूब हलका पथ्य देना चाहिये। साधारण बोखारमें धानका लावा, बताशा, मिसरीके साथ फरूई भी खास खास अवस्थाओंमें दी जा सकती है। पर बोखार ज्यादा रहनेपर पतली चीजें ही ...नेको देनी चाहियें। ऐसी अवस्थामें पानीकी बार्ली, ...गू, आरारूट, देना पड़ता है। बलगम पचकर बोखार ... जानेपर अथवा बोखार रहनेपर दूध बार्ली, सागू इत्यादि ...ये जा सकते हैं।

सविराम ज्वर।

जो बोखार छूटकर फिर आ जाता है, उसे सविराम ...र कहते हैं। सविराम ज्वरकी दो अवस्थाएँ रहती हैं। एक ज्वर (जिसमें बोखार रहता है) और दूसरी विज्वर

कैमोमिला १२—दाँत निकलनेके समयके उपसर्ग या अतिसार, पेटमें दर्द, लगातार रोता है।

ओसिमम सैक्ट ६, ३०—अतिसार, लाल रङ्गकी आँव, दांत निकलनेके समयके उपसर्ग, बहुत बेचैनी, गोदमें लेकर घूमनेसे शान्त रहता है। 'सिना' ३०, २०० कृमिमें फायदेमन्द है।

अकड़न या कानवल्शन।

बचपनमें स्नायुमण्डलकी क्रिया सहजमें ही उत्तेजित हो जाती है। इसीलिये बच्चोंको सहजमें ही अकड़न पैदा हो जाती है, बोल-चालमें इसे फिट कहते हैं। उद्वेग एकाएक डर जाना इत्यादि कारणोंसे यह अकड़न पैदा हो जाया करती है।

चिकित्सा।

बेलेडोना ३०—तेज बोखार, मस्तिष्कके लक्षण, मुंह लाल, चौंक उठना, अकड़ पड़ना, इत्यादि लक्षणोंमें इससे फायदा होता है।

सिना २०० या **इग्नेशिया** ३०—कृमिकी वजहसे अकड़न होनेपर यह फायदा करता है।

सिकुटा ३०, २००—कृमिकी वजहसे अकड़न होने पर इसका व्यवहार होता है। मुँहसे लार बहती है। गर्दन पीछेकी ओर अकड़ जाती है।

कैमोमिला १२, ३०—दाँत निकलनेके समयकी अकड़नमें इसका व्यवहार होता है।

जिङ्कम ६, ३०—छोटी माता या चेचक पूरी तरह न निकल कर अगर बैठ जाये तो इससे फायदा होता है।

सलफर ३०—किसी चर्म-रोगके दब जानेपर ाकड़न पैदा हो जाये तो इसका प्रयोग होता है। माथेपर ण्डे पानीका छींटा या बरफका प्रयोग करना और गरम ानीमें पैर डूबो रखनेपर फायदा होता है।

कानका प्रदाह ।

साधारणतः ठण्ड लगकर या चर्म-रोगके उद्भेद बैठकर कर्ण-प्रदाह पैदा हो जाता है, कानका बाहरी भाग फूल जाता है, लाल हो जाता है। कानमें टपक अथवा दर्द होता है, तथा मरोड़ इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

ठण्डी हवाके कारण कानमें प्रदाह पैदा होनेपर 'एको-नाइट' ३x उसकी दवा है। कानके पीछे फूल उठता है

और लाल हो जाता है, टपकका दर्द हो तो 'बेलेडोना' ३x। चोट आदिके कारण कानका दर्द पैदा हो तो 'आर्निका' ६ फायदेमन्द है। बिना ज्वरका शूल बेधनेकी तरह दर्द हो तो 'पल्सेटिला' ६ उसकी बढ़िया दवा है। इसका मूल अर्क दो तीन बूँद कानमें डाल देनेसे बहुत जल्दी फायदा होता है। 'मर्क्युरियस' ६ इसकी एक बढ़िया दवा है।

बच्चोंका एकज्वर।

इसका साधारण लक्षण सविराम ज्वरकी तरह है। मैलेरिया, कृमि बहुत दिनोंतक रहनेवाला अतिसार, पाकाशयकी गड़बड़ी, कृमि प्रभृति इस ज्वरके प्रधान कारण हैं।

जेल्सिमियम १x, ३x—इसकी एक प्रधान दवा है। बच्चा चुपचाप पड़ा रहता है, बेहोशीका भाव रहता है और पसीनेकी कमी रहती है।

ब्रायोनिया ६x—बच्चा चुपचाप पड़ा रहता है। हिलना-डोलना नहीं चाहता। हिलने-डोलनेसे तकलीफ बढ़ती है। [illegible] साथ ज्वर बना रहता है।

कैमोमिला ३x—चिड़चिड़ापन, दाँत निकलनेके साथ ज्वर आता है, [illegible], बेचैनी।

सिना ३०, २०० —कृमिके उपसर्गके कारण बोखार होता है।

कैमोमिला १२, ३०—दाँत निकलनेके समयकी ीमारी, बेचैनी, रोना, बच्चा किसी तरह भी चुप नहीं ाराया जाता है।

दाँत निकलनेके समयकी बीमारी।

दाँत निकलनेके समय बच्चोंको नाना प्रकारके उपसर्ग होते देखे जाते हैं। स्वस्थ्य पिता-माताकी स्वस्थ्य सन्तान-को विशेष कष्ट नहीं होता है, रिकेट या गण्डमालाग्रस्त बच्चे इनसे हमेशा ही दुःख पाते हैं। रक्तवहा नाड़ीकी उत्तेजना और स्नायवीय उपदाहकी वजहसे इस तरह होता है। देरसे दाँत निकलनेवाले रिकेटग्रस्त बच्चोंके लिये, विशेपकर, अगर खट्टी गन्धवाला पाखाना होता हो तो कैल्केरिया-कार्ब' ३०, २०० देना चाहिये। धुन्द गन्धवाला र रङ्गा अतिसार, बेचैनी, बच्चेको गोदमें लेकर घूमनेपर शान्त रहता है, इत्यादि लक्षणोंमें 'कैमोमिला' १२; दस्त पिचकारीकी तरह वेगसे निकलता है, बहुत बदबू रहती है बहुत ज्यादा परिमाणमें होनेपर 'पोडोफाइलम' १२; पेटमें दर्दके साथ अतिसार होनेपर 'कोलोसिन्थ' ६; ज्वर,

बेचैनी प्रभृति लक्षण रहनेपर 'एकोनाइट' ६; नींद न आती हो तो 'काफिया' ३० देना चाहिये।

दूधकी कै होना।

दूधके गुणकी गड़बड़ीके वजहसे या पाकाशयकी गड़बड़ी आदिके कारण शिशु स्तनका दूध या गायका दूध पीते साथ ही कै कर देता है।

इपिकाक ६, ३०, २००—इसकी प्रधान दवा है।

एथिउसा-क्या ३, ६—दूध जमकर दहीकी तरह कै होता है। बच्चेकी आँख मानों मोटी मैलकी तहमें रहती है।

इथूजा ६—बच्चोंकी दूधकी कै होनेकी अच्छी दवा और थक्केकी तरह कै होती है। ऐसा मालूम होता है बच्चेका गला बन्द हो जायगा।

कैल्केरिया-कार्ब ३०—इसमें बच्चोंको खट्टी कै होती है।

बच्चोंका नया अतिसार।

बच्चे स्वभावतः दिन रातमें चार पाँच बार पाखाने जाते हैं और उनके मलका रंग सरसोंकी बुकनीकी तरह होता है। थोड़ा पतला होता है और उसमें किसी प्रकार की गन्ध नहीं रहती। किन्तु बार बार पतले बदबूदार या खट्टे दस्त होनेपर उसकी तुरन्त चिकित्सा करनी चाहिये।

चिकित्सा।

आइरिस ६—गर्मीके दिनोंका अतिसार, मल कभी पीला, कभी हरा मिला पतला होता है।

आर्सेनिक ६, ३०—बहुत सुस्ती और बार बार प्यास, तथा वमन। पाखानेके समय मलद्वारकी खाल उधड़ जाती है।

इपिकाक ६, ३०—मल घासकी तरह हरे रङ्गका, दर्द नहीं होता, फेन-भरा मल, मिचली और वमनका लक्षण भी साथ ही रहता है।

कैमोमिला १२, ३०—दाँत निकलनेके समय सर्दीके साथ अतिसार, बदबूदार मल, लड़केका मिजाज चिड़चिड़ा हो जाता है।

कैल्केरिया-कार्ब—दाँत निकलनेके समयका

अतिसार, खट्टी गन्ध मिला मल, मोटा थुलथुला रोगी। जिनके माथेमें बहुत पसीना होता है, उनके लिये यह फायदेमन्द है।

चायना ६, ३०—साधारण अजीर्णमें यह फायदे-मन्द है।

मर्क-सोल ६ कुथनके साथ आम रक्तमिला दस्त अगर आये तो लाभदायक रहता है।

मेग-कार्ब ६, ३० खट्टा गन्ध मिला मल, पतले मलमें मालूदानेकी तरह पदार्थ तैरता रहता है। पेटमें दर्द होता है।

पोडोफाइलम ६ ३० गर्मीके दिनोंका और दांत निकलनेके समयका अतिसार, बहुत ज्यादा परिमाणमें मल निकलता है, मल पिचकारीकी तरह वेगसे निकलता है।

रियूम ६ खट्टा गन्ध मिला मल, पेटमें दर्द, बच्चेके शरीरसे भी खट्टी गन्ध निकलती है।

हो तो पानी जैसी पतली वार्ली इत्यादि दी जा सकती है। छेनेका पानी इस अवस्थाका बढ़िया सुपथ्य है।

शय्यामें पेशाब या वेटिङ्ग दी बेड ।

बहुतसे बड़ी उमरके बच्चे भी बिछावनमें पेशाब कर देते हैं। किसी किसी समय इनका यह बुरा अभ्यास किसी प्रकार भी नहीं छूटता है। इसके साफ साफ कारणका पता नहीं लगता है।

चिकित्सा ।

एसिड बेञ्जोयिक ६, ३०—बच्चा नींदमें अनजान में पेशाब कर देता है, पेशाबमें घोड़ेके मूत्रकी तरह तेज दुर्गन्ध आती है।

ब्रोमाइड आफ पोटास ६x—शिशुके शय्या-मूत्रमें दूसरी दूसरी दवाओंसे फायदा न होनेपर इसका प्रयोग कर देखना चाहिये। शय्यामूत्रकी यह एक अत्यन्त श्रेष्ठ दवा है।

कैल्केरिया-कार्ब ३०—मोटा थुलथुला शरीर था जिन्हें रातमें माथेमें बहुत ज्यादा पसीना होता है, उनके लिये यह फायदेमन्द है।

हिपर-सल्फर ६, ३०—जिनका पेशाब जोरसे न निकलकर पीछे चू पड़ता है, उनके शय्यामूत्रमें यह लाभदायक है।

क्रियोजोट ६, ३०—नींद लगते ही रातके प्रथम भागमें जो बालक पेशाब करनेका स्वप्न देखकर कि मैं पेशाब कर रहा हूँ बिछावनमें पेशाब कर देते हैं, उनके लिये यह बहुत अधिक लाभदायक है।

सिपिया ३०—बच्चा सोनेके साथ ही बिछावनमें पेशाब कर देता है।

कुर्कुमिना—देशी दवा कुरकुमासे यह ट्युरिया [illegible] १x, ३x तैयार होता है। यह शय्यामूत्रकी उत्कृष्ट दवा है। दूसरी दूसरी दवाओंसे फायदा न होनेपर इससे लाभ होनेकी आशा रहती है।

बच्चोंका यकृत या इन्फैण्टाइल लीवर।

चिकित्सा।

चिनिनम आर्स ३x (विचूर्ण)—मलेरिया ज्वरके बाद यकृत लगातार बढ़ते रहनेपर यह लाभदायक है।

चेलिडोनियम ६, ३०—समूचे शरीरमें कामला के लक्षण। अतिसार, मलका रंग सफेद या कीचके रंगका पाखाना होता है।

अर्जेण्टम नाइट्रिकम ६, ३०—बच्चा बराबर दुबला होता जाता है। वह देखनेमें बुड्ढेकी तरह मालूम होता है।

कैल्केरिया कार्ब ३०—श्लेष्मा और मेदपूर्ण जड़वत बच्चा, जिन बच्चोंके माथेमें पसीना होता है, उनके यकृत रोगके लिये यह फायदेमन्द है।

मैग्नेशिया-म्यूर ६, ३०—दुबला पतला, दुर्बल और जिनका शरीर अच्छी तरह पुष्ट नहीं हुआ, उनका यकृत रोग। आँखकी पलक और केशकी जड़में जखम, पैरमें पसीना होता है। कब्जियत रहनेपर यह और भी अधिक लाभदायक है।

नक्स-वोमिका ६, ३०—कामलाके लक्षणके साथ कब्जियत, बार बार पाखानेका वेग, पर थोड़ा थोड़ा पाखाना होता है।

साइलिसिया ३०, २००—रिकेटग्रस्त शिशु, माथेमें और पैरमें पसीना होता है। इन लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

सल्फर ३०, २०० यह पुरानी अवस्थामें तथा धातुगत विशेष लक्षण रहनेपर फायदा करता है।

सुखण्डी या मारास्मस ।

बच्चा खूब खाता है तो भी शरीर पुष्ट नहीं होता है। क्रमसे सूखता ही जाता है। शरीरका स्वाभाविक ताप घटता जाता है, इस तरहकी अवस्थाको मारास्मस या सुखण्डी कहते हैं।

चिकित्सा ।

एब्रोटेनम ३०—बच्चेका शरीर सूख जाता है, पेट फूला दिखाई देता है नाकसे खून गिरता है, नाभीसे रक्त और रस गिरता है और अण्डकोषके सूजनेपर यह और भी ज्यादा लाभदायक है।

आयोडिन ३०—बहुत भूख, खूब खानेपर भी बच्चा सूखता ही जाता है।

नेट्रम-म्यूर ३० २०० —[illegible]

भाव बहुत ज्यादा दिखाई देता है। बच्चा खूब खाता है, तो भी सूखता ही जाता है।

अर्जेण्टम नाइट्रिकम ३०—बच्चा बुड्ढे की तरह दिखाई देता है।

कैल्केरिया-फास ६, ३०—बच्चा दुबला-पतला, कमजोर, प्रायः पेट गड़बड़ ही रहता है। हरे रंगका, चमकीला गरम पानीकी तरह दस्त होता है।

साइलिसिया ३०—बच्चोंके पैर और माथेमें बहुत ज्यादा पसीना होता है, माथेकी हड्डी नहीं जुड़ती है। शरीरकी गर्मी बहुत कम हो जाती है।

धातुकी गड़बड़ीको ठीक करनेके लिये 'सलफर' ३०

अस्थि-विकृति या रिकेट्स।

बच्चेकी हड्डीमें चूनेका अंश कम होनेके कारण उसकी ठीक ठीक गठन नहीं हो पाती। वह कोमल, टेढ़ी और पतली रहती है। बच्चेको दाँत निकलनेके समय दाँत नहीं निकलते हैं, बच्चा देरमें चलना सीखता है। माथेमें पसीना होता है, यहाँतक की रातमें भी पसीनेसे तकिया भींज जाती है। हाथ-पैरके जोड़ दर्दसे भरे रहते हैं और मोटे हो जाते हैं। यह सब अस्थि-विकारके प्रधान लक्षण हैं।

विस्तार, धातुगत लक्षण, मानसिक लक्षण, विशेष लक्षण, रोगकी वृद्धि, ह्रास, पूर्व और परवर्त्ती दवाएँ, दवाकी क्रियाका स्थितिकाल, फार्माकोपियाका फार्मूला—इसके अलावा प्रत्यक्षकी अभिज्ञताके परिणाम-रूपमें तुरन्त लाभ दिखानेवाली दवाका वर्णन, मेडिकल ग्लासरीके अन्तर्गत अंग्रेजी नामके सब रोगोंका लक्षण—सारांश यह कि चिकित्सकको जो कुछ जाननेकी जरूरत है—वह सभी इसमें एक ही जगह है। इसे रखनेपर फिर किसी भी ग्रन्थको पढ़ने, समझने या तलाशनेकी जरूरत नहीं है। इतना ही नहीं, इसमें नयी, अचूक काम करनेवाली अनेक दवाओंका ऐसा बयान आया है, कि रोगमें तुरन्त लाभ मालूम होता है। १४८२ पृष्ठोंकी सुन्दर, सुनहरी जिल्द बंधी पुस्तकका मूल्य—६॥), डा० मा० ॥=)

सरल पारिवारिक चिकित्सा।

खूब सहज तरीके और सरल भाषामें गृहस्थोंके लिये यह पुस्तक लिखी गयी है। इसमें सब तरहके रोग, स्त्री-रोग, बच्चोंकी बीमारियाँ, आकस्मिक दुर्घटना प्रभृति समस्त रोगोंका इलाज दर्ज किया गया है। इसके अलावा बराबर

धातुदौर्बल्य ।

एक इस रोगके हो जानेपर अनगिनती रोग
हो जाते हैं। मनुष्य एकदम निस्तेज, स्फू
गृहकर्मोंके अनुपयुक्त हो पड़ता है। अतएव,
उसकी जड़ काट देना उचित है। इस पुस्तकमें
उत्पन्न करनेवाले सभी कारणोंको बताकर,
स्वप्नदोष, जननेन्द्रियकी दुर्बलता, हस्तमैथुन
दुष्परिणाम और उसके बादके मानसिक रोग
धातुदौर्बल्यके कारण उत्पन्न बीमारियोंका एवं
उनकी चिकित्सा इतनी खुलासा बता दी गयी है
अनभिज्ञ मनुष्य भी बहुत सरलता पूर्वक अपनी
आप ही कर सकता है। इसे प्रत्येक चिकि
विद्यार्थियोंको अवश्य संग्रह कर रखना चाहिये। मू
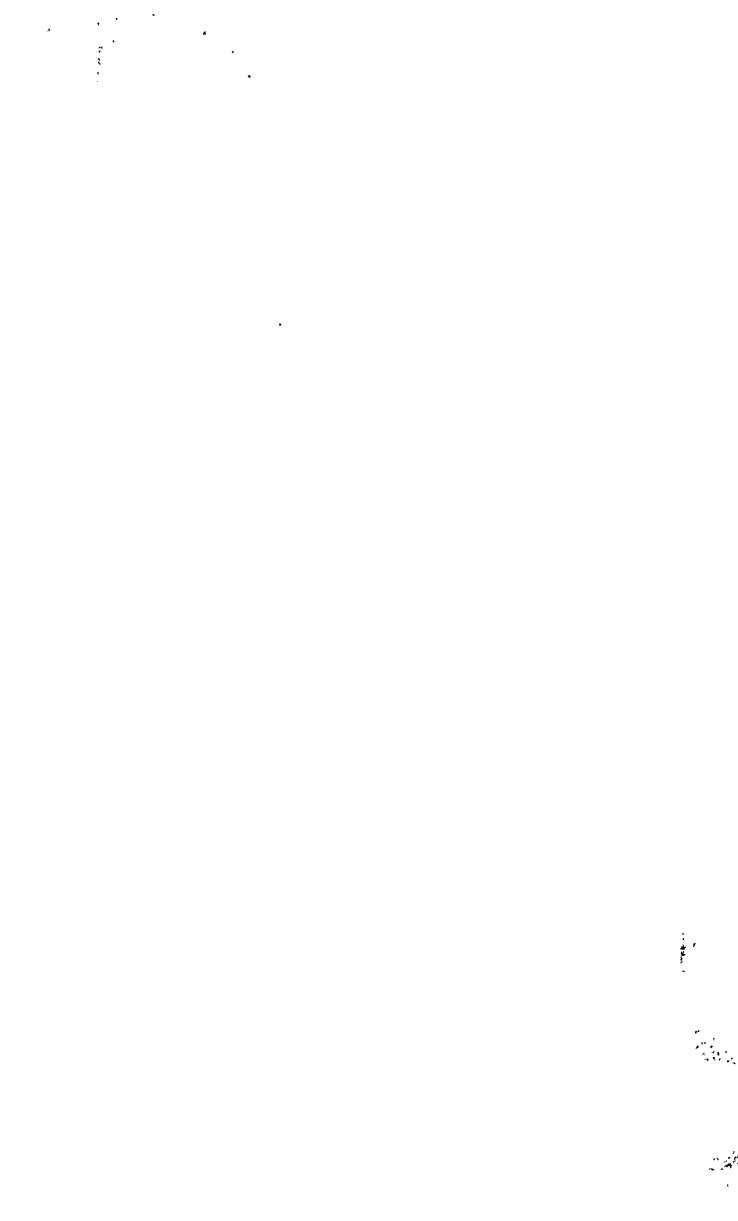
हैं। द्वौकालीन ज्वर मुश्किलसे आराम होने-
री है।
ोंका परिणाम प्रत्यक्ष रूपमें जान लेनेवाला नहीं
दि अच्छी तरह इलाज नहीं होता और समयपर
ना बन्द नहीं किया जाता तो प्लीहा और यकृत
; साथ ही साथ शोथ इत्यादि हो जाता है और
े मुँहमें जा पड़ता है।

चिकित्सा।

ापैथीके मतसे किनाइन ही इसकी अकेली दवा मानी
तथा एलोपैथिक चिकित्सक इस ढंगके बोखारकी
सरी दवाका फायदा करना मानते भी नहीं, कितने
मियोपैथिक चिकित्सक भी कितनी ही जगहोंपर
इनका प्रयोग करते हैं। ज्वरको जल्द दवा देना अच्छा
पर कच्ची किनाइन खिलाकर ज्वर बन्द कर देनेकी चाल
की नहीं। यह भी देखा जाता है, कि बहुत दिनोंतक
िनाइन यदि नहीं सेवन की जाती तो बार बार बोखार
ाने लगता है। बार बार किनाइन प्रयोग करने अथवा
ज्यादा दिनोंतक किनाइन सेवन करनेका नतीजा बड़ा ही
भयंकर होता है।

एपिटम-क्रूड ६x, ३०—बोखार आनेके पहले

प्रकाशक—
श्रीप्रफुल्लचन्द्र भड़
हैनिमैन पब्लिशिङ्ग को०
१६५ नं० बहूबाजार स्ट्रीट,
कलकत्ता ।

मुद्रक—
श्रीमोतीलाल सरकार
नन्दी प्रिंटिङ्ग वर्क्स
२२७ रासबिहारी ऐवेन्यू
कलकत्ता ।

वस्था कितनी ही बार रहती ही नहीं, मानसिक बेचैनी
ोर शारीरिक कमजोरी यह आर्सेनिक बतानेवाले सभी
ोखारोंमें मौजूद रहती है।

बेलेडोना ३०, २००—कितनोंहीका ऐसा कहना
कि सविराम ज्वरमें "एकोनाइट" और "बेलेडोना" से
ई फायदा नहीं होता है। मैंने बेलेडोनाका प्रयोग कर
विराम ज्वर आरोग्य किया है। पहले तो शीत दोनों
हांसे आरम्भ होता है, इसके बाद वह समूचे शरीरमें फैल
ाता है। चेहरा लाल; माथेमें खून इकट्ठा होना, आँखकी
कनीनिका फैली प्रभृति बेलेडोनाके खास खास लक्षण प्रकट
होते हैं। तापवाली अवस्था बहुत तेज़, समूचे शरीरकी
शिराएँ मानो फूल उठती हैं, पसीना सिर्फ उसी अंगमें होता
है, जो ढका रहता है।

कैप्सिकम ३०—जाड़ा आनेके बहुत पहलेसे ही
ास आरम्भ हो जाती है। "चायना" "इयुपेटोरियम"
ार "नैट्रम-म्यूर"—इन तीनों दवाओंमें भी यही लक्षण है;
इयुपेटोरियम" और "नेट्रम" में शरीरमें दर्द रहता है, परन्
'चायना" और "कैप्सिकम" में ऐसा नहीं होता। जाड़े
समय बहुत तेज प्यास पर पानी पीनेपर ही जाड़ा और क
कपी बढ़ जाती है, ताप और पसीनेवाली अवस्थामें प्यास
नहीं रहती। उत्तापके बाद नींद आने लगती है।

ास्थामें प्यास न रहे और दाहके वाद पसीना न हो तो
चेनिनम" का व्यवहार कभी न करना चाहिये।

इयुपटोरियम परफोलियम ६, ३०, २००–
वेरे आनेवाला बोखार, सवेरे ६ बजे अथवा ७ बजेसे
ज्रके बाचमें बोखार आना ही इसकी विशेषता है। एक दि
वेरे अधिक ज्वर आता है, दूसरे दिन तीसरे पहर हल्क
ार होता है। जाड़ा लगनेके पहलेसे ही तेज प्यास औ
दनमें दर्द रहता है। पीठमें दर्द, हाथ-पैरकी हड्डियोंमें द
सा मालूम होता है, मानो शरीरकी सभी हड्डियाँ चूर चू
ई जाती हैं। यह लक्षण जाड़ेवाली अवस्थामें ही दिखा
ता है, प्यासके वक्त पानी पीनेसे मिचली बढ़ जाती है औ
ा होने लगती है। शीतके वाद ही पित्तकी कै, सिर्फ इस
क्षणके सहारे ही हमलोगोंने कई रोगी आरोग्य किये हैं
ापवाली अवस्थामें प्यास कम रहती है, पर माथे औ
ड्डियोंका दर्द वढ़ जाता है, पसीना थोड़ा होता है, य
बेलकुल ही नहीं होता। पसीना होनेपर सभी उपस
ाट जाते हैं, पर माथेका दर्द नहीं जाता है।

इग्नेशिया ३०, २००—बोखार आनेके पह
ाम्हाई आना और शरीरमें अँगड़ाई पैदा हो जाना। सि
ाड़ेके समय बहुत प्यास रहती है। चेहरा लाल, बाह
ारमीसे जाड़ा घटता है। दाहवाली अवस्थामें प्यास बिल

कुल नहीं रहती, पसीना वहुत थोड़ा होता है और वह भ
चेहरा या हाथ-पैरोंमें होता है। वोखार उतर जानेप
इग्नेशियाका रोगी भले चँगे मनुष्योंकी तरह काम-काज क
सकता है, पर सिर्फ पुराने वोखारमें ही ऐसा दिखा
देता है।

इपिकाक ३०—किनाइनसे रोका हुआ वोखा
तथा खाने-पीनेकी गड़वड़ीसे जो वोखार फिरसे दोहरा जाता
है, उसमें "इपिकाक" वहुत फायदा करता है। इपिकाकका
एक खास लक्षण है, सभी अवस्थाओंमें भयानक मिचली
डा० जार, अपने ४० वरसोंके तजुर्वोंके अनुसार, जव को
विशेष लक्षण न मिले तो इपिकाक ३० देकर सविराम ज्व
का इलाज करनेकी सलाह देते हैं, ऐसा करनेपर उन्हें वहुत
फायदा दिखाई दिया है और कई जानकार चिकित्सक उनके
इस मतका समर्थन भी कहते हैं, पर इसके अलावा कितनों-
हीका ऐसा भी कहना है, कि ऐसा इलाज होमियोपैथिक
नियमके विरुद्ध है, यह मत कभी उचित समझकर मान
नहीं जा सकता। ज्वरके पहलेवाली अवस्थामें अंगड़ा
लेना, जम्हाई आना, मिचली और मुँहमें वहुत थूक भर
आना, शीतके समय विलकुल ही प्यास न रहना, वाहरी
उत्तापसे शीतका वढ़ना, तापवाली अवस्थामें प्यासका मौजूद
रहना, ताप वहुत देरतक वना रहना, [illegible]

वर्णानुक्रम सूची ।

८४ नित्य-प्रयोजनीय औषधोंकी सूची ।

हमलोग १२, २४, ३०, ३५, ४८, ६० और ८४ शीशियोंके गृह-चिकित्साके बक्समें निम्न-लिखित औषध दिया करते हैं ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
एकोनाइट नैप	३x	आर्जेण्टम नाइट्रिकम	३०
बेलेडोना	६	इयुपेटोरियम पर्फो	६
ब्रायोनिया	३०	थुजा	६
रसटक्स	३०	एलोज	३०
नक्सवोमिका	३०	एसिड फास	६
इपिकाक	३०	* ग्रैफाइटिस	३०
सलफर	३०	नैट्रम-म्यूर	३०
* सिना	३०	पोडोफाइलम	६
एण्टिम-टार्ट	३०	पल्सेटिला	३०
एण्टिम-क्रूड	३०	आर्सेनिक एल्बम	३०
एपिस मेल	३०	आर्निका मान्टेना	६
हिपर सलफर	३०	चायना	६
जेलसिमियम	६	फास्फोरस	३०
मर्क्युरियस सोल	३०	बैप्टीसिया	६
मर्कुरियस कोर	६	साइलिसिया	३०
कोलोसिन्थ	३०	* वेरेट्रम एल्बम	१२
कैमोमिला	१२	एल्यूमिना	३०
लाइकोपोडियम	३०	क्यूप्रम मेट	६
कार्बोवेज	३०	नैट्रम सल्फ	३०
* कैन्थरिस	६	लैकेसिस	३०